DHYOPASANA AGNIHOTRAVIDHIḤ

RĀMLĀL KAPOOR TRUST

BAHALGARH-131021

सन्ध्योपासन-अग्निहोत्रविधिः

रचनाकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अनुवादक एवं व्याख्याकार

डॉ० विजयपाल

रामलाल कपूर ट्रस्ट

बहालगढ़, सोनीपत, हरयाणा--१३१०२१

SANDHYOPASANA-AGNIHOTRAVIDHIHI

(A manual of Vedic prayer & yajña)

By

Maharṣi Dāyananda Sarasvatī

Translated And Exposed

By

Dr. Vijay Pāl

Ram Lal Kapoor Trust

Bahal Garh, Sonipat, Haryana-131021

प्रकाशक :
रामलाल कपूर ट्रस्ट
बहालगढ़, सोनीपत
हरयाणा-१३१०२१

प्रथम संस्करण
फरवरी १९८८, फाल्गुन २०४४ विक्रमी

मूल्य : १०-०० रुपये

मुद्रक :
दुर्गा मुद्रणालय,
सुभाषपार्क एक्सटेंशन,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

Published by
Rām Lāl Kapoor Trust,
Bahālgarh, Sonepat
Haryana. 131021
[India]

First Edition,

February 1987, Phalgun 2044 V.

Price : 10·00

Printed at
Durga mudranalaya,
Subash Park Ext., Shahdara Delhi-110032

प्रकाशकीय वक्तव्य

रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रभुभक्तों के करकमलों में नव उपहार भेंट करता हुआ महती प्रसन्नता और सन्तोष का अनुभव कर रहा है। मूलतः प्रस्तुत पुस्तक विगत शताब्दी के अनुपम भक्त महर्षि दयानन्द सरस्वती की महत्त्वपूर्ण कृति है। अध्यात्म के विशिष्ट क्षेत्र से सम्बद्ध व्यक्ति इस तथ्य को भली-भाँति जानते हैं कि ऋषि दयानन्द सरस्वती प्रभुभक्ति की गम्भीर भावना से आप्लावित थे। सर्व-शक्तिमान् प्रभु के प्रति उनकी समर्पण-भावना के प्रमाण उनके ग्रन्थों के पन्नों में स्पष्टतया परिलक्षित होते हैं। इस उद्देश्य से उन्होंने आर्याभिविनय, सन्ध्योपासन और अग्निहोत्रविधि का प्रणयन किया। उन्होंने आर्याभिविनय की व्याख्या अपनी भक्ति एवं तर्कपूर्ण शैली में की। वेदभाष्यकार के रूप में वे विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान-मात्र को प्रस्तुत करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाते, अपितु यत्र तत्र प्रभु के प्रति विनत भाव से प्रार्थना भी प्रस्तुत करते हैं। यह सत्य है कि वे अपने बौद्धिक क्रियाकलाप एवं समाज-सुधार के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु उनके जीवनचरित के पाठक उनकी प्रभुभक्ति से सुपरिचित हैं, जो इतनी उत्कट थी कि उनका वास्तविक जीवन ही सच्चे शिव के साक्षात्कार के संकल्प से आरम्भ होता है और सर्व विदित है कि उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त किया। इस मर्त्य-संसार को छोड़ते समय उनके समर्पणात्मक उद्गार सुनिए—'प्रभो ! तेरी इच्छा पूर्ण हो ! तूने अच्छी लीला की !!'

अनेक उत्तम एवं मध्यम, प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध व्यक्तियों के लिए दयानन्द सरस्वती गत सौ वर्ष से प्रकाश-स्तम्भ रहे हैं। लाला श्री सर्वदयालजी उन सौभाग्यशाली पुरुषों में से थे जिनका प्रेरणास्रोत ऋषि दयानन्द का जीवन और उनके ग्रन्थ थे। श्री दयानन्द द्वारा व्याख्यात वैदिक सन्ध्या और अग्निहोत्र उनके

Shri Lala Sarvadayal
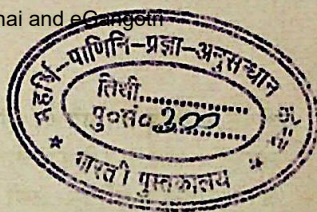
Publisher's Statement

We, the Rām Lāl Kapoor Trust, feel great pleasure and satisfaction to present a new gift in the hands of the devotees to God. The present monograph, in text, is an important work of great seer Dayānanda Sarasvatī, a unique devotee of last century. That seer Dayānand Sarasvatī bore a deep sense of devotion to God is a fact well known to the people related to the specific sphere. The pages of his works expressly bear the proof of his dedication to the Almighty. For this very purpose he compiled Āryābhivinaya, Sandhyopāsana and Agnihotra manuals. He did expose the Āryābhivinaya himself in his own devotional-cum-logical style. As a commentator of the Veda he is not satisfied by presenting only scholastic explanations, but also entreats, every now and then, to God in one wise or the other. True : he is known for his intellectual pursuits and social reforms ; but the readers of his biographies know his most sincere dedication to God, so much so that his real life begins from his strong will to see real Śiva face to face. And we know that he attained his goal. Just hear his dedicative utterings at the time of leaving this world of mortals : 'God ! Thy will be done ! Thou hast shown thy elegance well !!'

Dayānand Sarasvatī has been the guiding star for many a person, elite and mediocre, known and unknown, since last hundred years. Śri Lālā Sarva Dayāl was one of thsoe fortunate ones whose source of inspiration had been the life of the seer Dayānand Sarasvatī and his priceless works. Vedic Sandhyā and Agnihotra, as expounded by Dayānand Sarasvatī

जीवन का अङ्ग बन गये थे और आर्याभिविनय उनके जीवन का शान्तिदायक स्वाध्याय-ग्रन्थ था। वे रामलाल कपूर ट्रस्ट के संस्थापक सदस्यों में अन्यतम थे और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक ट्रस्ट के क्रियाकलाप में गहरी रुचि लेते रहे। उनके निधन के पश्चात् उनके सुपुत्रों ने उनके प्रिय ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए ट्रस्ट को अच्छी धनराशि प्रदान की। ट्रस्ट ने उस धन से स्वामी भूमानन्द सरस्वती द्वारा अनूदित आर्याभिविनय का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। इसी पुस्तक का द्वितीय संस्करण ट्रस्ट ने १९८६ में लाला श्री सर्वदयालजी के पारिवारिक सदस्यों के दान से प्रकाशित किया।

हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी व्याख्या से युक्त सन्ध्या और अग्निहोत्र की पुस्तक के आदर्श संस्करण की माँग ट्रस्ट के अधिकारियों के सामने निरन्तर आ रही थी। ऐसी पुस्तक किसी भी क्षेत्र में उपलब्ध नहीं थी। हम ने ट्रस्ट द्वारा संचालित पाणिनि महाविद्यालय के आचार्य पं० विजयपाल से ऐसी पुस्तक तैयार करने का अनुरोध किया। कुछ संकोच के पश्चात् उन्होंने स्वीकार कर लिया। इस कार्य के लिए ट्रस्ट उनके प्रति आभार प्रदर्शित करता है। प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशनार्थ धन-राशि प्रदान करने के लिए ट्रस्ट श्री सर्वदयालजी के पारिवारिक सदस्यों का आभारी है। ट्रस्ट स्वामी जगदीश्वरानन्दजी का भी धन्यवाद करता है जिन्होंने पुस्तक को वर्तमान रूप में मुद्रण के प्रबन्ध का कष्ट किया।

प्यारेलाल कपूर,
मन्त्री,
रामलाल कपूर ट्रस्ट

were the part and parcel of his routine and regular study of Āryābhivinaya the solace of his life. He was amongst the founder members of Rām Lāl Kapoor Trust and kept on taking keen interest in the Trust-activities till his last breath. After his death his sons donated a substantial amount to the Trust to publish his favourite books. The Trust published an English translation of Āryābhivinaya rendered by S. Bhoomānand Sarasvatī. A second edition of the above mentioned treatise was published by the Trust in 1986 with another donation made liberally by the family members of the late Lālā Sarva Dayāl.

The authorities of the Trust were facing a pressing demand of an ideal edition of Sandhyā and Agnihotra treatises furnished with Hindi and English versions side by side. No such book was available in any sphere. We requested Pt. Vijay Pāl, the principal, Pānini Mahāvidyālaya, Bahalgarh, to prepare such a book. He agreed after some hesitation. The Trust expresses its gratitude to him for this work. We are grateful to the family members of Śrī Sarva Dayāl, who generously donated the amount for the publication of the present treatise. The Trust also thanks Svāmī Jagadīśvarānanda Sarasvatī for the pains taken by him to arrange the printing of the book in the present form.

Pyāre Lāl Kapoor,
Secretary,
Rām Lāl Kapoor Trust.

PRONUNCIATION AND TRANSLITERATION

Nāgri	Roman	As pronounced in
अ	a	rural
आ	ā	father
इ	i	fill
ई	ī	police
उ	u	full
ऊ	ū	rude
ऋ	ṛ	brim (ri)
ए	e	prey
ऐ	ai	aisle
ओ	o	go
औ	au	Haus (German)
अं (ं)	ṃ	Sums
अः (:)	ḥ	oh
क्	k	seek
ख्	kh	inkhorn
ग्	g	get
घ्	gh	loghut
ङ्	ṅ	sing
च्	c	dolce (in music)
छ्	ch	churchhill
ज्	j	jump
झ	jh	hedgehog (geh)

ञ्	ñ	singe
ट्	ṭ	true
ठ्	ṭh	anthill
ड्	d	drum
ढ्	dh	redhaired
ण्	ṇ	fund
त्	t	water (Irish)
थ्	th	through
द्	d	dice ('th' in this)
ध्	dh	adhere (dental)
न्	n	not
प्	p	put
फ्	ph	uphill
ब्	b	bear
भ्	bh	abhor
म्	m	map
य्	y	yet
र्	r	red
ल्	l	lead
व्	v	very
श्	ś	sure
ष्	ṣ	bush (sh)
स्	s	saint
ह	h	hear

Note—The reader may find some literal changes in the words used in the mantra-text and pada-text. Euphonic junctions are responsible for such changes.

व्याख्याकार का निवेदन

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संगृहीत सन्ध्योपासन और अग्नि-होत्रविधि आर्यों के दैनिक उपासना तथा यज्ञ के विधि-ग्रन्थ हैं। ग्रन्थकार की अपनी व्याख्या के अतिरिक्त, इन ग्रन्थों की अनेक उत्तम व्याख्याएँ हिन्दी में उपलब्ध हैं परन्तु साधारण योग्यतावाले उपासक भक्तों के लिए वे व्याख्याएँ कुछ कठिन रहीं हैं। ऐसे सज्जनों को ध्यान में रखते हुए, हमारे पूज्य आचार्य पं० श्री ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु ने सरल एवं सुबोध शैली में 'सरलार्थ सन्ध्या अग्निहोत्रविधि' नामक हिन्दी व्याख्या का प्रणयन किया। यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय सिद्ध हुई और अब भी है, और प्रकाशक इसके कई संस्करण निकाल चुके हैं।

अंग्रेजी भाषा में निपुण, किन्तु हिन्दी से अपरिचित, सज्जन उपर्युक्त विधि-ग्रन्थों के प्रामाणिक अनुवाद तथा व्याख्या को पढ़ने के आनन्द से वञ्चित थे। स्वामी भूमानन्द सरस्वती ने इन ग्रन्थों का अनुवाद तथा व्याख्या परिष्कृत अंग्रेजी में लिखी। वह पुस्तक भी सुदीर्घकाल से उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त साधारण पाठक के लिए यह पुस्तक बहुत कठिन है। इसलिए अनेक अंग्रेजी जाननेवाले सज्जन रामलाल कपूर ट्रस्ट के सामने ऐसी पुस्तक के प्रकाशन की जोरदार माँग प्रस्तुत कर रहे थे। ट्रस्ट के अधिकारियों ने यह विषय इन पंक्तियों के लेखक के सामने रखा और सुझाव दिया कि वह 'सरलार्थ सन्ध्या अग्निहोत्रविधि' का अंग्रेजी अनुवाद तैयार करे। लेखक ने सङ्कोच किया, क्योंकि वह अपनी न्यूनताओं से परिचित है। फिर भी उनकी गम्भीर इच्छा का आदर करते हुए लेखक ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लेखक ने यह कार्य पूरी योग्यता एवं

Expositor's Note

The Sandhyopāsana and the Agnihotra-Vidhi, compiled by the great seer Dayānanda Sarasvatī, are the manuals of daily devotional and sacrificial duties of the Ārayas. Many lucid expositions, besides the author's own, are available on these manuals in Hindī. These expositions, however, have been considerably tough for the devotees of ordinary qualifications. Keeping such people in view, our reverend teacher Paṇḍita Brahma Datta Jijñāsu wrote the 'Saralārtha Sandhyā Agnihotra-Vidhi', an exposition in Hindī, in an easy and comprehensible style. This book became, and still is, very popular and the publishers have brought out many editions of it.

People well-versed in English, but lacking in Hindī, had been deprived of the pleasure of reading an authentic translation and exposition of the afore-said manuals. Svāmī Bhoomānanda Sarasvatī translated and explained the treatises in chaste English. That book also has not been available for a long time. Besides, it proved to be a tough book for the ordinary readers. Many English-knowing people, therefore, had been putting a pressing demand for such a book before Rām Lāl Kapoor Trust. The authorities of the Trust put the matter before me and suggested that I should prepare an English version of the above-mentioned 'Saralārtha Sandhyā Agnihotra-Vidhi'. I hesitated, as I was aware of my short-comings. Nevertheless, regarding their sincere desire, I accepted the proposal. I have attended to the work to the best of my abilities. Now, I present the work before the readers for their critical evaluation.

निष्ठा से किया है। अब यह ग्रन्थ आलोचनात्मक मूल्याङ्कन के लिए पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि प्रस्तुत ग्रन्थ 'सरलार्थ सन्ध्या-अग्निहोत्रविधि' का अंग्रेजी अनुवाद नहीं है, अपितु उस ग्रन्थ की शैली का अनुसरण करते हुए हिन्दी और अंग्रेजी में अभिनव प्रयास है। निस्सन्देह उस तथा अन्य अनेक ग्रन्थों से भी पर्याप्त सहायता ली गई है। उस ग्रन्थ के प्रारम्भिक दो लेखों—'पाँच मिनट में सन्ध्या के अर्थ' और 'सन्ध्या का सार'—तथा उनके शब्दशः अंग्रेजी अनुवाद का समावेश प्रकृत ग्रन्थ में भी किया गया है। इस प्रकार प्रकृत ग्रन्थ, सामान्यतः, अनेक भक्तों को आकृष्ट करनेवाले 'सरलार्थ सन्ध्या अग्निहोत्रविधि' ग्रन्थ की मौलिक योजना का अनुगमन करता है।

प्रकृत ग्रन्थ की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार दर्शाई जा सकती हैं—

(१) उच्चारण और लिपि-परिवर्तन के सहायतार्थ पटल का समावेश किया गया है।

(२) महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत 'पञ्च-महायज्ञ-विधि' के अन्तर्गत 'ब्रह्मयज्ञ' के अन्त में उपलभ्यमान एक महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ का समावेश 'प्राक्कथन' के रूप में किया गया है और उसका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

(३) सन्ध्या तथा यज्ञ-सम्बन्धी प्रत्येक कर्म पृथक्-पृथक् शीर्षक के अधीन प्रतिपादित किया गया है।

(४) प्रत्येक कर्म की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से बताई गई है।

(५) हिन्दी व्याख्या के अन्तर्गत मन्त्र नागरी लिपि में और अंग्रेजी व्याख्या के अन्तर्गत मन्त्र रोमन लिपि में उचित चिह्नों से युक्त करके छापे गये हैं।

(६) 'पदार्थ' में अन्वयपूर्वक पदों के अर्थ प्रकरण अथवा व्युत्पत्ति के अनुसार दिये गये हैं।

Let the readers permit me to state plainly that this treatise is not an English version of the 'Saralārtha Sandhyā Agnihotra-Vidhi', but a fresh attempt based on the style of the above-mentioned treatise. No doubt, a considerable help has been taken from that work as well as from others. A literal translation of the first two articles of that book, namely—'The Meanings of Sandhyā within five minutes' and 'The Essence of the Sandhyā', are included in the present treatise too. Thus the present work follows, in general, the basic scheme of the 'Saralārtha Sandhyā Agnihotra-Vidhi', which has attracted a good number of devotees.

The salient features of the present work may be summed up as :

1. An aid to pronunciation and transliteration is supplied.
2. An important piece of matter, found at the end of the Brahmayajña in the Pañc-Mahāyajña-Vidhi of Svāmī Dayānanda Sarasvatī, is placed here as a 'preface', rendered literally in English of course.
3. Each devotional or sacrificial act is propounded under a separate heading.
4. The method of each performance is stated distinctly.
5. The mantra (vaidika text) or the mantras are printed in Nāgarī as well as Roman Script.
6. The paraphrase gives contextual or/and derivative explanation.
7. The purport expresses concisely the sense of a mantra or the mantras.
8. 'Prayer for Peace', 'Vaidika National Anthem' and some special notes are supplemented at the end.

As stated above, I have sought help from many authoritative works of the scholars. I owe a deep debt of gratitude to

(७) 'भावार्थ' में संक्षेप से मन्त्र के भाव को प्रकट किया गया है।

(८) अन्त में 'शान्तिपाठ', 'वैदिक राष्ट्रिय प्रार्थना', 'विशेष टिप्पणियाँ' और भजन परिशिष्ट के रूप में रखे गये हैं।

जैसा कि ऊपर निवेदन किया गया है, व्याख्याकार ने विद्वानों के अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों से सहायता ली है। वह अपने पूज्य गुरुवर स्वर्गीय पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु का हार्दिक आभारी है, जिनके ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की गई है। स्वर्गीय स्वामी भूमानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत सन्ध्या तथा अग्निहोत्र की अंग्रेजी व्याख्याओं से मार्गनिर्देश मिला, अतः उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है। व्याख्याकार पूज्य पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक का ऋणी है जिनके ग्रन्थ 'वैदिक नित्यकर्म-विधि' से पर्याप्त सहायता ली गई। श्रीमती शशिकपूर (धर्मपत्नी श्री वीरेन्द्र कुमार कपूर, सोनीपत) को अंग्रेजी में मुद्रित होनेवाली प्रति के समीक्षण के लिए हार्दिक धन्यवाद। रामलाल कपूर ट्रस्ट के अधिकारियों, विशेषतः श्री बा० प्यारेलाल जी कपूर और बा० शान्तिस्वरूप जी कपूर के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया जाता है, क्योंकि इन्हीं आदरणीय महानुभावों की सतत प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रन्थ लिखा गया और प्रकाशित हुआ है। मैं विख्यात विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती के प्रति हार्दिक कृतज्ञता का अनुभव करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के मुद्रण एवं वर्तमान रूप में प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक सम्भव कष्ट सहन किया है।

बहालगढ़ —विजयपाल
१४-४-८६

the late Pt. Brahma Datta Jijñāsu, my reverend teacher, whose treatise is the basis of the present work. I am grateful to the late Svāmī Bhoomānanda Sarasvatī whose commentaries on the Sandhyā and the Agnihotra have been the guiding star for me. I am indebted to venerated Pt. Yudhiṣṭhira Mīmāṃsaka whose work 'Vaidika-Nityakarma-Vidhi' has been the source of many derivative meanings. Thanks are also due to Shrimati Shashi Kapoor (wife of Shri Virendra Kumār Kapoor, Sonepat) who took pains to go through the press copy and suggested many emendations. The authorities of the Rām Lāl Kapoor Trust, particularly Shri Pyāre Lāl Kapoor and Shri Shanti Swaroop Kapoor, are duly thanked for their perpetual inspiration and inclusion of the present treatise in their publications. I express my sense of obligation to Svāmī Jagadīśvarānanda Sarasvati, an eminent scholar, who took every possible pain to get the book print and finish in the present form.

Bahalgarh. Vijaya Pāl
14-4-86

पाँच मिनट में सन्ध्या का अर्थ

मन्त्रों के अर्थ समझे बिना सन्ध्या करने से वह लाभ और आनन्द कभी प्राप्त नहीं हो सकता, जो होना चाहिए। वेदमन्त्रों का अर्थ समझना सरल काम नहीं। सन्ध्या-भक्ति-भजन-उपासना का अर्थ है—अपनी भूलों—कमियों का अनुभव करना और उन्हें दूर करने का उपाय करना। जब समझा ही नहीं कि हम प्रभु से क्या कह रहे हैं, तब मिले भी क्या ? इसके लिए हम पाँच मिनट में समझने योग्य सन्ध्या के अर्थ यहाँ लिख रहे हैं। सरल ढंग यह है कि उन-उन मन्त्रों के मन में उच्चारण के पश्चात् मन में ही इन अर्थों को बोल लेना चाहिए। जब अभ्यास हो जाए तो बोलना बन्द करके मन्त्र के अर्थ को मन में ही विचारते चलना चाहिए। एक-एक मन्त्र के अर्थ को विचारने में यदि अधिक समय चाहें तो लगा सकते हैं। यह व्यक्तिगत सन्ध्या का स्वरूप वा प्रकार है। सामूहिक सन्ध्या में तो मन्त्र ही बोले जा सकते हैं।

हम यहाँ सन्ध्या के इस प्रकार के अर्थ लिखते हैं, जो विना किसी विशेष कठिनाई के समझ में आ जाते हैं, और मन में बैठ जाते हैं। जिन-पर विचार करना भी आसान है, और जिनपर विचार करने से आत्मा में ऊँची प्रेरणा भी साथ-साथ मिलती जाती है। वे अर्थ इस प्रकार हैं—

(१) हे प्रभो ! हमारी बुद्धि अच्छे मार्ग में चले (धियो यो नः प्रचोदयात्)।

—गायत्री-मन्त्र

(२) हे प्रभो ! हमारा वातावरण पवित्र हो (हम ऐसे वातावरण में रहें जो पवित्र हो। यदि वह अपवित्र हो तो हम उसे पवित्र बनावें। यदि ऐसा करना हमारी शक्ति से बाहर हो, तो हम ऐसे वातावरण को छोड़ दें)।

—शंयोरभि स्रवन्तु०

THE MEANINGS OF SANDHYĀ WITHIN FIVE MINUTES

The desired advantage and pleasure cannot be obtained by performing the Sandhyā without understanding the meanings of the mantras thereof. To understand the meanings of the mantras is not an easy job. The aim of Sandhyā—devotion and adoration—is to acknowledge one's errors and drawbacks and to find out means to drive them away. What would be gained, if we do not understand for what we are praying to God. For this purpose, we are writing here easily comprehensible meanings of Sandhyā within five minutes. The easy manner is to utter the meanings mentally after the mental recitation of the mantras. Practise this for some time, then stop the utterance and let the meaning of the mantra be pondered over in the mind. More time, if desired, may be devoted to ponder over the meaning of each mantra. It is the method of performing personal Sandhyā. In a congregational Sandhyā the mantras can only be recited.

We, therefore, write here the meanings of Sandhyā in such a way as they are understood without any particular difficulty and are assimilated in the mind. The meanings, which can be pondered over easily and which, after pondering over, inspire the soul highly, are as follows :

1. O God ! May our intellect proceed on a righteous path. (Gāyatrī mantra)
2. O God ! May our environments be sanctified. (Ācamana mantra)

(३) हमारी इन्द्रियाँ बलवान् हों (अपवित्र विषयों में न जावें, हमारे वश में रहें)। —वाक् वाक्...चक्षुः चक्षुः०

(४) हमारी इन्द्रियाँ पवित्र हों। —भूः पुनातु शिरसि०

(५) प्रभु आप महान् हो। —ओं भूः ओं भुवः

(६-८) हे प्रभो ! हम आपकी व्यवस्था (सृष्टि-नियम) के विरुद्ध न चलें। सृष्टि के ये अद्भुत नियम आपने ही बनाये हैं।

—अघमर्षण के तीनों मन्त्र

(९-१४) अरे मूर्ख मन व्यर्थ में पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-ऊपर-नीचे क्यों भटकता फिरता है। प्रभु तो तेरे भीतर है।

—मनसा परिक्रमा के ६ मन्त्र

(१५-१७) बच्चा माता की गोद में निर्भय रहता है। हे प्रभो ! हम तेरी गोद (आश्रय) में अपने को निर्भय अनुभव करें।

—उपस्थान के तीन मन्त्र

(१८) हे प्रभो ! हम अपना समय नष्ट न करें, उसका मूल्य समझें। —तच्चक्षुः...पश्येम शरदः शतं०

(१९) हमारी बुद्धियों को सुमार्ग में चलने की प्रेरणा दो।

—गायत्री-मन्त्र

(२०) हे प्रभो ! हमारे नित्यकर्मादि आपके अर्पण हैं। इनसे हम में अभिमान पैदा न हो। —समर्पणम्

(२१) हे प्रभो ! आपको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

—नमस्कार-मन्त्र

आरम्भ में सन्ध्या करते समय हर एक मन्त्र के बाद उसका अर्थ भी मन में धीरे-धीरे बोल लेना चाहिए। मास-दो-मास में जब अभ्यास हो जावे, तो फिर मन्त्र बोलते-बोलते उनका भावार्थ भी विचारते चलना चाहिए। इससे सन्ध्या करते समय मन में प्रेरणाएँ उत्पन्न होने लगेंगी। यही सन्ध्या का प्रयोजन है।

छह मास या एक वर्ष में ऐसा अभ्यास हो जावेगा। ऋषि दयानन्द

3. May our sense-organs be strong. (Indriyasparśa mantras)

4. May our sense-organs be pure. (Mārjana mantras)

5. O God ! Thou art great. (Prāṇāyāma mantras)

6-8. O God ! May we not violate Thy orders (the laws of creation). It is Thou Who hast created these laws. (Aghamarṣaṇa mantras)

9-14. O simple mind ! Why doest thou keep wandering in vain in the eastern, southern, western, northern, lower and upper directions ? God is present within thee. (Manasāparikramā mantras)

15-17. A child feels safe in the lap of his mother. O God ! May we feel ourselves safe in Thy lap (shelter). (Upasthāna mantras)

18. O God ! May we not waste our time : may we understand it's value. (Taccakṣur...)

19. Impel our intellectual faculties to proceed on the righteous path. (Gāyatrī mantra)

20. O God ! Our daily duties are dedicated to Thee. May no pride be born in us through them. (Samarpaṇa mantra)

21. O God ! We offer our obeisance to Thee again and again. (Namaskāra mantra)

At the time of performing the Sandhyā, in the begnning, the sense of a particular mantra should be muttered mentally after uttering that mantra. When this is practised for one or two months, then with the recital of the mantras, their sense also should be contemplated upon. By this method inspirations would begin to rise in the mind at the time of performing the Sandhyā. This is the object of Sandhyā.

कृत 'सन्ध्योपासनविधि' के एक-एक शब्द के पृथक्-पृथक् अर्थ (जो 'पञ्चमहायज्ञविधि' के आरम्भ में छपे हैं) उनपर अभ्यास करना चाहिए। और इस 'सन्ध्योपासनविधि' पर पूरा-पूरा अभ्यास कर लेना चाहिए।

इसमें अभ्यास हो जाने पर सन्ध्या करते समय ही किसी-किसी मन्त्र में तो कभी-कभी योगाभ्यास की रीति से चिन्तन किया जा सकता है। इसमें घण्टों भी लग सकते हैं।

—ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

Such practice may take six months or a year. The practice should be pursued on the separate meaning of each word of 'Sandhyopāsana-Vidhi' compiled and elucidated by Maharṣi Dayānanda Sarasvatī. Then complete practice may be made through the present monograph. After practice, at the time of performing the Sandhyā sometimes a mantra may be contemplated upon through the manner of yoga. It may take hours..

Brahma Datta Jijñāsu

सन्ध्या का सार

सन्ध्या=आध्यात्मिक भोजन (आत्मा की खुराक)।

भूखे से भोजन, पिपासु से पानी, रोगी से औषध का आनन्द पूछना चाहिए। 'स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते'—वह स्व स्व अन्तःकरण का ही विषय है।

प्रतिदिन, प्रतिघण्टा, प्रतिक्षण मैले होते रहनेवाले वस्त्र के लिए जैसे धोबी या साबुन की परमावश्यकता है, उसी प्रकार आत्मारूपी वस्त्र किस साबुन वा धोबी से धुलेगा ?

सन्ध्या=परमातमदेव के चिन्तन से। सो कैसे ?

सर्वव्यापी, सुख की वर्षा करनेवाले प्रभु के आश्रय, शत्रुओं पर विजय, चञ्चल इन्द्रियों को सुमार्ग में लगाकर उन्हीं को मित्र बना लेने, सूर्य-चन्द्रादि विचित्र विविध सृष्टि के महान् रचयिता व्यवस्थापक प्रभु से डर पाप से बचने, उच्छृङ्खल (दुलत्तियाँ चलानेवाले), दुर्निवार (बड़े यत्न से वश में होनेवाले), दूर-दूर जानेवाले मनरूपी घोड़े को पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण नीचे और ऊपर उस महान् प्रभु का अन्त लेने में खुली दौड़ दौड़ाकर हँफा तथा थका देने से।

अब ठहरे कहाँ ? माता की गोद में। अन्धकार से रहित, प्रकाश से परिपूर्ण, जातवेदाः—दिव्यस्वरूप, बल के देनेवाले विचित्रस्वरूप—चराचर के आत्मा के समीप। क्या ऐसे महान् पिता का आश्रय लेने पर किसी को भी भय रह सकता है ? कदापि नहीं। तो क्या वह दूर है ? नहीं। तो फिर ? हम दूर हैं। हम अपनी दूरी दूर करें, उपासक बनें।

THE ESSENCE OF THE SANDHYĀ

Sandhyā is the spiritual food (the nutrition of the soul).

Ask a hungry man the pleasure of food, a thirsty fellow the pleasure of water and a patient the pleasure of medicine. It is the subject of one's own innerself.

As a washerman or soap is absolutely necessary to wash a cloth getting dirty everyday, every hour, every moment; similarly by which washerman or with which soap will the soul-cloth be washed ?

With the Sandhyā—with the meditation of the Supreme Spirit. How ? By taking the shelter of God who is all-pervading and is pouring showers of happiness, by subduing the passions; by bringing unsteady sense organs into the righteous path and then befriending them; by escaping from sins for fear of the Supreme Creator and Preserver of strange and manifold creations like the sun and the moon etc.; by causing the unbridled, unrestrainable and far-faring mind like a horse to gallop in all directions to seek the limit of the Supreme God, thus to pant and to tire it.

Now, where should it stay ? In the lap of the mother. Near Him, who is devoid of darkness, full of light, Jātavedāh—giver of divine strength, strange-natured—the soul of the motile and immotile world. Can anyone, taking the shelter of such a great Father, have fear ? No, never ! Then, is He far off ? No. Then ? We are far away. Let us remove our aloofness. May we become the worshippers.

संसार-भर के देश, जाति और मनुष्यों में पुण्य-पाप, अच्छाई-बुराई, नेकी-बदी अवश्य ही मानी जाती है, और माननी पड़ेगी, अतः जगत् के प्राण, दुःख दूर करनेवाले, शुद्धस्वरूप परमात्मदेव के चिन्तन से हमारी पाप-अधर्म-अपवित्र-स्वार्थबुद्धि दूर हो, और पुण्य-धर्म-पवित्र-विश्वहित बुद्धि सदा बनी रहे।

कल्याणकारी उस प्रभु को हम अपना सर्वस्व अर्पण कर दें। प्रातः सायं इन्हीं बातों का चिन्तन करना सन्ध्या है। बस इतना ही ? हाँ, इतना आध्यात्मिक भोजन तो पचेगा भी कठिनाई से ही।

अहा !!! कैसा सुन्दर साबुन—आत्मा का बढ़िया भोजन यह सन्ध्या है। तो यह भूख मिटानेवाला भोजन अच्छा क्यों नहीं लगता ? सच्ची भूख नहीं। जब भी सच्ची भूख लग जायेगी, तभी इसका आनन्द अनुभव होगा। तभी ऋषि की इस वैदिक सन्ध्या के एक-एक शब्द का रहस्य स्वयं ही समझ में आता जाएगा। एक ही मन्त्र पर मनन करने में घण्टों बीत जाएँगे।

तो ऐसी भूख लगती क्यों नहीं ? अज्ञान से अनित्य को नित्य, शरीरादि अपवित्र को पवित्र, दुःखदायी कार्यों को सुख के देनेवाले, अनात्मा को आत्मा समझ रहे हैं, इस कारण।

यह अविद्या अन्धकार कैसे दूर हो ? तत्त्वज्ञान से। तत्त्वज्ञान विना शास्त्र के स्वाध्याय के कहाँ !!! हाँ, ठीक, इसीलिए स्वाध्याय भी ब्रह्मयज्ञ है।

तो इससे रोटी भी मिलेगी ? हाँ हाँ। सो कैसे ? शान्तचित्त हो शान्ति से बैठकर सोचोगे, तभी रोटी मिलने का उपाय भी सूझेगा। नहीं तो हाय-हाय मचाने से भी रोटी कहीं से गिर तो नहीं पड़ेगी। ठीक, इसीलिए ऋषि ने लिखा है—

The existence of virtue and sin, fair and foul, good and bad is, and must be, acknowledged in the persons, nations and countries of the whole world. May, therefore, our sinful, unrighteous, impure and selfish notions be cast away through the reflection upon the Supreme God who is the life-breath of the universe, the remover of afflictions and pure by nature; and may our virtuous, righteous, pure and benevolent notion ever stay with us.

Let us entrust our entire property to the Benevolent God. To reflect upon these elements is Sandhyā. Just this much only ! Yes, so much spiritual food will be digested only with difficulty.

Oh ! ! ! What a fine soap—a palatable food of the spirit this Sandhyā is ! Why, then, does this food which appeases our appetite not taste well ? Because there is no true appetite. Whenever true appetite is felt, its pleasure would be realised. Only then the secret of each word of this Vaidika Sandhyā of the Ṛṣi (seer) will be revealed by itself. Hours will pass in reflecting upon only one mantra.

Why, then, is such an appetite not felt ? It is because we consider the finite substances to be infinite ones, impure bodies and the like to be pure ones, afflicting deeds to be delighting ones and non-soul (corporeal) to be the soul (spiritual).

How may this darkness of ignorance be driven away ? Through knowledge of truth. Where can the knowledge of truth be found without the thorough study of the scriptures (the śastras) ? Yes, all right ! It is why the thorough study of the scriptures too is Brahmayajña.

Will, then, even our livlihood be available with it ? O ! yes. How so ? The way of earning your daily bread will flash in your mind, when you are tranquil-minded and think sitting calmly. Otherwise the bread will certainly not fall from somewhere by dint of lamenting. All right, hence the Ṛṣi (seer) has written—

"नित्यकर्मों के फल—शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थकार्यों की सिद्धि"।

प्रभु कृपा करें, हमें सच्ची आध्यात्मिक भूख लगे और हम सन्ध्या-रूपी आत्मिक भोजन का आनन्द प्राप्त कर सकें!!

—ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

"The fruit of regular duties is the accomplishment of mundane and non-mundane activities through corporeal comfort."

May God have a kind look. May we feel true spiritual hunger. And may we realise the pleasure of spiritual food, the Sandhyā.

Brahma Datta Jijñāsu

अथ सन्ध्योपासन-ब्रह्मयज्ञ-विधि

[प्राक्कथन]

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

यह पुस्तक 'नित्यकर्मविधि' का है। इसमें 'ब्रह्मयज्ञ' का विधान है। इसके मन्त्र, मन्त्रों के अर्थ और जो-जो करने का विधान लिखा है, सो-सो यथावत् करना चाहिए। एकान्त देश में अपने आत्मा, मन और शरीर को शुद्ध और शान्त करके, उस-उस कर्म में चित्त लगाके तत्पर होना चाहिए। इस नित्यकर्म के फल ये हैं कि—ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थकार्यों की सिद्धि होना। उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं। उनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है।

अथाग्निहोत्र-सन्ध्योपासनयोः प्रमाणानि

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातःप्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ॥१॥
प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम ॥२॥

—अथर्व० का० १९। सू० ५५। मं० ३, ४

भाषार्थ—(सायं सायम्) यह हमारा गृहपति अर्थात् घर और आत्मा का रक्षक भौतिक अग्नि और परमेश्वर प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल श्रेष्ठ उपासना को प्राप्त होके (सौमनसस्य दाता) जैसे

TWILIGHT PRAYERS AND DAILY SACRIFICE

PREFACE

(By Svāmī Dayānanda Sarasvatī)

This book deals with obligatory rites (the regular performance of duties). It describes the method of performing the 'Brahmayajña'. Mantras, their explanations and manner of performance given here should be executed accordingly. Having cleansed one's body and having purified and composed one's soul and mind sitting in a secluded place, let one engage oneself in the particular performance faithfully. The result of the regular performance of these duties is the advancement of the soul through the attainment of knowledge and fulfilment of mundane and supermundane affairs through the pleasure of physical health, ultimately the fulfilment of duties, acquirement of wealth, gratification of desires and final emancipation are achieved. Having attained these objects the people can enjoy real bliss legitimately.

Verbal authorities on sacrifice and twilight prayers

1. Sāyaṃ-Sāyaṃ gṛhapatir no agniḥ
   prātaḥ-prātaḥ saumanasasya dātā ।
   Vasor-Vasor vasudāna edhi vayaṃ
   tvendhānās tanvaṃ puṣema ॥

Paraphrase—(Naḥ gṛhapatiḥ) The protectors of our houses and souls (agniḥ) the physical fire and Almighty God (dātā) are the bestowers on us (Saumanasasya) of physical fitness and

आरोग्य और आनन्द का देनेवाला है, उसी प्रकार उत्तम-से-उत्तम वस्तु का देनेवाला है। उसी से परमेश्वर (**वसुदानः**) वसु अर्थात् धन का देनेवाला प्रसिद्ध है। हे परमेश्वर! इस प्रकार आप मेरे राज्य आदि व्यवहार और चित्त में प्रकाशित रहिए। तथा इस मन्त्र में अग्निहोत्र आदि करने के लिए भौतिक अग्नि भी ग्रहण करने योग्य है। (**वयं त्वेन्धानाः**) हे परमेश्वर! पूर्वोक्त प्रकार से हम आपको प्रकाशित करते हुए अपने शरीर को (**पुषेम**) पुष्ट करें। इसी भौतिक अग्नि को प्रज्वलित करते हुए [हम] सब संसार की पुष्टि करके पुष्ट हों ॥१॥

(**प्रातः प्रातर्गृहपतिर्नो०**) इस मन्त्र का अर्थ पूर्वमन्त्र के तुल्य जानो। परन्तु यह विशेष है कि अग्निहोत्र और ईश्वर की उपासना करते हुए हम लोग (**शतंहिमाः**) सौ हेमन्त ऋतु बीत जाएँ जिन वर्षों में अर्थात् सौ वर्ष पर्यन्त (**ऋधेम**) धनादि पदार्थों से वृद्धि को प्राप्त होते रहें और पूर्वोक्त प्रकार से अग्निहोत्र आदि कर्म करके हमारी हानि कभी न हो, ऐसी इच्छा करते हैं ॥२॥

तस्माद् ब्राह्मणोऽहोरात्रस्य संयोगे सन्ध्यामुपास्ते, स ज्योतिष्याज्योतिषो दर्शनात् सोऽस्याः कालः सा सन्ध्या, तत् सन्ध्यायाः सन्ध्यात्वम् ॥३॥—षड्विंश ब्रा० प्रपा ४, खं० ५

भावार्थ—ब्रह्म का उपासक मनुष्य रात्रि और दिवस के सन्धि-समय में नित्य उपासना करे। जो प्रकाश और अप्रकाश का संयोग है, वही सन्ध्या का काल जानना और उस समय में सन्ध्योपासना की जो ध्यानक्रिया करनी होती है, वही सन्ध्या है और जो एक ईश्वर को छोड़के दूसरे की उपासना न करनी तथा सन्ध्योपासना कभी न छोड़ देना, इसी को सन्ध्योपासना कहते हैं ॥३॥

उद्यन्तमस्तं यन्तमादित्यमभिध्यायन् कुर्वन् ब्राह्मणो विद्वान् सकलं भद्रमश्नुते ॥४॥—तैत्तिरीय आ० प्रपा० २, अनु० २

भावार्थ—जब सूर्य के उदय और अस्त का समय आवे, उसमें

happiness (prātaḥ-prātaḥ) every morning and (sāyaṃ-sāyam) every evening. (Vasudānaḥ) may the physical fire and God Almighty (edhi) be the Granters (Vasoḥ-Vasoḥ) of every well-known wealth. (Vayaṃ) May we, (indhānāḥ) revealing and enlightening by means of Sandhyā and Agnihotra (tvā) you both, (puṣema) nourish and develop (tanvam) our bodies and those of all the creatures.

2. Prātaḥ-prātar gṛhapatir no agniḥ
sāyaṃ-sāyaṃ saumanasasya dātā ।
vasor-vasor vasudāna edhi indhānās
tvā śataṃ himā ṛdhema ॥

Paraphrase—(Naḥ gṛhapatiḥ) The protectors of our houses and souls (agniḥ) the physical fire and Almighty God (dātā) are the bestowers on us (saumanasasya) of physical fitness and happiness (prātaḥ-prātaḥ) every morning and (sāyaṃ-sāyam) every evening. (Vasudānaḥ) May the physical fire and God Almighty (edhi) be the Granters (vasoḥ-vasoḥ) of every well-known wealth. May we, (indhānāḥ) revealing and enligthening (tvā) you both, (ṛdhema) increase with health and wealth (śatam) for a hundred (himāḥ) winters (i. e. years), the full span of life.

3. Tasmād brāhmaṇo' horatrāsya saṃyoge sandhyām upāste, Sajyotiṣyā jyotiṣa darśanāt so' syāḥ kālaḥ sā sandhyā tat sandhyāyāḥ sandhyātvam ॥

Purport—An adorer of God should perform meditation and prayer at the junction of day and night. The time of twilight meditation is the meeting of light and darkness. At that time meditation has to be performed. It is sandhyā. Adoring none other than Almighty God regularly is called Sandhyā.

4. Udyantam astaṃ yantam ādityam abhidhyāyan kurvan brāhmano vidvān sakalaṃ bhadram aśnute ॥

Purport—The learned devotee of the Supreme Being, who

नित्य प्रकाशस्वरूप आदित्य=परमेश्वर की उपासना करता हुआ ब्रह्मोपासक मनुष्य ही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि दो समय परमेश्वर की नित्य उपासना किया करें ।।४।।

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् सावित्रीमार्कदर्शनात् ।
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ।।५।।

—मनु० २।१०१

भावार्थ—इसमें मनुस्मृति की भी साक्षी है कि दो घड़ी रात्रि से लेके सूर्योदयपर्यन्त प्रातः सन्ध्या और सूर्यास्त से लेकर तारों के दर्शनपर्यन्त सायंकाल में सविता अर्थात् सब जगत् की उत्पत्ति करनेवाले परमेश्वर की उपासना गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचारपूर्वक करें ।।५।।

[न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम् ।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ।।६।।

—मनु० २।१०३]

भावार्थ—जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासन को नहीं करता, उसको शूद्र के समान समझकर द्विजकुल से अलग करके शूद्र-कुल में रख देना चाहिए। वह सेवाकर्म किया करे और उसके विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत भी न रहना चाहिए। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि सब कामों से इस काम को मुख्य जानकर पूर्वोक्त दो समय में जगदीश्वर की उपासना करते रहें ।।६।।

।। इत्यग्निहोत्रसन्ध्योपासनप्रमाणानि ।।

adores the self-luminous Almighty God at the time of sunrise and sunset, attains perfect bliss. It indicates that the adoration of God should be performed regularly twice a day.

5. Pūrvāṃ sandhyāṃ japans-tiṣṭhet sāvitrīm ārkadarśanāt I
   Paścimāṃ tu samāsīnaḥ samyag ṛkṣāvibhāvanāt II

Purport—The morning adoration of God, the Creator of the universe, meditating on the meaning of the Gāyatrī and other mantras, should be performed from day-break till sunrise and evening adoration from sunset till the appearance of stars.

6. Na tiṣṭhati tu yaḥ pūrvāṃ nopāste yaś ca paścimām I
   Sa Śudravad bahiṣkāryaḥ sarvasmād dvijakarmaṇaḥ II

Purport--The person who does not perform the morning and evening adoration of God regularly should be taken as fallen from the high status of society. Such a person should not be allowed to wear the sacred thread, the sign of knowledge. All persons, therefore, observing this performance as the highest and inevitable duty, should adore God regularly every morning and evening.

—o—

सन्ध्योपासन

दैनिक सन्ध्या आरम्भ करने से पूर्व अपने शरीर की यथोचित शुद्धि करें। एकान्त, पवित्र एवं शान्त स्थान चुनें और वहाँ सुखदायक आसन बिछाएँ। उसपर सुविधापूर्वक इस प्रकार बैठें कि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और दृष्टि नासिका के अग्र भाग पर स्थिर हो। कम-से-कम तीन प्राणायाम (शीर्षक सं० ४ में वर्णित विधि के अनुसार) करें। नीचे लिखे गायत्री मन्त्र (आगे शीर्षक सं० ९ में व्याख्यात) का उच्चारण करते हुए शिखा का बन्धन करें।

गायत्रीमन्त्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥—यजु० ३६।३
—ऋ० ३।६२।१०

१. आचमन

दायें हाथ की हथेली में थोड़ा जल लें (जो कण्ठ के नीचे तक पहुँच सके)। नीचे लिखे आचमन-मन्त्र का एक वार उच्चारण करें। उसके अर्थ पर विचार करते हुए तीन आचमन करें। आचमन करते समय ओठों से जल को सुड़कने की ध्वनि न हो, इसका ध्यान रखें। आचमन के पश्चात् हाथ को जल से धो डालें। यदि जल सुलभ न हो तो केवल मन्त्र का उच्चारण और उसके अर्थ पर विचार करें। जल से आचमन करने का प्रयोजन गले के कफ की निवृत्ति है।

आचमनमन्त्रः

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥—यजु० ३६।१२

THE TWILIGHT PRAYERS

Before commencing the daily twilight meditation and prayer, wash and clean your body. Select a secluded, neat and calm corner, take a comfortable seat. Sit in a convenient posture (āsana), keeping the back-bone erect and eyes half-closed. Take three deep breaths (prāṇāyamas, explained further under heading No. 4). Tie up the tuft of hair (Śikhā) while reciting the Gāyatrī mantra (explained further under heading No. 9) given below :—

Oṃ bhūr bhuvaḥ svaḥ । Tat savitur vareṇyaṃ bhargo devasya dhīmahi । Dhiyo yo naḥ pracodayāt ।।

1. Sipping of Water

Take some water (just enough to reach the throat) in teh right palm. Recite the following mantra. Pondering over its sense, sip water thrice. Avoid making any sound in sipping. Wash the palm used. If no water is available, just recite the mantra and contemplate. The purpose of sipping water is to clear the throat of phlegm etc.

Oṃ Śan no devīrabhiṣṭaya āpo bhavantu pītaye ।
Śaṃyorabhi sravantu naḥ ।।

Paraphrase—

Om	=	May the Protector of all
devīḥ	=	the Illuminator and
apaḥ	=	All-pervading Lord

पदार्थ—

ओम्=सबके रक्षक
देवी:=सबके प्रकाशक तथा
आप:=सर्वव्यापक प्रभु
अभिष्टये=हमारी कामनाओं की पूर्ति के लिए और
पीतये=हमें पूर्ण आनन्द प्रदान करने के लिए
न:=हमारे प्रति
शम्=कल्याणकारी
भवन्तु=हों।
शंयो:=उसके शान्तिदायक एवं सुखदायक आशी:
न:=हमारे ऊपर
अभिस्रवन्तु=चारों ओर से बरसें।

भावार्थ—हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! आपकी अनुपम कृपा से हमें सुख एवं समृद्धि प्राप्त हो। हमारा वातावरण शान्ति और आनन्द से परिपूर्ण हो।

२. इन्द्रिय-स्पर्श

बायें हाथ की हथेली में थोड़ा जल लें। दायें हाथ की मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों के अग्र भाग को उस जल में डुबोएँ। निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करें और यथानिर्देश अङ्गों का स्पर्श भीगी हुई अंगुलियों से करें।

इन्द्रिय-स्पर्श-मन्त्राः

ओं वाक् वाक्।	पहले मुख के दायें भाग, फिर बायें भाग का स्पर्श करें।
ओं प्राण: प्राण:।	पहले दायें नासिका छिद्र, फिर बायें नासिका छिद्र का स्पर्श करें।
ओं चक्षुश्चक्षु:।	पहले दायीं आँख, फिर बायीं आँख का स्पर्श करें।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्।	पहले दायें कान, फिर बायें कान का स्पर्श करें।
ओं नाभि:।	इससे नाभि का स्पर्श करें।
ओं हृदयम्।	इससे हृदय का स्पर्श करें।

bhavantu	=	be
Śam	=	so gracious
naḥ	=	to us as
abhiṣṭaye	=	to satisfy our desires and
pītaye	=	to furnish us with perfect bliss.
Abhi sravantu	=	May He shower from all sides
Śaṃyoh	=	His blessings of peace and well-being
naḥ	=	for us.

Purport—O Almighty God! Be so kind and gracious as to bestow prosperity and bliss upon us. May Thy kindness fill our environments with happiness and peace.

2. Touching of Organs

Take some water in the left palm. Dip the two middle fingers of the right hand into water. Recite the following mantras and touch the respective organs, as indicated below, with the wet fingers—

Oṃ vāk vāk	—	Touch the right side of the mouth, then the left one.
Oṃ prāṇaḥ prāṇaḥ	—	Touch the right nostril, then the left one.
Oṃ cakṣuḥ cakṣuḥ	—	Touch the right eye, then the left one.
Oṃ śrotraṃ śrotram	—	Touch the right ear, then the left one.
Oṃ nābhiḥ	—	Touch the navel cord.
Oṃ hṛdayam	—	Touch the heart (outwardly).
Oṃ kaṇṭhaḥ	—	Touch the throat.
Oṃ śiraḥ	—	Touch the head.

ओं कण्ठः । इससे कण्ठ का स्पर्श करें ।
ओं शिरः । इससे सिर का स्पर्श करें ।
ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । पहले दायीं, फिर बायीं भुजा का स्पर्श करें ।
ओं करतलकरपृष्ठे । दोनों हथेली और उनके पृष्ठ का स्पर्श करें ।

पदार्थ—

ओम् =हे प्रभो !
वाक् वाक्=हमारी वाग् इन्द्रिय और उसकी शक्ति सबल हों ।
प्राणः प्राणः=हमारी प्राण इन्द्रिय और उसकी शक्ति सबल हों ।
चक्षुः चक्षुः=हमारी चक्षु इन्द्रिय और उसकी शक्ति सबल हों ।
श्रोत्रं श्रोत्रम्=हमारी कर्ण इन्द्रिय और उसकी शक्ति सबल हों ।
नाभिः=हमारा नाभि-क्षेत्र बलवान् हो ।
हृदयम्=हमारा हृदय बलपूर्वक कर्म करने में समर्थ हो ।
कण्ठः=हमारा कण्ठ बलवान् हो ।
शिरः=हमारा सिर स्वस्थ मस्तिष्क को धारण करे ।
बाहुभ्यां यशोबलम्=अपने हाथों से हम यश और बल अर्जित करें ।
करतलकरपृष्ठे=हमारी हथेलियाँ और उनके पृष्ठ भाग बलवान् हों ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारे शरीर के विभिन्न अवयव और उनमें स्थित इन्द्रियाँ, सूक्ष्म संचालक शक्तियाँ प्रबल हों और वे अपने अपने कर्मों को सुखपूर्वक करने में समर्थ हों ।

३. मार्जन

पुनः बायें हाथ की हथेली में थोड़ा जल लें । दायें हाथ की मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों के अगले भागों को उस जल में डुबोएँ । निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए, उक्त दोनों अंगुलियों और अंगूठे की सहायता से यथानिर्देश विभिन्न अवयवों पर जल के छींटे दें । मार्जन (छींटे डालने का कार्य) दायें हाथ में कुशा लेकर, जल में भिगोकर भी सुविधापूर्वक किया जा सकता है ।

Oṃ bāhubhyāṃ Yaśobalam	—	Touch the right arm, then the left one.
Oṃ karatala-karapṛṣṭhe	—	Touch both palms (front and back).

Paraphrase—

Om	=	O God !
vāk vāk	=	May our tongues and the faculty of speech be powerful.
prāṇaḥ prāṇaḥ	=	May our nostrils and the faculty of respiration be powerful.
cakṣuḥ cakṣuḥ	=	May our eyes and the faculty of sight be powerful.
śrotraṃ śrotram	=	May our ears and the faculty of hearing be powerful.
nābhiḥ	=	May our umblical region be strong.
hṛdayam	=	May our hearts be capable of functioning energetically.
kaṇṭhaḥ	=	May our throats be powerful.
ṣiraḥ	=	May our heads contain healthy minds.
bāhubhyāṃ yaśobalam	=	May our arms bring fame and power for us.
karatala-karapṛṣṭhe	=	May our hands too be full of vigour.

Purport—O Almighty God ! May our body-organs and the faculties therein be strong and capable enough to perform their respective functions smoothly.

3. The purification of the Organs

Take again some water in the left palm and dipping the two middle fingers of the right hand in it, sprinkle water, with the

मार्जन-मन्त्राः

ओं भूः पुनातु शिरसि। इससे सिर पर छींटे डालें।
ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। इससे नेत्रों पर छींटे डालें।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे। इससे कण्ठ पर छींटे डालें।
ओं महः पुनातु हृदये। इससे हृदय पर छींटे डालें।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। इससे नाभि पर छींटे डालें।
ओं तपः पुनातु पादयोः। इससे पैरों पर छींटे डालें।
ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। इससे सिर पर छींटे डालें।
ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। इससे सम्पूर्ण शरीर पर छींटे डालें।

पदार्थ—

ओं भूः=हे प्राणों के प्राण प्रभो !
शिरसि=हमारी बुद्धि और मन को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं भुवः=हे दुःख दूर करनेवाले परमेश्वर !
नेत्रयोः=हमारी दर्शनशक्ति को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं स्वः=हे सुखस्वरूप परमात्मन्
कण्ठे=हमारी वाक्-शक्ति को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं महः=हे सर्वशक्तिसम्पन्न भगवन् !
हृदये=हमारे धड़, विशेषतः हृदय को
पुनातु=पवित्र कीजिए।

ओं जनः=हे सबके जनक !
नाभ्याम्=हमारे नाभि-क्षेत्र को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं तपः=हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर !
पादयोः=हमारे अधोभाग को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं सत्यम्=हे सत्यस्वरूप परमेश्वर !
पुनः=बार-बार
शिरसि=हमारे मस्तिष्क को
पुनातु=पवित्र कीजिए।
ओं खं ब्रह्म=हे आकाश के समान सर्वव्यापक परमात्मन् !
सर्वत्र=हमारे शरीर के सब अंगों को
पुनातु=पवित्र कीजिए।

aid of the right thumb, upon the various organs, as indicated below, with the recital of the following mantras. The sprinkling may be performed with the help of Kuśa (grass blades).

Oṃ bhūḥ punātu śirasi	—	Sprinkle the head.
Oṃ bhuvaḥ punātu netrayoḥ	—	„ „ eyes.
Oṃ svaḥ punātu kaṇṭhe	—	„ „ throat.
Oṃ mahaḥ punātu hṛdaye	—	„ „ heart. (outwardly).
Oṃ janaḥ punātu nābhyām	—	„ „ navel cord.
Oṃ tapaḥ punātu pādayoḥ	—	„ „ feet.
Oṃ satyaṃ punātu punaḥ śirasi	—	„ „ head.
Oṃ khaṃ brahma punātu sarvatra	—	„ „ whole body.

Paraphrase—

Oṃ bhūḥ	=	O God ! Life-breath of all !
punātu	=	purify
śirasi	=	our intellect and mind.
Oṃ bhuvaḥ	=	O Remover of pains !
punātu	=	purify
netrayoḥ	=	our faculty of sight.
Oṃ svaḥ	=	O Imparter of bliss !
punātu	=	purify
kaṇṭhe	=	our vocal faculties.
Oṃ mahaḥ	=	O Almighty !
punātu	=	purify
hṛdaye	=	our thoracic regions, particularly the heart.
Oṃ janaḥ	=	O Creator of all !

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारे शरीर के सब अङ्ग-प्रत्यङ्ग को पवित्र कीजिए और उन्हें ऐसे शक्तिशाली बनाइए कि वे अपनी क्रियाओं को सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकें। हम अपने अङ्गों को दोषरहित बनाने की क्षमता प्राप्त करें। हम उनसे किसी पापकर्म का आचरण न करें।

४. प्राणायाम

निम्नलिखित मन्त्रों का मानसिक उच्चारण करते हुए और उनके अर्थों का चिन्तन करते हुए प्राणायाम करें। प्राणायाम से मन की एकाग्रता और ध्यान का उच्च स्तर प्राप्त होता है। प्राणायाम करने की विधि संक्षेप में इस प्रकार है—प्रथम चरण में फेफड़ों से वायु को नासिका द्वारा बाहर निकाल दें। इसके पश्चात् श्वास को वहीं यथा-सम्भव काल तक रोके रहें। दूसरे चरण में श्वास द्वारा धीरे-धीरे बाह्य वायु को अधिक-से-अधिक फेफड़ों के अन्दर भरें और उसे वहीं यथासम्भव काल तक रोके रहें। फिर धीरे-धीरे वायु को नासिका द्वारा बाहर निकालें। इस प्रकार कम-से-कम तीन प्राणायाम करें।

प्राणायाम-मन्त्राः

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।—तैत्तिरीय आ० प्रपा० १०, अनु० २७

पदार्थ—

ओम्=हे विश्वरक्षक प्रभो! आप
भूः=प्राणों के प्राण,
भुवः=दुःखनिवारक,
स्वः=सुखदायक
महः=सबसे महान्
जनः=सबके उत्पादक
तपः=ज्ञानस्वरूप और
सत्यम्=सत्यस्वरूप एवं अविनाशी हैं।

punātu	=	purify
nābhyām	=	our abdomenal regions, particularly the navel cord.
Oṃ tapaḥ	=	O Intelligence !
punātu	=	purify
pādayoḥ	=	our lower limbs.
Oṃ satyam	=	O Eternal one !
punātu	=	purify
śirasi	=	our brains
punaḥ	=	again.
Oṃkhaṃ brahma	=	O All-pervading like ether, O Supreme Spirit !
punātu	=	purify
sarvatra	=	all the organs of our bodies.

Purport—O Supreme Lord ! Sanctify all the organs of our bodies and strengthen them so that they may perform their functions properly. May we attain the power to keep our organs pure. May we never do sinful acts with them.

4. The Breathing Exercise

Perform the breathing exercise (Prāṇāyāma), uttering the following mantras, mentally of course, and keeping in mind their meaning. Concentration of the mind and a reasonable degree of contemplation is attained by means of the breathing exercise. The process of its performance may be summed up as : in the first step expel the air from the lungs through the nostrils. Then hold up breath as long as possible. In the second step inhale as much fresh air as possible and retain it inside as long as possible. Then again breathe out slowly. Thus repeat the two actions three times at least.

Oṃ bhūḥ। Oṃ bhuvaḥ। Oṃ svaḥ। Oṃ mahaḥ। Oṃ janaḥ। Oṃ tapaḥ। Oṃ satyam॥

भावार्थ—हे कृपानिधि परमेश्वर ! आप सम्पूर्ण गुणों तथा शक्ति के भण्डार हैं। हम आपके दिव्य गुणों का ध्यान करते हैं। हम आपके सान्निध्य में उत्तम गुणों को ग्रहण करें और वास्तविक सुख को अनुभव करें।

५. अघमर्षण

नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करें और मन में इनके अर्थों का चिन्तन करते हुए परमेश्वर की सर्वज्ञता तथा सर्वशक्तिमत्ता का अनुभव करें। इन मन्त्रों को 'अघमर्षण' कहा जाता है जिसका अर्थ है—पापों (दुष्कर्मों) को दूर करना। ये पापों को कैसे दूर करते हैं ? ये मन्त्र संक्षेप से ब्रह्माण्ड के विकास का निरूपण करते हैं, जिस (विकास) का निमित्तकारण सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है। इन मन्त्रों के द्वारा ध्यान करनेवाला व्यक्ति जब विश्व के कण-कण में प्रभु की सत्ता का अनुभव करता है, तो वह मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक सभी प्रकार के पापों से निवृत्त हो जाता है।

अघमर्षण-मन्त्राः

ओम् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

—ऋ० १०।१९०। १-३

Paraphrase—

Om	=	O Protector of the universe ! Thou art
bhūḥ	=	the life-breath of all,
bhuvaḥ	=	the Remover of pains,
svaḥ	=	the Imparter of bliss,
mahaḥ	=	the Almighty one,
janaḥ	=	the Creator of all,
tapaḥ	=	the Intelligence by nature and
satyam	=	the Truthful and the Eternal.

Purport :—O Most gracious God ! Thou art the store-house of all virtues and power. We meditate on Thy Divine Attributes. May we acquire good qualities and enjoy real pleasure in Thy pious proximity.

5. The Removal of Sins

Recite the following mantras and revolving their sense in your mind, realise the Omnipresence and Omnipotence of God. The mantras are named 'Aghamarṣaṇa' meaning 'sin-effacing'. How do they efface the sins ? The mantras exhibit concisely the evolution of the universe through the agency of the Omnipresent, Omniscient and Omnipotent God. Now, as soon as the meditator realises the existence of God in each and every particle of the universe, he abstains from all sins related to thought, word and deed.

1. Om ṛtaṃ ca satyaṃ cābhīddhāt tapaso' dhyajāyata ।
   Tato rātryajāyata tataḥ samudro arṇavaḥ ॥
2. Samudrād arṇavād adhi saṃvatsaro ajāyata ।
   Ahorātrāṇi vidadhad viśvasya miṣato vaśī ॥
3. Sūryācandramasau dhātā yathāpūrvam akalpayat ।
   Divaṃ ca pṛthivīṃ cāntarikṣamatho svaḥ ॥

पदार्थ (१-३)—

ओम्=हे परमेश्वर !
अभीद्धात्=आपके सुप्रकाशित,
तपसः=व्यापक ज्ञान तथा सामर्थ्य से
ऋतम्=सम्पूर्ण ज्ञान के दिव्य स्रोत अर्थात् वेद
च=और
सत्यम्=प्रकृति अर्थात् स्थूल जगत् का सूक्ष्मकारण
च=भी
अध्यजायत=उत्पन्न हुए (अभिव्यक्त हुए)।
ततः=आपकी असीम शक्ति से
रात्री=प्रलयरूपी रात्रि
अजायत=प्रकट हुई।
ततः=निश्चित काल की अवधि के पश्चात् (अर्थात् एक हजार चतुर्युगियों के पश्चात्)
समुद्रः=तेज से युक्त परमाणु पुञ्जरूप तथा
अर्णवः=स्थूल-आकार जल
[अजायत]=प्रकट हुआ।

० ० ०

समुद्रात् अर्णवात्=सूक्ष्म एवं स्थूल जल के प्रादुर्भाव के
अधि=ऊपर, पश्चात्
संवत्सरः=काल का विभाग
अजायत=अस्तित्व में आया।
विश्वस्य=विश्व के
वशी=नियन्ता प्रभु ने
अहोरात्राणि=दिन और रात्रि को
मिषतः=सहज भाव से, विना किसी आयास के
विदधत्=वनाया।

० ० ०

धाता=जगत् का धारण-पोषण करनेवाले परमेश्वर ने
सूर्याचन्द्रमसौ=सूर्य तथा चन्द्रमा,
पृथिवीम्=पृथिवी
च=और
अन्तरिक्षम्=सूर्य तथा पृथिवी के मध्य स्थित आकाश
च=और
दिवम्=ग्रहों तथा नक्षत्रों
अथो=और

Paraphrase (1-3)—

Om	=	O God !
ṛtam	=	the divine source of all true knowledge, the Vedas
ca	=	and
satyam	=	the primordial matter, the subtle cause of the massive universe
ca	=	also
adhyajāyata	=	were manifested
abhīddhāt	=	by Thy luminous
tapasaḥ	=	Omniscience and Omnipotence.
tataḥ	=	By Thy infinite power
rātrī	=	the darkness of the deluge
ajāyata	=	appeared.
tataḥ	=	After a definite span of time (i.e. one thousand quarters of cycles)
samudraḥ	=	the great expanse of sparkling particles
arṇavaḥ	=	and dense form of water
[ajāyata]	=	came into being.

—o—

Adhi	=	After
samudrād arṇavād	=	the formation of subtle and gross waters
saṃvatsaraḥ	=	division of time
ajāyata	=	came into existence.
vaśī	=	The controller
viśvasya	=	of the universe
vidadhad	=	devised
ahorātrāṇi	=	the days and the nights
miṣataḥ	=	without any effort

—o—

स्वः=प्रकाशयुक्त गतिशील उल्का, पुच्छल तारा आदि पिण्डों को **यथापूर्वम्**=पूर्व कल्प के समान **अकल्पयत्**=बनाया।

भावार्थ (१-३)—हे सर्वज्ञ सर्वशक्तिमन् परमेश्वर! जगत् का प्रलय और सृष्टि की क्रमिक प्रक्रियाएँ आपके सामर्थ्य से घटित होती हैं। आप जड़ एवं चेतन जगत् की रचना पूर्वकल्पों के अनुरूप ही करते हैं। सृष्टि की प्रक्रिया का चिन्तन करते हुए हम अनुभव करते हैं कि आप प्रत्येक प्राणी के शुभ तथा अशुभ कर्मों को जानते हैं और निष्पक्ष न्यायाधीश के रूप में प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों के अनुसार फल देते हैं। आपकी कृपा से हम सब पापों अर्थात् दुष्कर्मों से दूर रहें।

६. द्वितीय आचमन

'शन्नो देवी' मन्त्र का पुनः उच्चारण करें और पूर्ववत् तीन बार आचमन करें।

७. मनसा-परिक्रमा

आगे लिखे छह मन्त्रों का उच्चारण करें। उस-उस मन्त्र में वर्णित परमात्मा के विभिन्न गुणों एवं कर्मों का ध्यान करते हुए, मन से उस-उस निर्दिष्ट दिशा में परिक्रमा करें। परमात्मा का कोई विशेषण किसी दिशा-विशेष तक सीमित या उससे सम्बद्ध नहीं है। यह केवल उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने की विधि है।

मनसा-परिक्रमा-मन्त्राः

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥—अथर्व० ३।२७।१

Dhātā	=	The Supporter and the Protector of the universe
akalpayat	=	brought into existence
sūryācandramasau	=	The sun and the moon
pṛthivim	=	the earth
ca	=	and
antarikṣam	=	middle spheres extended in thespace between the earth and the sun
ca	=	and
divam	=	the planets and the stars
atho	=	and
svaḥ	=	the other luminous bodies (comets, meteors) moving in the space,
yathāpūrvam	=	just in the same manner as He did in the previous cycles of creation.

Purport (1-3)—O Omniscient and Omnipotent God ! the phenomenon of creation and deluge of the universe occur alternately through Thy agency. Thou manifestst animate and inanimate world in the very manner as Thou didst in the previous cycles of creation. Meditating on the process of creation we realise that Thou knowst the good and evil deeds of each one and as an impartial Justice dispensest to each the fruit of his actions in perfect equity. May Thy Grace keep us aloof from all sins, i. e. the evil deeds.

6. Second Sipping of Water

Recite the Śan no devīḥ mantra again and sip water thrice as before.

7. Mental Circumambulation

Recite the following six mantras. Move about mentally in the indicated six directions, visualising the supreme Spirit with respective attributes related in the mantras. None of His

पदार्थ—

प्राची=हमारे सामने पूर्व
दिक्=दिशा स्थित है।
अग्निः=प्रकाशस्वरूप प्रभु
अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।
असितः=वह बन्धन-रहित
रक्षिता=और सबका रक्षक है।
आदित्याः=सूर्य की किरणें, मानो
इषवः=उसके बाण हैं, अर्थात् रक्षा के साधन हैं।
तेभ्यः=उन अर्थात् पूर्व दिशा के माध्यम से अभिव्यक्त गुणों को
नमः=नमस्कार।
अधिपतिभ्यः=प्रभु की नियन्त्रण-शक्तियों को
नमः=नमस्कार।
रक्षितृभ्यः=रक्षा करनेवालों को
नमः=नमस्कार
एभ्यः=इन
इषुभ्यः=बाणों अर्थात् रक्षा के साधनों को
नमः=नमस्कार
अस्तु=हो।
यः=जो
अस्मान्=हमारे प्रति
द्वेष्टि=द्वेष करता है, और
यम्=जिसके प्रति
वयम्=हम
द्विष्मः=द्वेष करते हैं
तम्=उस द्वेषभाव को
वः=आपके
जम्भे=न्यायरूपी जबड़े (व्यवस्था) में
दध्मः=रखते हैं।

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप, वन्धनों से रहित और सर्वरक्षक परमेश्वर! हम आपके उस स्वरूप का ध्यान करते हैं जो अपनी स्वाभाविक नियामक शक्तियों से पूर्व दिशा को व्याप रहा है। हम आप और आपकी शक्तियों के प्रति विनत हैं। हम घृणा तथा द्वेष भावना से दूर रहें और परस्पर मैत्री एवं भ्रातृत्व-प्रेम का वर्ताव करें।

० ० ०

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम

attributes is limited to any particular part of space. It is just a method of showing reverence to Him.

1. Oṃ prācī dig agnir adhipatir asito rakṣitādityā iṣavaḥ ।
Tebhyo namo' dhipatibhyo namo
rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
Yo'smān dveṣṭi yaṃ vayaṃ
dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

Paraphrase—

Prācī	=	Yonder us lies the eastern
dik	=	direction.
Agniḥ	=	Self-luminous God
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Asitaḥ	=	He is free from all fetters
rakṣitā	=	and the Protector of all.
Ādityāḥ	=	The rays of the sun are
iṣavaḥ	=	His arrows i.e. the means of protection.
Namaḥ	=	Salutation
tebhyaḥ	=	to them, i. e. the virtues of God manifested through the medium of the eastern direction.
Namaḥ	=	Salutation
adhipatibhyaḥ	=	to the controlling Powers of the Lord.
Namaḥ	=	salutation
rakṣitṛbhyaḥ	=	to the Protector.
Astu	=	May there be
namaḥ	=	Salutation
ebhyaḥ	=	to these
iṣubhyaḥ	=	arrows, the means of protection.
Dadhmaḥ	=	We place
tam	=	him
yaḥ	=	who
dveṣṭi	=	hates

इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥—अथर्व० ३।२७।२

पदार्थ—

दक्षिणा=हमारे दायीं ओर दक्षिण

दिक्=दिशा स्थित है।

इन्द्रः=परम ऐश्वर्यवाला प्रभु

अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।

तिरश्चिराजिः=वह कुटिल गति (दुष्ट विचारों) का प्रकाशक है अर्थात् सत्-असत् का विवेक करानेवाला है,

रक्षिता=और सबका रक्षक है

पितरः=विद्वान् तथा सदाचारी पुरुष, मानो

इषवः=उसके बाण हैं अर्थात् अज्ञान एवं कदाचार से रक्षा के साधन हैं।

[शेष पूर्ववत्]

भावार्थ—हे परम ऐश्वर्य के स्वामिन्! हम आपके उस स्वरूप का ध्यान करते हैं जो दक्षिण दिशा को व्याप रहा है। हे सन्मार्ग के प्रकाशक! जगत् की अनिष्टकारी शक्तियों से हमारी रक्षा कीजिए। हम आपकी इच्छा के प्रति नतमस्तक हैं। हम मानवसमाज में पूर्ण सामञ्जस्य का सुख प्राप्त करें।

० ० ०

प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥—अथर्व० ३।२७।३

पदार्थ—

प्रतीची=हमारे पीछे की ओर पश्चिम

दिक्=दिशा स्थित है।

वरुणः=सबको ढक लेनेवाला, विश्व का सबसे उत्तम राजा

asmān	=	us, and
yaṃ	=	whom
vayaṃ	=	we
dviṣmaḥ	=	hate
jambhe	=	in the jaws
vaḥ	=	of your justice.

Purport—O Self-luminous, the Protector and the unfettered God ! we visualise Thee who pervadest the eastern quarter of space by Thy natural controlling powers. We bow to Thee and Thy powers in reverence. May we become free from hatred and hostility, and bear friendship and brotherly love towards each other.

2. Dakṣiṇā dig indro'dhipatis tiraścirājī rakṣitā pitara iṣavaḥ ।
   Tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
   Yo'smān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

Paraphrase—

Dakṣiṇā	=	To our right side lies the southern
dik	=	direction.
Indraḥ	=	The Supreme owner of all powers and wealth
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Tiraścirājiḥ	=	He is the Illuminator of the crooked gait (ill-intentions) i.e. the Discriminator of right and wrong
rakṣitā	=	and the Protector of all.
Pitaraḥ	=	The learned and righteous persons
iṣavaḥ	=	are the arrows, i.e. the means to protect from ignorance and ignoble deeds. (The rest as before).

Purport—O Master of the Supreme powers ! we visualise Thee who pervadest the southern quarter of space. O Illuminator of

अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।

पृदाकुः=वह परम उदार है जो अभावपीड़ित जनों को अपने समीप बुलाता है,

रक्षिता=और रक्षक है।

अन्नम्=भोग्य पदार्थ, मानो

इषवः=उसके वाण हैं अर्थात् अभाव से त्राण के साधन हैं।

[शेष पूर्ववत्]

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हम आपके पश्चिम दिशा को व्याप्त करनेवाले स्वरूप का ध्यान करते हैं। हे परम उदार प्रभो ! आप भोग्य पदार्थ प्रदान करके अभाव से पीड़ित प्राणियों की रक्षा करते हैं। हम नमनपूर्वक आपके प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। हम अपने सहवासियों के साथ मैत्रीभाव से रहें।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

—अथर्व० ३।२७।४

पदार्थ—

उदीची=हमारे बायीं ओर उत्तर

दिक्=दिशा स्थित है।

सोमः=शान्ति एवं सुख का दिव्य प्रदाता, जगत् का उत्पादक

अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।

स्वजः=वह विनाशक शक्तियों तथा दुर्गुणों का दूर करने-वाला

रक्षिता=और सबका रक्षक है।

अशनिः=उसकी सर्वव्यापक शक्ति, सामर्थ्य, मानो

इषवः=उसके बाण हैं अर्थात् दुर्गुणों को दूर करने के साधन हैं।

(शेष पूर्ववत्)

the righteous path ! protect us from the clutches of evil-doing forces of the world. May the learned and noble persons eliminate our ignorance and evil thoughts. We submit to Thy will. May we enjoy perfect harmony in society.

3. Pratīcī dig varuṇo'dhipatiḥ pṛdākū rakṣitānnam iṣavaḥ ।
Tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
Yo'smān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

Paraphrase—

Pratīcī	=	Behind us lies the western
dik	=	direction.
Varuṇaḥ	=	All-enveloping, the Supreme King of the universe
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Pṛdākuḥ	=	He is the Gracious Who calls the scarcity-afflicted persons near Him
rakṣitā	=	and the Protector.
Annaṃ	=	The stuffs for consumption
iṣavaḥ	=	are His arrows, i.e. the means of safety from scarcity.
		(The rest as before.)

Purport—O Supreme King ! we visualise Thee in the western quarter of space. O Benevolent God ! Thou protectst the creatures afflicted with scarcity, furnishing them with the stuffs of consumption. We humbly pay our reverence to Thee. May we ever retain friendly terms with our neighbours.

4. Udīcī dik somo'dhipatiḥ svajo rakṣitāśanir iṣavaḥ ।
Tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
Yo'smān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

भावार्थ—हे विश्व के जनक देव ! हम आपके उत्तर दिशा को व्यापनेवाले स्वरूप का ध्यान करते हैं। हे सर्वशक्तिमन् प्रभो ! आप सर्वव्यापक शक्तियों के स्वामी हैं, इसलिए हमारे दुर्गुणों को हमसे दूर करने में समर्थ हैं। हम आपके प्रति अपना विनम्र आभार प्रकट करते हैं। हम अपने साथियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

—अथर्व० ३।२७।५

पदार्थ—

ध्रुवा=हमारे नीचे की ओर ध्रुव
दिक्=दिशा स्थित है।
विष्णुः=सर्वव्यापक प्रभु
अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।
कल्माषग्रीवः=वह मोह, अज्ञान को निगलनेवाला अर्थात् दूर करनेवाला है
रक्षिता=और सबका रक्षक है।
वीरुधः=विविध प्रकार से उपदेश करनेवाले अर्थात् वेद, मानो
इषवः=उसके बाण हैं अर्थात् रक्षा के साधन हैं।

[शेष पूर्ववत्]

भावार्थ—हे सर्वत्र विराजमान परमेश्वर ! हम नीचे की दिशा को व्यापनेवाले आपके स्वरूप का ध्यान करते हैं। हे दिव्य उपदेष्टा ! आप हमारे आन्तरिक अज्ञान तिमिर के निवारण में समर्थ हैं। आप सांसारिक मोहजाल से हमारी रक्षा करें। आपके प्रति अपने विनम्र समर्पण द्वारा हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हम अपने समाज के व्यक्तियों में परस्पर भावनात्म सौहार्द को बनाये रखें।

Paraphrase—

Udīcī	=	To our left side lies the northern
dik	=	direction.
Somaḥ	=	The Divine bestower of peace and pleasure, the Creator
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Svajaḥ	=	He is the Eradicator of the destructive forces, i.e. vices
rakṣitā	=	and the Protector.
Aśaniḥ	=	All-pervading capacity and powers
iṣavaḥ	=	are His arrows, i.e. the means to cast the vices away.
		(The rest as before.)

Purport—O Divine Creator of the universe ! we visualise Thee in the northern quarter of space. O Almighty God ! Thou art the Lord of all-pervading powers and therefore, capable of casting away our vices from us. We submit our gratitude to Thee. May we ever behave affectionately with our companions.

5. Dhruvā dig viṣṇur adhipatiḥ kalmāṣagrīvo raksitā vīrudha iṣavaḥ ।
   Tebhyo namo' dhipatibhyo namo rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
   Yo'mān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

Paraphrase—

Dhruvā	=	To our downwardside lies the lower
dik	=	direction.
Viṣṇuḥ	=	The All-pervading God
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Kalmaṣagrīvaḥ	=	He is the Remover of delusion or ignorance

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम
एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

—अथर्व० ३।२७।६

पदार्थ—

ऊर्ध्वा=हमारे ऊपर की ओर ऊर्ध्व
दिक्=दिशा स्थित है।
बृहस्पतिः=महान् प्राणियों का परम पालक प्रभु
अधिपतिः=इस दिशा का स्वामी है।
श्वित्रः=वह बढ़ने की स्वाभाविक प्रवृत्तिवाले रोग, दुःख तथा अज्ञान से रक्षा करनेवाला है
रक्षिता=और सबका पालक है।
वर्षम्=नित्य ज्ञान की वर्षा अर्थात् वेद, मानो
इषवः=उसके वाण हैं, अर्थात् रोग, दुःख एवं अज्ञान को दूर करने के साधन हैं।

[शेष पूर्ववत्]

भावार्थ—हे परम पालक प्रभो! हम ऊपर की दिशा को व्याप्त करनेवाले आपके स्वरूप का ध्यान करते हैं। हे रक्षक परमेश्वर! बढ़ने की स्वाभाविक प्रवृत्तिवाले रोग और दुःखों से हमारी रक्षा कीजिए। आप सर्वज्ञ हैं; सच्चा ज्ञान प्राप्त करने में हमारी सहायता कीजिए, जिससे हम अज्ञान का निवारण कर सकें। हमारे समाज में परस्पर सहानुभूति तथा सहयोग फैले।

८. उपस्थान

अगले चार मन्त्रों का उच्चारण करें। मन्त्रों के अर्थों पर विचार करते हुए, सन्ध्या करनेवाला व्यक्ति ऐसा अनुभव करे मानो वह सर्वशक्तिमान् प्रभु की दिव्य गोद में बैठा हुआ है।

rakṣitā	=	and the Protector.
virudhaḥ	=	Instructing in various manners, i.e. the Vedas
iṣavaḥ	=	are His arrows, i.e. the means of protection. (The rest as before.)

Purport—O Omnipresent God ! We visualise Thee in the lower quarters of space. O Divine Preceptor ! Thou hast the power of removing our innermost ignorance. Save us from the delusion of worldly affairs. We show our gratitude to Thee by our humble submission. May we always retain the emotional goodwill amongst the people of our society.

6. Ūrdhvā dig bṛhaspatir adhipatiḥ śvitro rakṣitā varṣam iṣavaḥ ।
Tebhyo namo' dhipatibhyo namo rakṣitṛbhyo nama iṣubhyo nama ebhyo astu ।
Yo'smān dveṣṭi yaṃ vayaṃ dviṣmas taṃ vo jambhe dadhmaḥ ॥

Paraphrase—

Ūrdhvā	=	To our upward side lies the upper
dik	=	direction.
Bṛhaspatiḥ	=	The Supreme Sustainer of great beings
adhipatiḥ	=	is the Lord of this direction.
Śvitraḥ	=	He is the Saviour from diseases, pains and ignorance which have natural tendency to increase,
rakṣitā	=	and the Protector of all.
Varṣam	=	The showers of the eternal wisdom, the Vedas
iṣavaḥ	=	are His arrows, i.e. the means to keep the diseases, pains and ignorance away. (The rest as before.)

उपस्थान-मन्त्राः

ओम् उदयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥
—यजु० ३५।१४

पदार्थ—

तमसः=अज्ञान, अन्धकार से
परि=परे अर्थात् रहित
[**पश्यन्तः**]=सर्वशक्तिमान् प्रभु का दर्शन—अनुभव करते हुए
वयम्=हम
उत् [**अगन्म**]=ऊपर उठें अर्थात् आध्यात्मिक उन्नति करें ।
स्वः=प्रकाशस्वरूप
पश्यन्तः=सर्वव्यापक प्रभु का दर्शन—अनुभव करते हुए
[**वयम्**]=हम
उत्तरम् [**अगन्म**]=और ऊपर उठें अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नततर हों ।
देवत्रा=सूर्य आदि प्रकाशमान पिण्डों में
देवम्=प्रकाशक,
सूर्यम्=सबके प्रेरक तथा जनक
ज्योतिः=दिव्य प्रकाश अर्थात् नित्य ज्ञान के स्वामी परमेश्वर का
पश्यन्तः [**वयम्**]=अनुभव करते हुए हम
उत्तमम्=आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे ऊंची अवस्था अर्थात् मोक्ष (परम आनन्द) को
अगन्म=प्राप्त करें ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप दिव्य प्रकाशपुञ्ज हैं । हम आपके दिव्य तेज का दर्शन (अनुभव) करें । आपकी कृपा से हमारी बुद्धि आपका दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो और अन्ततः हम सबसे उत्तम अवस्था—मुक्ति, परम आनन्द को प्राप्त करें ।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥—यजु० ३३।३१

Purport—O Supreme Sustainer ! We visualise Thee in the upper quarter of space. O Saviour ! Protect us from the diseases and pains which tend to increase. Thou art Omniscient : help us to acquire true wisdom so that our ignorance may be eliminated. May sympathy and co-operation prevail in our society.

8. Experiencing the Nearness of God

Recite the following four mantras. Meditating upon the sense of the mantras, the meditator should feel as *if* he were sitting in the divine lap of the Almighty God.

1. Om ud vayaṃ tamasas pari svaḥ paśyanta uttaram I
   Devaṃ devatrā sūryam aganma jyotir uttamam II

Paraphrase—

(Paśyantaḥ)	=	Perceiving mentally the Almighty God Who is
pari	=	beyond (devoid of)
tamasaḥ	=	the darkness, i.e. ignorance or vice,
vayam	=	may we
(aganma)	=	rise up spiritually
ut	=	to a high position.
paśyantaḥ	=	Again perceiving mentally the All-pervading God Who is
svaḥ	=	the Self-Illuminating by nature,
(vayam)	=	may we
(aganma)	=	approach spiritually
uttaram	=	the higher position.
(Paśyantaḥ)	=	Still again perceiving mentally
devam	=	the Illuminator
devatrā	=	of all illuminating bodies like the sun,
sūryam	=	the Impeller and the Originator of all and
jyotiḥ	=	the Lord of Divine Light, i.e. the eternal right knowledge,

पदार्थ—

केतवः=प्रकाश की किरणें अर्थात् दिव्य ज्ञान एवं विचारों की तरंगें
त्यम्=उस
जातवेदसम्=दिव्य ज्ञान में निष्णात,
देवम्=उत्तम धार्मिक व्यवहार-वाले मनुष्य को
विश्वाय=पूर्णरूप से
सूर्यम्=परम प्रेरक तथा स्थावर-जङ्गम के उत्पादक परमेश्वर को
दृशे=दिखाने, ज्ञान कराने के लिए
उ=आगे
उद् वहन्ति=बढ़ाती हैं, प्रोत्साहित करती हैं।

भावार्थ—हे परम जनक प्रभो ! आपने अपने दिव्य ज्ञान को वेद के रूप में प्रकट किया है। आप हमारी बुद्धियों के परम प्रेरक हैं। हम आपकी अनुकम्पा से सत्य ज्ञान को प्राप्त करने तथा उत्तम व्यवहारों को सीखने के लिए उत्साहित हों। परिणामस्वरूप, हम अपने अन्तः-करण में आपकी दिव्य ज्योति का साक्षात्कार करें।

> चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
> आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थु-
> षश्च स्वाहा ॥३॥—यजु० ७।४२

पदार्थ—

चित्रम्=अद्भुत-स्वरूप और
देवानाम्=विद्वान् उपासकों का
अनीकम्=आत्म-बल परमेश्वर
उदगात्=सज्जनों के हृदयों में प्रकट होता है।
मित्रस्य=वह स्नेहशील
वरुणस्य=भद्र
अग्नेः=तथा अग्रणी उपासकों का
चक्षुः=मार्गदर्शक है।

(vayam)	=	may we
aganma	=	attain finally
uttamam	=	the highest spiritual state, i.e. the identification with Him.

Purport—O Lord ! Thou art the embodiment of Divine Lustre. May we perceive Thy splendour. May Thy Grace impel our minds to acquire Thy Divine knowledge. And finally, may we attain the highest spiritual state, i.e. total emancipation.

2. Ud u tyaṃ jātavedasaṃ devaṃ vahanti ketavaḥ ।
Dṛśe viśvāya sūryam ॥

Paraphrase—

Ketavaḥ	=	The rays of light, i.e. the currents of divine knowledge and thoughts
ud vahanti	=	lead up and encourage
u	=	further
tyam	=	that
devam	=	righteous and noble mannered person
jātavedasam	=	who is well-versed in divine knowledge
dṛśe	=	to display : to inform
viśvāya	=	the complete character of
sūryam	=	the Supreme Impeller and the Progenitor of all the animate and inanimate beings.

Purport—O Supreme Progenitor ! Thou hast revealed the divine knowledge in the form of the Vedas. Thou art the Supreme Impeller of our intellectual faculties. May Thy Grace encourage us to obtain right knowledge and to learn good manners. Consequently, may we experience Thy splendour in our hearts completely.

3. Citraṃ devānām udagād anīkaṃ
cakṣur mitrasya varuṇasyāgneḥ ।
Āprā dyāvāpṛthivī antarikṣaṃ sūrya
ātmā jagatas tasthuṣaś ca svāhā ॥

सूर्यः=सबका प्रेरक तथा उत्पादक प्रभु
द्यावापृथिवी=द्युलोक, पृथिवी-लोक
अन्तरिक्षम्=तथा मध्यस्थलोक को
आ प्राः=व्याप्त किये हुए है।
जगतः=वह परमेश्वर जङ्गम
च=और
तस्थुषः=स्थावर प्राणियों का
आत्मा=दिव्य धारक है।
स्वाहा=हम इस सत्य को अनुभव से स्वीकार करते हैं।

भावार्थ—हे परमेश्वर! आप हमारे प्रशंसा के योग्य आत्मबल हैं। आप हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करते हैं। हे सर्वव्यापक प्रभो! हमने आपकी प्रेरक शक्ति का अनुभव किया है, जिस (शक्ति) के अभाव में विश्व का कोई परमाणु गति नहीं कर सकता। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें सुमार्ग दिखाएँ, जिसका अनुसरण करके हम अपने जीवन को उन्नत बना सकें। हे दयामय भगवन्! हम आप के सत्यस्वरूप को अपने हृदयों में अनुभव कर सकें।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥—यजु० ३६।२४

पदार्थ—

तत्=वह
चक्षुः=मार्गदर्शक,
देवहितम्=ज्ञान तथा चरित्र में उन्नत पुरुषों का कल्याण करनेवाला,
शुक्रम्=शुद्ध एवं प्रकाशस्वरूप प्रभु
पुरस्तात्=हमारे समक्ष अर्थात् अन्तःकरण में
उच्चरत्=प्रकट होता है।

Paraphrase—

Citram	=	God who is the wonderful,
anīkam	=	spiritual force
devānām	=	of the learned devotees
udagāt	=	appears in the hearts of the righteous devotees.
Cakṣuḥ	=	He is enlightening guide of
mitrasya	=	the affectionate,
varuṇasya	=	the excellent and
agneḥ	=	the foremost adorers.
Sūryaḥ	=	Being the Actuator and the Producer of all, He
āprāḥ	=	pervades
dyāvāpṛthivī	=	the stars, the planets, the earth and
antarikṣam	=	the comets, the meteors etc. celestial bodies moving in the middle region.
Ātmā	=	He is the Divine Supporter of
jagataḥ	=	the movable, i.e. the animate
Ca	=	and
tasthuṣaḥ	=	the stationary, i.e. inanimate objects of the universe.
Svāhā	=	We acknowledge the fact through our experience.

Purport—O God ! Thou art our praise-worthy spiritual strength. Thou enlightenst our intellectual faculties. O All-pervading God ! We have experienced Thy motivating power, in the absence of which no particle of the universe can move. We pray to Thee to show us the right path, by following which we can make our lives sublime. O Gracious God ! May we realise Thy True Self in our hearts.

4. Tac cakṣur devahitaṃ purastāc chukram uccarat ।
Paśyema śaradaḥ śataṃ jīvema śaradaḥ śataṃ śṛṇuyāma śaradaḥ śataṃ prabravāma śaradaḥ śatam adīnāḥ syāma śaradaḥ śataṃ bhūyaś ca śaradaḥ śatāt ॥

शतम्=हम सौ
शरदः=वर्ष तक
पश्येम=देखें।
शतम्=हम सौ
शरदः=वर्ष तक
जीवेम=जीवित रहें।
शतम्=हम सौ
शरदः=वर्ष तक
शृणुयाम=सुनें।
शतम्=हम सौ
शरदः=वर्ष तक
प्रब्रवाम=बोलें।
शतम्=हम सौ
शरदः=वर्ष तक
अदीनाः=दीनतारहित (अर्थात् सम्पन्न एवं मनस्वी)
स्याम=बने रहें।
च=और
शतात् शरदः=सौ वर्ष से भी
भूयः=अधिक काल तक उपर्युक्त कर्म करते रहें।

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप सनातन, सर्वव्यापक हैं, अतः प्राणिजगत् के परम मार्गदर्शक और कल्याणकारक हैं। आपकी कृपा से हम जीवन की पूर्ण अवधि सौ वर्ष तक शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यपूर्वक जीवित रहें। हमें तेरे दिव्य दर्शन पाने और तेरी पवित्र वाणी को सुनने तथा बोलने का सौभाग्य प्राप्त हो। हम आपसे विनम्र प्रार्थना करते हैं कि आप हमें स्वस्थ अङ्ग, उदात्त विचार तथा आर्थिक सम्पन्नता प्रदान करें।

६. सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना

अब प्रसिद्ध गुरु-मन्त्र या गायत्री-मन्त्र का उच्चारण करें। इसके अर्थ का चिन्तन करें और सन्मार्ग में प्रवृत्त होनेवाली बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

इस मन्त्र से पूर्व तीन महाव्याहृतियों का उच्चारण किया जाता है। इस मन्त्र को गुरु-मन्त्र कहा जाता है, क्योंकि एक तो यह गुरु (महान्) अर्थ का बोधक है, दूसरे—इस मन्त्र से गुरु वेदाध्ययन के लिए शिष्य का उपनयन करता है। इसको गायत्री मन्त्र भी कहा

Parahrase—

Tdat	=	That
Cakṣuḥ	=	Supreme Guide,
devahitam	=	Benefactor of the persons elevated in he learning and the character,
śukram	=	Self-radiant and Virtuous God
uccarat	=	appears
purasṭāt	=	before us, i.e. in our mental vision.
Paśyema	=	May we see
śatam	=	for a hundred
śaradaḥ	=	autumns, i.e. years.
jīvema	=	May we live
śatam	=	for a hundred
śaradaḥ	=	years.
Śṛṇuyāma	=	May we hear
śatam	=	for a hundred
śaradaḥ	=	years.
Prabravāma	=	May we speak
śatam	=	for a hundred
śaradaḥ	=	years.
Syāma	=	May we remain
adīnāḥ	=	undistressed (i. e. prosperous and noble-minded)
śatam	=	for a hundred
śaradaḥ	=	years.
Ca	=	And
bhūyaḥ	=	may we perform the above-mentioned activities for even more than
śatāt	=	a hundred
śaradaḥ	=	years.

Purport—O Self-effulgent God ! Thou, existing ever and everywhere, art the Supreme Guide and Benefactor of the animate world. May we, by Thy grace, live for a hundred years, the

जाता है। इसका कारण यह है कि एक तो यह गानेवाले (उच्चारण करनेवाले) मनुष्य का दुर्भावनाओं, दुःखों से त्राण (रक्षा) करता है, दूसरे—यह मन्त्र गायत्री नामक छन्द में निबद्ध है (जिसमें व्याहृतियों को छोड़कर २३ या २४ अक्षर होते हैं)। इस मन्त्र की देवता (विषय-वस्तु) सविता है, अतः इसे सावित्री भी कहा जाता है।

गायत्री-मन्त्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥—यजु० ३६।३
—ऋ० ३।६२।१०

पदार्थ—

ओम्=सर्वशक्तिमान् परमेश्वर
भूः=सबका प्राण (जीवनाधार),
भुवः=सब दुःखों तथा दुर्गुणों को दूर करनेवाला तथा
स्वः=सबका प्रेरक है।
सवितुः=विश्व के प्रेरक तथा उत्पादक,
देवस्य=सबके दिव्य प्रकाशक और आनन्द-प्रदायक परमात्मा के
तत्=उस
वरेण्यम्=वरण के योग्य, सुन्दर
भर्गः=ज्योति (विज्ञान) स्वरूप को
धीमहि=हम अपने आत्मा में धारण करें, अन्तःकरण में ध्यान करें।
यः=उस सुन्दर प्रकाशमय स्वरूप का धारक जो परमेश्वर है, वह
नः=हमारी
धियः=धारणावती बुद्धियों को
प्रचोदयात्=सन्मार्ग में चलने के लिए प्रेरित करे।

भावार्थ—हे परमेश्वर! आप हमारे प्रियतम प्राण हैं। हमें अशुभ संकल्पों तथा भौतिक विपत्तियों से दूर रखें। हम आपके शुद्ध प्रकाश-

full span of life, with perfect mental and corpoeal health. May we become fortunate enough to have Thy Divine Vision, to hear and speak Thy Sacred Word, the Vedas. We pray most humbly to Thee to furnish us with healthy organs, noble thoughts and economic prosperity.

9. The Prayer for Virtuous Intellect

Now recite the following famous Gāyatrī or Guru mantra. Meditate on its sense and pray to God for the attainment of the virtuous intellectual faculties.

The mantra is preceded by three sacred expressions, the Mahāvyāhṛtis—'the great utterances'. It is called Guru mantra : because, firstly, it conveys a great sense; secondly, it is employed by the preceptor to initiate a pupil. It is also named as Gāyatrī mantra : because firstly, it protects the reciter from ill-intentions and secondly, it belongs to the Gāyatrī class of metres (composed of 23 or 24 syllables excluding the vyāhṛtis). According to the subject-matter of the mantra it has been given the name of Sāvitrī.

Oṃ bhūr bhuvaḥ svaḥ ।
Tat savitur vareṇyaṃ bhargo devasya dhīmahi ।
Dhiyo yo naḥ pracodayāt ॥

Paraphrase—

Om	=	The Almighty God is
bhūḥ	=	the life-breath of all creatures, dearer than even the life itself,
bhuvaḥ	=	the Remover of all evils and pains,
svaḥ	=	and the Motivator of the universe.
Dhīmahi	=	May we perceive, reflect
tat	=	that
vareṇyam	=	excellent
bhargaḥ	=	splendour

मय स्वरूप का दर्शन अपने अन्तःकरण में नित्य किया करें। हे दिव्य प्रकाशक हमें प्रकाश की ओर ले चल। आपका प्रकाशमय स्वरूप हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रवृत्त करे। हम न केवल अभ्युदय अपितु निःश्रेयस भी प्राप्त करें।

१०. समर्पण

इस प्रकार मन्त्रों का उच्चारण करके और उनके अर्थों पर चिन्तन करके उपासक नीचे कहे गये समर्पण को करे। समर्पण-वाक्य का प्रयोजन उसका उच्चारण करना नहीं है, अपितु इस उद्देश्य के लिए विचार-सरणि का प्रदर्शन करना है। इस प्रार्थना के द्वारा उपासक अहंकार से मुक्त हो जाता है और अपने अन्य सभी शुभकर्मों को सर्वव्यापक प्रभु की सेवा में अर्पित कर देता है।

समर्पण-वाक्यम्

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा
धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।

पदार्थ—

हे दयानिधे=हे दया के भण्डार
ईश्वर=सर्वशक्तिमय प्रभो !
भवत्कृपया=आपकी कृपा से
अनेन=इस
जपोपासनादिकर्मणा=जप उपासना आदि शुभकर्म के द्वारा
धर्मार्थकाममोक्षाणाम्=धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की
सिद्धिः=पूर्णता, प्राप्ति
नः=हमें
सद्यः=शीघ्र
भवेत्=हो।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हम मिथ्या अहंकार के कारण पदार्थों और कर्मों को अपना समझने लगते हैं। वस्तुतः आप ही सब पदार्थों तथा कर्मों के स्वामी हैं। हम अपने इस मिथ्या अहंकार से निवृत्त

savituḥ = of the Impeller and the Creator of the universe,
devasya = the Divine Enlightener of all and the Bestower of bliss..
Yaḥ = May He who holds that excellent splendour
pracodayāt = direct
naḥ = our
dhiyaḥ = intellectual faculties to follow the virtuous path.

Purport—O Omnipotent God ! Thou art our dearest life-breath. Keep us away from evil intentions and physical sufferings. May we ever have Thy pure vision in over mind. O Divine Enlightener ! Lead kindly light to us. May thy splendour-nature direct our minds towards the righteous path. May we attain not only physical progress but also the ultimate emancipation.

10. The offering

Thus having recited the mantras and pondering over their sense, perform 'the offering' as related below. The offering expression is not meant for recitation but to demonstrate the course of contemplation for the purpose. The adorer abstains from self-conceit through this prayer and offers all other righteous deeds in the service of the Omnipresent God.

He īśvara dayānidhe ! Bhavat-kṛpayānena japopāsanādi-karmaṇā dharmārthakāmamokṣāṇāṃ sadyaḥ siddhir bhaven naḥ ।

Paraphrase—

He = O
dayānidhe = Treasure of mercy,
īśvara = Almighty God !
naḥ = May our

हों। अतः हम अपने से सम्बद्ध सर्वस्व के सहित आपके प्रति समर्पण करते हैं। हे कृपालु परमेश्वर! हमारी प्रार्थना और भेंट को स्वीकार करें। आपकी कृपा से हम मानव-जीवन के चार महान् पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—को प्राप्त करने में समर्थ हों।

११. नमस्कार

अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए परमेश्वर को नमस्कार करें।

नमस्कार-मन्त्रः

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥—यजु० १६।४१

पदार्थ—

शम्भवाय=कल्याण के परम स्रोत के लिए
च=और
मयोभवाय=सम्पूर्ण सुखों के स्रोत के लिए
च=भी
नमः=हमारा नमस्कार है।
शङ्कराय=सच्ची शान्ति को देनेवाले के लिए
च=और
मयस्कराय=सब सुखों को देनेवाले के लिए
च=भी
नमः=हमारा नमस्कार है।
शिवाय=कल्याणस्वरूप प्रभु के लिए
च=और

siddhiḥ	=	complete success in
dharmārtha-	=	the discharge of the essential duties, the accumulation of wealth,
kāmamokṣāṇām	=	gratification of desires and final emancipation
bhavet	=	be accomplished
sadyaḥ	=	immediately, i.e. as early as possible,
bhavat-kṛpayā	=	by Thy Grace,
anena	=	through this
japopāsanādi-karmaṇa	=	muttering of the mantras, meditation, adoration and virtuous deeds.

Purport—O God ! We have a false conceit to relate objects and actions with ourselves. In fact, Thou art the Lord of all the objects and actions. May we get rid of this self-conceit. We, therefore, surrender ourselves along with everything belonging to us. O Merciful Almighty God ! accept our prayer and offering. May we, by Thy mercy, be capable of attaining the four great pursuits of human life, namely—the fulfilment of essential duties, the accumulation of wealth, the gratification of desires and the ultimate emancipation.

11. Obeisance

In the end pay obeisance to God by reciting the following mantra :

Oṃ namaḥ śaṃbhavāya ca mayobhavāya ca
namaḥ śaṃkarāya ca mayaskarāya ca
namaḥ śivāya ca śivatarāya ca ||

Paraphrase—

Namaḥ	=	We pay obeisance
śaṃbhavāya	=	to the Supreme source of virtues

शिवतराय=अत्यन्त कल्याण करनेवाले परमेश्वर के लिए
च=भी
नमः=हमारा नमस्कार है।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप सभी सांसारिक तथा दिव्य सुखों के स्रोत हैं। आप हमारे अभ्युदय तथा निःश्रेयस के प्रेरक हैं। हे परम-पिता प्रभो ! आपके द्वारा उदारतापूर्वक प्रदान किये गये अद्‌भुत उपहारों के लिए हम आपके प्रति कृतज्ञता से नत हैं, विनम्र अभिवादन करते हैं।

इति सन्ध्योपासनविधिः

ca	=	and
ca	=	also
mayobhavāya	=	to the Disburser of all happiness.
Namaḥ	=	We pay obeisance
śaṃkarāya	=	to the Bestower of real peace
ca	=	and
ca	=	also
mayaskarāya	=	to the Dispenser of all pleasures.
Namaḥ	=	We pay obeisance
śivāya	=	to the Supreme Propitious
ca	=	and
ca	=	also
śivatarāya	=	to the most Benevolent God.

Purport—O Almighty God ! Thou art the Supreme Source of all worldly and divine pleasures. Thou art the Impeller of our physical and spiritual advancement. O Supreme Father ! We make our humble obeisance to Thee for the unique gifts which Thou hast bestowed upon us so liberally.

—: o :—

दैनिक अग्निहोत्र

सन्ध्योपासन के पश्चात् दैनिक अग्निहोत्र का आरम्भ करें। सन्ध्योपासन के समान यह भी नित्य कर्तव्य माना जाता है। आगे लिखी आवश्यक वस्तुएँ पहले ही संगृहीत करके एक स्थान पर रखें— आचमन के लिए जल से पूर्ण आचमनी पात्र, जलसेचन के लिए जल से पूर्ण जलपात्र, धातुनिर्मित हवनकुण्ड, लम्बे हत्थेवाला स्रुव या चम्मच, कुछ घृत, सूखे मेवे और सुगन्धयुक्त ओषधियों के मोटे चूर्ण के मिश्रण से बनी हुई सामग्री, आम, वट आदि यज्ञिय वृक्ष की छोटी-छोटी (लगभग १५ सेंटीमीटर लम्बी तथा तीन सेंटीमीटर मोटी) समिधाएँ, थोड़ा-सा कपूर और एक दियासलाई।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना

अग्निहोत्र के आरम्भ से पूर्व आगे वर्णित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना का निरूपण करनेवाले आठ मन्त्रों का पाठ करें, यद्यपि ये मन्त्र अग्निहोत्र का अङ्ग नहीं हैं। इसलिए पहले आचमन-मन्त्र 'शन्नो देवी०' का उच्चारण करके सन्ध्योपासन में बताई गई विधि से तीन बार आचमन करें। इसके पश्चात् नीचे लिखे आठ मन्त्रों का उच्चारण करें और उनके अर्थों का चिन्तन करें।

ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना-मन्त्राः

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव ॥१॥—यजु० ३०।३

THE DAILY SACRIFICE (OBLATION IN FIRE)

Having performed the Twilight Meditation and prayer (sandhyā), commence the daily sacrifice or the oblation in fire (Agnihotra or Havana). It is likewise an obligatory rite. Procure the following requisites ready at hand—a small cup full of water for sipping, a small jug full of water for sprinkling, a metal fire-pan (Havana-kunda), a spoon with long handle, some melted butter (ghṛta), some sacrificial material (sāmagrī) prepared with dry fruits and the mixture of a coarse powder of various fragrant and medicinal herbs, a good number of small (approximately fifteen centimeters long and three centimeters thick) dry fire-sticks (samidhā) of mango, banyan etc., a bit of camphor and a match-box.

The Eulogy, Prayer and Adoration of God

Before the actual commencement of the oblation in the fire (Agni-hotra), the following eight mantras, relating to the eulogy, prayer and adoration of God, are generally recited, though they are not a part and parcel of the Agnihotra. Hence, sip water thrice with the recitation of 'Śaṃ no devīḥ' mantra, in the same manner as it is done in the Sandhyā. Then recite the following mantras and contemplate on their sense.

1. Oṃ viśvāni deva savitar duritāni parā suva ।
   Yad bhadran tan na ā suva ॥

Paraphrase—

savitaḥ = O Procreator and Impeller of all,
deva = Self-radiant God !

पदार्थ—

सवितः=हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता और प्रेरक,
देव=शुद्धस्वरूप परमेश्वर !
विश्वानि=सम्पूर्ण
दुरितानि=दुर्गुणों और दुःखों को
परा सुव=हमसे दूर कीजिए।
यत्=जो
भद्रम्=कल्याणकारक पदार्थ या गुण है,
तत्=उसको
नः=हमें
आ सुव=प्रदान कीजिए।

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप विश्व के उत्पादक हैं। प्रत्येक प्राणी आपसे ही प्रेरणा प्राप्त करता है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे दुर्गुणों और दुःखों को दूर करें। आपकी कृपा से हम सम्पूर्ण सद्गुणों को धारण करें।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
—यजु० १३।४

पदार्थ—

हिरण्यगर्भः=स्वप्रकाशस्वरूप, सूर्य, चन्द्रमा आदि प्रकाशक पिण्डों का उत्पादक तथा धारक परमेश्वर
अग्रे=जगत् की उत्पत्ति से पूर्व
समवर्तत=वर्तमान रहता है।
भूतस्य=वह उत्पन्न हुए जगत् का
एकः=एक ही
जातः=प्रसिद्ध
पतिः=स्वामी
आसीत्=है।
सः=वह
इमाम्=इस
पृथिवीम्=भूमि को
उत=और
द्याम्=सूर्यादि आकाशस्थ पदार्थों को
दाधार=धारण कर रहा है।

parā suva	=	dispel
viśvāni	=	all
duritāni	=	vices and afflictions from us.
Ā suva	=	Bestow
naḥ	=	upon us
tat	=	that
yat	=	what
bhadram	=	is beneficial.

Purport—O Self-luminous God ! Thou art the Producer of the universe. Every creature receives inspiration from Thee. We beseech Thee to dispel our evils and miseries. May we acquire all the virtues through Thy grace.

2. Hiraṇyagarbhaḥ samavartatāgre
   bhūtasya jātaḥ patir eka āsīt ।
   Sa dādhāra pṛthivīṃ dyām utemāṃ
   kasmai devāya haviṣā vidhema ॥

Paraphrase—

Hiraṇyagarbhaḥ	=	The Self-luminous, the Creator and the Supporter of the luminous bodies like the sun and the moon,
samavartata	=	exists
agre	=	before the creation of the universe.
Āsīt	=	He is
ekaḥ	=	the only
jātaḥ	=	famous
patiḥ	=	Master
bhūtasya	=	of the creati on.
Saḥ	=	He
dādhāra	=	sustains
imām	=	this
pṛthivīm	=	earth

कस्मै=हम उस सुखस्वरूप
देवाय=शुद्ध परमात्मा के लिए
हविषा=ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से
विधेम=विशेष भक्ति किया करें।

भावार्थ—हे स्वप्रकाशस्वरूप भगवन् ! आप नित्य हैं। आप सम्पूर्ण विश्व के उत्पादक, धारक तथा प्रकाशक हैं। इसलिए आप ही एकमात्र उपासना के योग्य देव हैं। ध्यानयोग के द्वारा हम आपके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हैं।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वं उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
—यजु० २५।१३

पदार्थ—

य:=जो
आत्मदाः=आत्मज्ञान का दाता और
बलदाः=शारीरिक तथा आत्मिक बल का देनेवाला है,
विश्वे=सम्पूर्ण मनुष्य
यस्य=जिसकी
उपासते=उपासना करते हैं,
देवाः=विद्वान् लोग
यस्य=जिसके
प्रशिषम्=शासन को मानते हैं,
यस्य=जिसका
छाया=आश्रय ही
अमृतम्=मोक्षसुख देनेवाला है,
यस्य=और जिसके आश्रय का अभाव अर्थात् भक्ति न करना
मृत्युः=मृत्यु अर्थात् जन्म-मरण के चक्र का हेतु है,
कस्मै=हम उस सुखस्वरूप
देवाय=परमात्मा की प्राप्ति के लिए
हविषा=आत्मा और अन्तःकरण से
विधेम=भक्ति अर्थात् आज्ञा-पालन करने में तत्पर रहें।

uta	=	and
dyām	=	the sun-like heavenly bodies.
Vidhema	=	Let us adore particularly
kasmai	=	That blissful
devāya	=	divine Supreme spirit
haviṣā	=	with comprehensible meditation-exercise and intense affection.

Purport—O Self-effulgent God ! Thou art eternal. Thou createst, sustainst and enlightenst all the universe. Thou art, therefore, only deity worth adoring. Let us express our reverence to Thee through meditational exercise.

3. Ya ātmadā baladā yasya viśva upāsate
praśiṣaṃ yasya devāḥ ।
Yasya chāyā'mṛtaṃ yasya mṛtyuḥ
kasmai devāya haviṣā vidhema ॥

Paraphrase—

Vidhema	=	Let us become engaged eagarly in the devotion of
kasmai	=	That Blissful
devāya	=	God
haviṣā	=	with soul and mind;
yaḥ	=	Who
ātmadāḥ	=	furnishes us with the knowledge of soul and
baladāḥ	=	blesses us with physical and spiritual strength;
yasya	=	Whom
viśve	=	all the people
upāsate	=	adore;
yasya	=	Whose
praśiṣam	=	instructions
devāḥ	=	the learned people obey;
yasya	=	Whose

भावार्थ—हे दयामय प्रभो ! आप हमें सत्यविद्या प्रदान करते हैं। आप हमारे शारीरिक तथा आत्मिक बल के मूल स्रोत हैं। आप हमारे एकमात्र उपास्य देव हैं। हम निष्ठापूर्वक आपके आदेशों का पालन करते हैं। जो लोग, आपकी कृपापूर्ण छाया का आश्रय लेते हैं, वे चरम ध्येय मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु जो लोग आपकी अनुकम्पा प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं पाते, वे जन्म-मरण के दुःखों को भोगते रहते हैं।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
—यजु० २३।३

पदार्थ—

यः=जो
प्राणतः=प्राणी और
निमिषतः=अप्राणी
जगतः=जगत् का
महित्वा=अपनी महिमा से
एक इत्=एक ही
राजा=प्रकाशमान राजा
बभूव=है;
यः=जो
अस्य=इस
द्विपदः=मनुष्यादि दो पैरवाले और
चतुष्पदः=गौ आदि चार पैर-वाले प्राणियों के शरीरों की
ईशे=रचना करता है,
कस्मै=हम उस सुखस्वरूप,
देवाय=सकल ऐश्वर्य के दाता परमात्मा के लिए
हविषा=अपनी सकल उत्तम सामग्री से
विधेम=विशेष भक्ति करें।

chāyā	=	shadow, i.e. refuge, imparts
amṛtam	=	immortality (ultimate emancipation); and the absence of
yasya	=	Whose refuge leads to
mṛtyuḥ	=	the death (the afflictions of transmigration).

Purport—O Gracious God ! Thou blessest us with the true knowledge. Thou art the source of our physical and spiritual strength. Thou art the sole object of our adoration. We obey Thy sacred injunction faithfully. The persons who seek shelter under Thy graceful shadow, attain the ultimate emancipation. But the people who are not fortunate enough to gain the favour of Thy Grace, suffer the afflictions of birth and rebirth.

4. Yaḥ prāṇato nimiṣato mahitvaika
id rājā jagato babhūva ।
Ya īśe asya dvipadaś catuṣpadaḥ
kasmai devāya haviṣā vidhema ॥

Paraphrase—

Vidhema	=	Let us serve
kasmai	=	That Blissful
devāya	=	God
haviṣā	=	with our best resources;
yaḥ	=	Who
babhūva	=	is
eka it	=	the sole
rājā	=	brilliant ruler
prāṇataḥ	=	of animate and
nimiṣataḥ	=	inanimate
jagataḥ	=	world
mahitvā	=	by dint of His glory;
yaḥ	=	Who
īśe	=	creates the bodies of

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप विश्व के एकमात्र नियन्ता हैं। प्राणि-जगत् की सकल जाति-प्रजातियाँ आपकी कृपा से ही अस्तित्व में आई हैं। हे सुखस्वरूप प्रभो ! हम अपने प्रियतम पदार्थ आपकी सेवा में समर्पित कर दें।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥८॥

—यजु० ३२।६

पदार्थ—

येन=जिसने
उग्रा=तीक्ष्ण स्वभाववाले
द्यौः=सूर्य आदि
च=और
पृथिवी=भूमि को
दृढा=धारण किया है;
येन=जिसने
स्वः=सांसारिक सुख और
येन=जिसने
नाकः=दुःखरहित मोक्ष को
स्तभितम्=धारण किया है;
यः=जो
अन्तरिक्षे=आकाश में
रजसः=सब लोक-लोकान्तरों का
विमानः=विशेष रूप से निर्माण करता है और भ्रमण कराता है,
कस्मै=हम उस सुखदायक
देवाय=कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए
हविषा=अपने पूर्ण सामर्थ्य से
विधेम=विशेष भक्ति करें।

भावार्थ—हे सर्वव्यापक प्रभो ! आपने अपने अनन्त सामर्थ्य से प्रकाशमान और प्रकाशरहित आकाशीय पिण्डों की रचना की है। आपने नक्षत्रों और ग्रहों को अन्तरिक्ष में स्थापित किया है और उन्हें भ्रमण करा रहे हैं। हे दयामय ईश्वर ! आप प्राणियों को उनके सुकर्मों के अनुसार लौकिक सुख और मोक्ष प्रदान करते हैं। हे कामना

asya	=	these worldly
dvipadaḥ	=	bipeds like men and
catuṣpadaḥ	=	quadrupeds like cow etc.

Purport—O Almighty God ! Thou art the sole controller of the universe. All the species of the animate kingdom came into existence through Thy gracious agency. O Blissful God ! May we offer our dearest belongings to Thy service.

5. Yena dyaur ugrā pṛthivī ca dṛḍhā
yena sva stabhitaṃ yena nākaḥ I
Yo antarikṣe rajaso vimānaḥ
kasmai devāya haviṣā vidhema II

Paraphrase—

Vidhema	=	Let us adore particularly
kasmai	=	That Blissful and
devāya	=	Amiable God
haviṣā	=	with our full efficacy;
yena	=	by Whom
ugrā	=	the formidable bodies
dyauḥ	=	like the sun
ca	=	and
pṛthivī	=	the earth
dṛḍhā	=	are sustained;
yena	=	by Whom
svaḥ	=	all worldly pleasures
stabhitam	=	are established;
yena	=	by Whom
nākaḥ	=	ultimate beatitude is fixed;
yaḥ	=	Who
vimānaḥ	=	creates and sets revolving
rajasaḥ	=	all the cosmic bodies
antarikṣe	=	in space.

के योग्य तथा आनन्दमय प्रभो ! हम यथायोग्य रीति से आपकी उपासना करने में समर्थ हों।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥
—ऋ० १०।१२१।१०

पदार्थ—

प्रजापते=हे प्रजा के स्वामी परमेश्वर !
त्वत्=आपसे
अन्यः=भिन्न कोई दूसरा
एतानि=इन (पृथिवी-सम्बन्धी)
ता=और उन (अन्य आकाशीय पिण्ड सम्बन्धी)
विश्वा=सम्पूर्ण
जातानि=उत्पन्न हुए जड़-चेतन पदार्थों को
न=नहीं
परि बभूव=तिरस्कृत करता है अर्थात् अतिक्रमण करता है।
यत्कामाः=जिस पदार्थ की इच्छा-वाले हम
ते=आपकी
जुहुमः=प्रार्थना करते हैं,
तत्=वह पदार्थ
नः=हमारा
अस्तु=हो जाए।
वयम्=हम
रयीणाम्=सब ऐश्वर्यों के
पतयः=स्वामी
स्याम=होवें।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप सम्पूर्ण विश्व में व्यापक हैं। आप प्रत्येक प्राणी के धारक और पालक हैं। हम सांसारिक लोगों की अनेक कामनाएँ हैं, परन्तु हम उनकी पूर्ति के साधनों और शक्ति से रहित हैं। हे परमदाता ! हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप हमारी न्यायोचित कामनाओं को पूर्ण करें। हम भौतिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार के धनैश्वर्यों के स्वामी बनें।

Purport—O All-pervading God ! Thou hast created the luminous and non-luminous cosmic bodies through Thy infinite power. Thou hast established the planets and stars in space and keepst them revolving. O Graceful Lord ! Thou dispensest to the living beings earthly happiness and ultimate emancipatin just according to their virtuous deeds. O Amiable and Blissful God ! may we attain competency to adore Thee in the best-befitting manner.

6. Prajāpate na tvad etānyanyo
viśvā jātāni pari tā babhūva ı
Yat-kāmās te juhumas tan no astu
vayaṃ syāma patayo rayīṇam ıı

Paraphrase—

Prajāpate	=	O Lord of Creatures !
na	=	no
anyaḥ	=	other
tvat	=	than Thou
pari babhūva	=	despises, i.e. surpasses
viśvā	=	all
etāni	=	these (i.e. related to the earth) and
tā	=	those (i.e. related to the other cosmic bodies)
Jātāni	=	created objects, animate and inanimate ones.
tat	=	May that object
yat-kāmāḥ	=	desiring which
juhumaḥ	=	we pray
te	=	to Thee,
astu	=	be
naḥ	=	ours.
Vayam	=	May we
syāma	=	become

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।७।।

—यजु० ३२।१०

पदार्थ—

सः=वह (परमात्मा)
नः=हमारा
बन्धुः=भाई के समान सुखदायक और
जनिता=सकल जगत् का उत्पादक है ।
सः=वह
विधाता=सब कामों को पूर्ण करनेवाला परमेश्वर
विश्वा=सम्पूर्ण
भुवनानि=लोकों और
धामानि=नाम, स्थान और जन्मों को
वेद=जानता है ।
यत्र=वह परमात्मा ही है, जिस
तृतीये=सांसारिक सुख-दुःख से रहित, नित्य आनन्दयुक्त
धामन्=परमधारक में
अमृतम्=मोक्ष को
आनशानाः=प्राप्त करके
देवाः=विद्वान् लोग
अध्यैरयन्त=स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं ।

भावार्थ—हे दयालु परमेश्वर ! आप बन्धु के समान सुखदायक हैं । विश्व की रचना करके आप उसे शाश्वत नियमों में बाँधे हुए हैं । आप आनन्दस्वरूप हैं । हम आपके सच्चे स्वरूप का ज्ञान करें जिससे हम मोक्ष को प्राप्त कर सकें ।

patayaḥ = the masters
rayīṇam = of all wealth.

Purport—O Lord God ! Thou pervadest the whole universe. Thou art the Supporter and Protector of every creature. We, the worldly people, have many a desire, but lock the resources and strength to fulfil them. We pray to Thee, O Supreme Dispenser, to satisfy our righteous desires. May we possess all kinds of wealth, material and spiritual.

7. Sa no bandhur janitā sa vidhātā
dhāmāni veda bhuvanāni viśvā I
Yatra devā amṛtam ānaśānās
tṛtīye dhamannadhyairayanta II

Paraphrase—

Saḥ = He (i.e. God) is
naḥ = our
bandhuḥ = delighting fellow like a kinsman and
Janitā = Producer of the universe.
Saḥ = He,
vidhātā = being the Disposer of all actions,
veda = knows
viśvā = all
bhuvanāni = the worlds and
dhāmāni = the name, abode and origin of everything.
Yatra = It is He in Whom,
tṛtīye = infinite beatitude free from worldly joys and pains,
dhāman = Supreme Supporter God,
devāḥ = the learned men
ānaśānāḥ = having attained
amṛtam = the ultimate emancipation
adhyairayanta = move about freely.

Purport—O Gracious God ! Thou art as pleasing to us as our own kinsman. Having created the entire universe, Thou disposest

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम ॥८॥

—यजु० ४०।१६

पदार्थ—

अग्ने=हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सम्पूर्ण जगत् के प्रकाशक
देव=सकल सुखदाता परमेश्वर !
विद्वान्=आप सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं।
अस्मान्=अत: हमें
राये=विज्ञान वा राज्य आदि ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए
सुपथा=अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से
विश्वानि—सम्पूर्ण
वयुनानि=प्रज्ञान और उत्तम कर्मों को
नय=प्राप्त कराइए।
अस्मत्=हमसे
जुहुराणम्=कुटिलतायुक्त (अर्थात् दुष्ट) और
एनः=पापरूप कर्म को
युयोधि=दूर कीजिए।
ते=हम आपकी
भूयिष्ठाम्=बहुत प्रकार की
नमउक्तिम्=विनम्र स्तुति को
विधेम=सदा किया करें।

भावार्थ—हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! हमारी बुद्धियों को प्रेरित कीजिए, जिससे हम धर्मयुक्त मार्ग पर चल सकें। हम सभी प्रकार की भौतिक तथा आध्यात्मिक सम्पदा को प्राप्त करें। हे दयानिधि प्रभो ! हमें सब दुर्गुणों से दूर रहने में समर्थ बनाइए। हम पूर्ण नम्रता से सदा आपकी स्तुति करते रहें।

and governst the cosmic laws. Thou art infinite beatitude by nature. May we acquire the true knowledge of Thy nature, through which may we attain the ultimate emancipation.

8. Agne naya supathā rāye asmān
viśvāni deva vayunāni vidvān ।
Yuyodhyasmaj juhurāṇameno
bhūyiṣṭhan te nama'uktiṃ vidhema ॥

Paraphrase—

Agne	=	O Self-effulgent Supreme Wisdom and Illuminator of the universe,
deva	=	Dispenser of all pleasures, Almighty God !
Vidvān	=	Thou art endowed with all knowledge.
Naya	=	Furnish
asmān	=	us
viśvāni	=	with all
vayunāni	=	intellectual faculties and virtuous deeds
supathā	=	by the path of righteous and authoritative persons
rāye	=	for the attainment of wealth like science and government.
Yuyodhi	=	cast out
asmat	=	from us
juhurāṇam	=	crooked (i.e, vicious) and
enaḥ	=	sinful habits and deeds.
Vidhema	=	Let us offer
te	=	unto Thee
bhūyiṣṭhām	=	profound
nama' uktim	=	humble praise, as Thy eulogy.

Purport—O Omniscient God ! Actuate our intellectual faculties that we may follow the path of righteousness. May we accomplish all kinds of wealth—material as well as spiritual. O Gracious

१. आचमन

दायें हाथ की हथेली में थोड़ा जल लें। आगे लिखे हुए मन्त्रों में से प्रथम मन्त्र का उच्चारण करके जल का आचमन करें। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे मन्त्र का उच्चारण करके दूसरा और तीसरा आचमन करें। दायीं हथेली को जल से धो डालें।

आचमन-मन्त्राः

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

—तैत्तिरीय आरण्यक १०।३२, ३५

पदार्थ (१-३)

ओम्=हे सर्वरक्षक और
अमृत=अविनाशी प्रभो !
उपस्तरणम्=आप 'नीचे का ढक्कन' अर्थात् आन्तरिक क्लेशों से बचानेवाले
असि=हैं।
स्वाहा=हम इस तथ्य को यथार्थ रूप में जानते और घोषित करते हैं।

—०—

ओम्=हे सर्वरक्षक
अमृत=अविनाशी प्रभो ! आप
अपिधानम्=‘ऊपरी ढक्कन’ अर्थात् बाहरी कष्टों से बचानेवाले
असि=हैं।
स्वाहा=हम इसे जानते हैं और घोषित करते हैं।

—०—

God ! Enable us to abstain from all vices. May we always eulogise Thee with perfect humility.

1. Sipping of Water

Take a little water in the right palm. Recite the first of the three mantras indicated below and sip water. In the same manner perform second and third sipping after the recital of second and third mantra. Wash the used palm.

1. Om amṛtopastaraṇam-asi svāhā ।
2. Om amṛtāpidhānam-asi svāhā ।
3. Oṃ satyaṃ yaśaḥ śrīr mayi śrīḥ śrayatāṃ svāhā ।

Paraphrase (1-3)—

Om	=	O Protector of all and
amṛta	=	Immortal God !
asi	=	Thou art
upastaraṇam	=	lower cover, i.e. the Protector from the internal agonies.
Svāhā	=	We know in reality and declare this fact.

—o—

Om	=	O Protectcr of all and
amṛta	=	Immortal God !
asi	=	Thou art
apidhānam	=	upper-cover, i. e. the Protector from the external afflictions.
Svāhā	=	We know this fact in reality and declare it.

—o—

Om	=	O Almighty God !
satyam	=	may the truth (i. e. true knowledge),
yaśaḥ	=	fame,
śrīḥ	=	glory,
śrīḥ	=	intellectual and material prosperity

ओम्=हे सर्वशक्तिमान् प्रभो !
सत्यम्=सत्य ज्ञान,
यशः=यश,
श्रीः=तेज और
श्रीः=सम्पत्ति
मयि=मुझमें
श्रयताम्=आश्रित हो अर्थात् मुझे प्राप्त हो।
स्वाहा=मैं यही प्रार्थना करता हूँ।

भावार्थ (१-३)—हे अविनाशी परमेश्वर ! आप सबके रक्षक हैं। आन्तरिक और बाह्य दुःखों से हमारी रक्षा कीजिए। हे परमदाता प्रभो ! हम आपकी कृपा से सच्चा ज्ञान, विमल कीर्ति, भौतिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करें। हम आपके उदार स्वभाव से परिचित हैं और अपने साथियों को परिचित कराते हैं।

२. अङ्गस्पर्श

बायें हाथ की हथेली में थोड़ा जल लें। दायें हाथ की मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों के अग्र भागों को उस जल में डुबोएँ। अब नीचे लिखे मन्त्रों का एक-एक करके उच्चारण करते हुए गीली अंगुलियों से यथानिर्देश उस-उस अङ्ग का स्पर्श करें। प्रत्येक अङ्ग-स्पर्श से पूर्व अंगुलियों को जल में डुबाकर गीली करें। अन्त में दोनों हाथों को जल से धो डालें। अङ्ग-विशेष का स्पर्श करते समय तत्सम्बन्धी मन्त्र के अर्थ पर मन में विचार करते रहें।

अङ्गस्पर्श-मन्त्राः

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु ॥१॥ इस मन्त्र से मुख का स्पर्श करें।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥२॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्रों का स्पर्श करें।
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ इस मन्त्र से दोनों आँखों का स्पर्श करें।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ इस मन्त्र से दोनों कानों का स्पर्श करें।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ इस मन्त्र से भुजाओं का स्पर्श करें।

śrayatām = resort
mayi = to me.
Svāhā = I beg to make this request sincerely.

Purport (1-3)—O Eternal God! Thou art the Protector of all. Protect us from all internal and external pains. O Supreme Bestower! may we achieve true knowledge, high regard in society, material prosperity and spiritual advancement through Thy grace. We are aware of Thy liberality and make it known to our fellow men.

2. Touching various organs of the Body

Take some water in the left palm. Dip the middle and the ring fingers of the right hand in water. Now, reciting the following mantras one by one, touch the respective organs with wet fingers, as indicated below. Dip the two fingers after every touching. Finally wash both hands. Keep in mind the sense of the respective mantra while touching a particular organ.

1. Oṃ vāṅ ma āsye'stu ‖ Touch right and left side of mouth.
2. Oṃ nasor me prāṇo'stu ‖ Touch right and left nostril.
3. Om akṣṇor me cakṣur astu ‖ Touch right and left eye.
4. Oṃ karṇayor me śrotram astu ‖ Touch right and left ear.
5. Oṃ bāhvor me balam astu ‖ Touch right and left arm.
6. Om ūrvor ma ojo'stu ‖ Touch right and left thigh.
7. Om ariṣṭāni me'ṅgāni tanūs tanvā me saha santu ‖ Sprinkle whole booy.

Paraphrase (1-7)—

Om = O Supreme Preceptor!
vāk = may the perfect power of speech
astu = ever exist

ओं ऊर्वोम् ओजोऽस्तु ।।६।। इस मन्त्र से दोनों जंघाओं का स्पर्श करें। ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।७।। इस मन्त्र से सम्पूर्ण अङ्गों का स्पर्श करें।

—पारस्कर गृ० २।३।२५

पदार्थ (१-७)—

ओम्=हे परम उपदेष्टा भगवन्! **वाक्**=पूर्ण वाक्-शक्ति
मे=मेरे **अस्तु**=विद्यमान रहे।
आस्ये=मुख में

—o—

ओम्=हे जीवन देनेवाले प्रभो! **प्राणः**=प्राण-शक्ति
मे=मेरे **अस्तु**=विद्यमान रहे।
नसोः=दोनों नासिका-छिद्रों में

—o—

ओम्=हे पथ-प्रदर्शक प्रभो! **चक्षुः**=दर्शन-शक्ति
मे=मेरे **अस्तु**=विद्यमान रहे।
अक्ष्णोः=नेत्रों में

—o—

ओम्=हे प्रार्थनाओं को सुनने-वाले प्रभो! **कर्णयोः**=दोनों कानों में
श्रोत्रम्=श्रवण-शक्ति
मे=मेरे **अस्तु**=विद्यमान रहे।

—o—

ओम्=हे सर्वशक्तिमान् प्रभो! **बलम्**=कर्म-शक्ति
मे=मेरे **अस्तु**=विद्यमान रहे।
बाह्वोः=दोनों बाहुओं में

—o—

me = in my
āsye = mouth.

—o—

Om = O Bestower of vitality !
prāṇaḥ = may the vitality
astu = ever exist
me = in my
nasoḥ = nostrils.

—o—

Om = O Supreme Guide !
Cakṣuḥ = may the power of seeing
astu = ever exist
me = in my
akṣṇoḥ = eyes.

—o—

Om = O Supreme Hearer of prayers !
śrotram = may the power of hearing
astu = ever exist
me = in my
karṇayoḥ = ears.

—o—

Om = O Almighty God !
balam = may the power of prowess
astu = ever exist
me = in my
bahvoḥ = arms.

—o—

Om = O Lord of vigour !
ojaḥ = may vigour
astu = ever exist
me = in my
ūrvoḥ = thighs.

—o—

ओम्=हे परमेश्वर !
मे=मेरी
ऊर्वोः=दोनों जाँघों में
ओजः=पराक्रम-शक्ति
अस्तु=विद्यमान रहे ।

—०—

ओम्=हे पूर्ण पुरुष !
मे=मेरे
अङ्गानि=प्रधान अङ्ग और
मे=मेरे
तनूः=प्रत्यङ्ग
तन्वा=शरीर के
सह=सहित
अरिष्टानि=सदा दोषरहित
सन्तु=रहें ।

भावार्थ (१-७)—

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! हमारी जिह्वाओं में बोलने की शक्ति, नासिकाओं में प्राणशक्ति, आँखों में देखने की शक्ति, कानों में सुनने की शक्ति, भुजाओं में कर्म करने की शक्ति और जाँघों में पराक्रम करने की शक्ति सदा वर्त्तमान रहे । हमारे शरीरों के अङ्ग-प्रत्यङ्ग, छोटे-बड़े अवयव, क्षति और दोषों से रहित रहें । हम जीवन-भर उत्तम स्वास्थ्य का सुख भोगें ।

३. अग्नि-प्रज्वालन

लम्बे हत्थेवाले स्रुव (चम्मच) में थोड़ा-सा कपूर रखें । पूर्व जलाये हुए घृत के दीपक की शिखा (ज्वाला) से कपूर को निम्न-लिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रज्वलित करें । इसे दियासलाई से भी प्रज्वलित किया जा सकता है, जैसा कि आजकल प्रचलित है ।

अग्नि-प्रज्वालन-मन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः ।।—गोभिल गृ० १।१।११

पदार्थ—

ओम्=हे परमेश्वर ! आप
भूः=सबके प्राण-स्वरूप,
भुवः=दुःखों को दूर करनेवाले,
स्वः=और आनन्द-स्वरूप हैं ।

Om	=	O Perfect God !
me	=	may my
aṅgāni	=	major organs
me	=	as well as my
tanūḥ	=	minor organs
saha	=	with
tanvā	=	the whole body
santu	=	ever exist
ariṣṭāni	=	unhurt.

Purport (1-7)—O Almighty God ! May our tongues be furnished with the strength of speech, our nostrils with vitality, our eyes with vision, our ears with audition, our arms with prowess and our thighs with vigour. May all the major and minor limbs of our bodies remain unhurt and free from all defects. O Gracious God ! may we enjoy sound health throughout our lives.

3. Ignition of Fire

Put a bit of camphor in a long-handled spoon. Uttering the following expressions, ignite the camphor from the flame of a butter oil-lamp kindled beforehand. It may be ignited with a match-stick, as prevalent these days.

Oṃ bhūr bhuvaḥ svaḥ ।

Paraphrase—

Om	=	O God ! Thou art
bhūḥ	=	the life-breath of all,
bhuvaḥ	=	the Remover of pains
svaḥ	=	and Imparter of bliss.

Purport—O God ! we glorify Thee with the expressions bhūḥ, bhuvaḥ and svaḥ—which otherwise imply three worlds—respectively the earth, intermediate space and heavenly bodies. Fire, kindled by us, represents the natural energy that exists in all the three worlds.

भावार्थ—हे परमात्मन् ! हम 'भूः, भुवः, स्वः' इन तीन महाव्याहृतियों द्वारा आपकी स्तुति करते हैं। ये तीनों व्याहृतियाँ तीन लोक—क्रमशः पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्यौः की वाचक हैं। हमारे द्वारा प्रज्वलित यह अग्नि तीनों लोकों में विद्यमान प्राकृतिक ऊर्जा का प्रतीक है।

४. अग्न्याधान

आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करें। 'आदधे' पद का उच्चारण होने पर जलते हुए कपूर को हवन-कुण्ड में चयन की गई छोटी-छोटी समिधाओं के बीच में स्थापित करें।

अग्न्याधान-मन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

—यजु० ३।५

पदार्थ—

ओम्=परमेश्वर
भूः=सबका प्राणस्वरूप,
भुवः=दुःख-हर्ता और
स्वः=आनन्द-दाता है।
[देवयजनी]=देवों के लिए यज्ञ की स्थली
भूम्ना=महत्ता के कारण
द्यौः इव=द्युलोक के समान है और
वरिम्णा=श्रेष्ठता के कारण
पृथिवी इव=पृथिवी के समान है।
पृथिवि=हे विस्तृत
देवयजनि=देवयज्ञस्थली (हवन-कुण्ड)! मैं
तस्याः=उस
ते=तेरी
पृष्ठे=पीठ पर
अन्नादम्=अन्न (हवि) को खाने-वाले
अग्निम्=अग्नि को
अन्नाद्याय=अन्न (हवि) को खाने के लिए
आ दधे=स्थापित करता हूँ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप सबके प्राणस्वरूप, दुःखनाशक और सुखदायक हैं। आपके नित्य यज्ञानुष्ठान के आदेशानुसार हम हवन-

4. Placing Fire in the Fire-pan

Recite the following mantra. On the utterance of 'ādadhe' place the burning camphor in the middle of the small wood-sticks, piled in the fire-pan beforehand.

Oṃ bhūr bhuvaḥ svar dyauriva
bhūmnā pṛthivīva varimṇā ।
Tasyās te pṛthivi devayajani
pṛṣṭhe'gnim-annādam-annādyāyādadhe ॥

Paraphrase—

Om	=	God is
bhūḥ	=	the vital breath,
bhuvaḥ	=	the Remover of all pains,
svaḥ	=	and the Imparter of bliss.
(Devayajanī)	=	The region of sacrifice for the gods
iva	=	resembles
dyauḥ	=	the celestial region
bhūmnā	=	by dint of abundance and
iva	=	it resembles
pṛthivī	=	the earth
varimṇā	=	by dint of excellence.
Pṛthivi	=	O vast
devayajani	=	divine sacrificial place (i.e. the fire-pan)
tasyāḥ	=	on that
te	=	thy
pṛṣṭhe	=	surface
ādadhe	=	I place
agnim	=	the fire which is
annādam	=	the consumer of the edibles (i.e. oblations)
annādyāya	=	for the consumption of food (i.e, the oblations).

Purport—O God ! Thou art the vital breath of all, the Remover of all pains and the Imparter of bliss. In accordance with Thy

कुण्ड में अग्नि स्थापित करते हैं। यज्ञकुण्ड विशाल देवयज्ञभूमि का प्रतीक है। यज्ञकुण्ड में प्रज्वलित किया गया अग्नि हवि का उपभोग करता है (अर्थात् अग्नि हवि के द्रव्यों को सूक्ष्म कणों के रूप में विभक्त कर देता है, जो वायुमण्डल को शुद्ध करते हैं)। यह अग्नि का आधान (स्थापन) उक्त विश्लेषण प्रक्रिया का आरम्भ ठीक प्रकार करे।

५. अग्नि-समिन्धन

प्रज्वलित कपूर को यज्ञकुण्ड में रखने के पश्चात् छोटी-छोटी समिधाएँ जलते हुए कपूर के ऊपर और चारों ओर रखें। पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें और साथ ही निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें।

अग्निसमिन्धन-मन्त्रः

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

—यजु० १५।५४

पदार्थ—

ओम्=प्रभु की कृपा से,
अग्ने=हे अग्नि
उद्बुध्यस्व=उठ (प्रज्वलित हो)
प्रतिजागृहि=और जाग (प्रदीप्त हो)।
अयम्=यह यजमान
च=और
त्वम्=तू—दोनों मिलकर
इष्टापूर्ते=वैयक्तिक तथा सामाजिक कार्यों को
संसृजेथाम्=सम्पन्न करें।
विश्वे देवाः=यहाँ उपस्थित सब विद्वान्
च=और
यजमानः=यजमान
अस्मिन्=इस
सधस्थे=साथ बैठने योग्य स्थान
अधि=में और
उत्तरस्मिन्=उच्च स्थान में
सीदत=बैठें।

injunction of performing daily sacrifice, we establish the sacred fire in the fire-pan. The fire-pan represents the vast sacrificial ground. Fire kindled in the fire-pan consumes the oblations (i. e. it breaks the substance into very fine particles which purify the atmosphere). May this establishment of fire start the process properly.

5. Inflaming the sacrificial fire

After placing the kindled camphor in the fire-pan, put a few small wood-sticks over and around the burning camphor. Inflame the fire by fanning and recite the following mantra simultaneously—

Om udbudhyasvāgne pratijāgṛhi tvam-
iṣṭāpūrte saṃ sṛjethām-ayaṃ ca ।
Asmint sadhasthe adhyuttarasmin
viśve devā yajamānaś-ca sīdata ॥

Paraphrase—

Om = Through the grace of God
agne = O fire !
udbudhyasva = rise (burn)
pratijāgṛhi = and wake up (i.e. catch flames).
Ayam = May this (sacrificer)
ca = and
tvam = thou
saṃ sṛjethām = (both) procure
iṣṭāpūrte = the works of personal and public interest.
Viśve devāḥ = May the learned persons who are present here
ca = and
yajamānaḥ = the sacrificer
sīdata = sit together

भावार्थ—हे दयामय प्रभो ! हमारे द्वारा स्थापित अग्नि अच्छे प्रकार प्रदीप्त हो (इससे यज्ञ-कर्ता की शीघ्र उन्नति करने की तीव्र इच्छा ध्वनित होती है)। हमारे विद्वान् सहयोगी हमारे वैयक्तिक और सार्वजनिक हितकारी कार्यों में हमारा हाथ बटायें। न केवल भौतिक प्रगति में अपितु आध्यात्मिक उन्नति में हम परस्पर एक-दूसरे की सहायता करें।

६. समिदाधान

जब अग्नि यज्ञकुण्ड में चुनी हुई समिधाओं में प्रवेश करने लगे, तो चन्दन, पलाश आदि की, आठ-आठ अंगुल लम्बी तीन समिधाएँ लें। प्रत्येक समिधा का एक सिरा घृत में डुबोएँ। नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करें और एक एक समिधा को पहले, तीसरे तथा चौथे मन्त्र के पश्चात् 'स्वाहा' उच्चरित होने पर प्रदीप्त अग्नि में डालें।

समिदाधान-मन्त्राः

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम ॥१॥ —आश्व गृ० १।१०।१२

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥२॥
ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम ॥३॥
ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे—इदं न मम ॥४॥
—यजु० ३।१-३

adhi = at
asmin = this
sadhasthe = common (gathering) place
uttarasmin = and the upper one (i. e. the higher position).

Purport—O Gracious God ! May the fire kindled by us catch flames (symbolically it signifies the keen desire of the sacrificer to proceed speedily). May our learned companions co-operate with us in our works of personal as well as public interest. May we help one another not only in our material progress but also in our spiritual advancement.

6. Offering of Fire-sticks

When the fire ignites the wood-sticks piled in the fire-pan, take three wood-sticks of sandle tree or the like, each measuring about eight fingers (eight centimeters) in length. Dip the sticks in the molten butter. Recite the following mantras and put the sticks one by one into the inflamed fire on the utterance of 'svāhā' after the first, third and fourth mantra.

1. Om ayaṃ ta idhma ātmā jātavedas tenedhyasva vardhasva ceddha vardhaya cāsmān prajayā paśubhir brahmavarcasenānnādyena samedhaya svāhā ॥ idam-agnaye jātavedase —idaṃ na mama ॥

2. Oṃ samidhāgniṃ duvasyata ghṛtair bodhayatātithim ।
Āsmin havyā juhotana svāhā ॥
Idam-agnaye—idaṃ na mama ॥

3. Oṃ susamiddhāya śocișe ghṛtaṃ tīvraṃ juhotana ।
Agnaye jātavedase svāhā ॥
Idam-agnaye jātavedase—idaṃ na mama ॥

4. Oṃ taṃ tvā samidbhir-aṅgiro ghṛtena vardhayāmasi ॥
Bṛhac-chocā yaviṣṭhya svāhā ॥
Idam-agnaye'ṅgirase—idaṃ na mama ॥

१. पदार्थ—

जातवेदः=हे सबके प्रकाशक और अधिष्ठाता अग्ने !
अयम्=यह
इध्मः=समिधा
ते=तेरा
आत्मा=शरीर है।
तेन=उससे
इध्यस्व=प्रदीप्त हो
च=और
वर्धस्व=बढ़ (प्रज्वलित हो)।
अस्मान्=हमको
इद्ध=प्रकाशित कर
च=और
वर्धय=बढ़ा (तेजस्वी बना)।
प्रजया=प्रजा से
पशुभिः=पशुओं से
ब्रह्मवर्चसेन=दिव्य तेज और
अन्नाद्येन=भोग्य पदार्थों से
समेधय=हमें बढ़ा, सम्पन्न कर।
स्वाहा=हम इन सबके लिए प्रार्थना करते हैं।
इदम्=यह आहुति
जातवेदसे—सबके प्रकाशक तथा अधिष्ठाता
अग्नये=अग्नि के लिए है।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है।

1. Paraphrase—

Jātavedaḥ	=	O fire ! the illuminator and possessor of all,
ayam	=	this
idhmaḥ	=	wood-stick is
te	=	thy
ātmā	=	body.
Idhyasva	=	Be lighted
ca	=	and
vardhasva	=	grow into flames
tena	=	with it.
Iddha	=	Enllghten
ca	=	and
vardhaya	=	enrich
asmān	=	us.
Samedhaya	=	Make us flourish
prajayā	=	with offspring,
paśubhiḥ	=	cattle,
brahmavarcasena	=	divine glory
annādyena	=	and edible food.
Svāhā	=	We entreat of Thee for them all.
Idam	=	May this oblation be
agnaye	=	for the fire
jātavedase	=	who is the possessor and illuminator of all.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine.

Purport—O Almighty God ! Thou art the source of all energy which is symbolised by the sacrificial fire. We express our desire to abandon our selfish ends by offering fuel to the fire and negating our ownership of it. Let us work for the welfare of

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप सम्पूर्ण ऊर्जा के स्रोत हैं, जिस (ऊर्जा) का प्रतीक यज्ञाग्नि है। अग्नि में समिधा समर्पित करके और उससे अपने स्वत्व का त्याग करके हम अपनी स्वार्थ-त्याग की भावना को व्यक्त करते हैं। हम सब प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करें। हे प्रभो ! हम आपसे सम्पूर्ण सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

२. पदार्थ—

समिधा=समिधा से
अग्निम्=अग्नि को
दुवस्यत=सेवें, प्रज्वलित करें।
घृतैः=घृत की आहुतियों से
अतिथिम्=अग्नि को
बोधयत=जागरित करें, प्रदीप्त करें।
अस्मिन्=इस (अग्नि) में
हव्या=हवियों को
आ=सब ओर से
जुहोतन=डालें।
स्वाहा=मैं समिधा-आहुति समर्पित करता हूँ।
इदम्=यह आहुति
अग्नये=अग्नि के लिए है।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है।

भावार्थ—हम समिधा और घृत की आहुतियों को अर्पित करके यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करते हैं। हम अपने निजी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इन पदार्थों को भेंट नहीं करते, अपितु सभी प्राणियों के हित को

all living beings. We entreat of Thee, O Lord, to bless us with all worldly requisites.

2. Paraphrase—

Duvasyata	=	Serve (i.e. Blaze)
agnim	=	the sacrificial fire
samidhā	=	by means of the fuel.
Bodhayata	=	Attend to (i.e. Inflame)
atithim	=	the guest (i.e. the sacrificial fire)
ghṛtaiḥ	=	by means of clarified butter.
Juhotana	=	Offer
havyā	=	the oblations
asmin	=	in this fire
ā	=	from all sides.
Idam	=	It is
agnaye	=	for the fire.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine.

Purport—We set the sacrificial fire ablaze by offering the oblation of fuel and clarified butter. We offer these articles not to achieve our selfish ends, but to benefit all the creatures. May Almighty God bless us with success in our motives.

3. Paraphrase—

Juhotana	=	Offer
tīvram	=	excellent
ghṛtam	=	clarified butter
agnaye	=	into the fiire, which
susamiddhāya	=	is inflamed,
śociṣe	=	enlightened and
jātavedase	=	illuminator of born substances.

लक्ष्य करके अर्पित करते हैं। परमेश्वर हमें अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल करे।

३. पदार्थ—

सुसमिद्धाय=अच्छे प्रकार प्रदीप्त,
शोचिषे=ज्वालायुक्त तथा
जातवेदसे=उत्पन्न पदार्थों के प्रकाशक
अग्नये=अग्नि के लिए
तीव्रम्=उत्कृष्ट
घृतम्=घृत को
जुहोतन=होम करें।

स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।
इदम्=यह
जातवेदसे=प्रकाशक और अधिष्ठाता
अग्नये=अग्नि के लिए है।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है।

भावार्थ—हम अपनी सच्ची उदारता के प्रतीक के रूप में शुद्ध एवं सुगन्धित घृत को सुप्रदीप्त यज्ञाग्नि में अर्पित करते हैं। इस प्रकार समर्पित किया हुआ घृत सूक्ष्म कणों में विभक्त होकर वातावरण को पवित्र करता है। हे दयालु प्रभो !हम अपनी प्रियतम वस्तुओं को सब प्राणियों के कल्याण के लिए अर्पित करने में तत्पर हों।

४. पदार्थ—

अङ्गिरः=हे सर्वव्यापक अग्नि !
तम् त्वा=उस तुझको
समिद्भिः=समिधाओं से और
घृतेन=घृत से
वर्धयामसि=हम बढ़ाते हैं।
यविष्ठ्य=हे पृथक्-पृथक् करने-वालों में श्रेष्ठ !
बृहत्=बहुत, अच्छे प्रकार

शोच=प्रदीप्त हो।
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।
इदम्=यह
अङ्गिरसे=सर्वत्र व्याप्त
अग्नये=अग्नि के लिए है।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है।

Svāhā	=	I offer the oblation.
Idam	=	It is
jātavedase	=	for the illuminator and possessor
agnaye	=	sacrificial fire.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine

Purport—We offer pure and fragrant buttter into the well-lit sacrificial fire as a token of our sincere liberality. The butter thus offered would break into fine particles which, in turn, would purify the atmosphere. O Gracious God ! may we give up our dearest articles for the welfare of all creatures.

4. Paraphrase—

Aṅgiraḥ	=	O all-pervading fire !
vardhayāmasi	=	we increase
tam tvā	=	thee
samidbhiḥ	=	by means of the fuel-sticks
ghṛtena	=	and clarified butter.
Yaviṣṭhya	=	O best disintegrator !
śoca	=	illuminate
bṛhat	=	brightly.
Svāhā	=	I offer the oblation.
Idam	=	It is
aṅgirase	=	for the all-pervading
agnaye	=	fire.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine.

Purport—We set the sacrificial fire to flames with the help of the fuel and clarified butter. The fire pervades the finest particles of the substances and disintegrates them into their component

भावार्थ—हम घृत और समिधाओं से यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करते हैं। अग्नि पदार्थों के सूक्ष्म कणों में व्याप्त हो जाता है और उनको अवयवों के रूप में विश्लिष्ट कर देता है। सूक्ष्म कण ऊर्जा से युक्त होकर वातावरण को दूषित प्रभावों से मुक्त कर देते हैं। हे परमेश्वर! हमारा यह कर्म सब प्राणियों को स्वास्थ्य, सम्पदा और आनन्द प्रदान करे।

७. घृताहुति

आगे लिखे गये मन्त्र का पाँच वार उच्चारण करें। प्रत्येक वार 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर हवनकुण्ड की प्रज्वलित अग्नि में घृत की आहुति दें।

घृताहुति-मन्त्रः

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम॥—आश्व० गृ० १।१०।१२

इस मन्त्र की व्याख्या पूर्व (६.१) हो चुकी है। अन्तर केवल यह है कि वहाँ प्रसङ्ग के अनुसार 'इध्म' का अर्थ 'समिधा' है, जबकि यहाँ 'इध्म' का अर्थ 'घृत' है। 'इध्म' शब्द दोनों प्रसङ्गों में अन्वित हो जाता है क्योंकि व्युत्पत्ति (इन्ध् 'दीप्ति'+म) के अनुसार इसका अर्थ 'दीप्त करनेवाला पदार्थ' है और दोनों (समिधा, घृत) पदार्थ अग्नि को प्रदीप्त करने का कार्य करते हैं।

८. जलसेचन

नीचे लिखे मन्त्रों का एक-एक करके उच्चारण करें। प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के पश्चात् क्रमशः यज्ञकुण्ड के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से आरम्भ करके चारों दिशाओं में जल सेचन करें (अञ्जलि में जल लेकर छिड़कें)।

parts. The fine particles combined with energy remove injurious effects from the atmosphere. O God ! may this act of ours give health, wealth and pleasure to all the living beings.

7. Oblations of clarified butter

Recite the following mantra five times. On each utterance of 'svāhā' pour a spoonful of clarified butter over the burning fire in the fire-pan.

> Om ayaṃ ta idhma ātmā jātavedas tenedhyasva vardhasva ceddha vardhaya cāsmān prajayā paśubhir brahmavarca-senānnādyena samedhaya svāhā ‖ Idam-agnaye jātavedase—idaṃ na mama ‖

The mantra is already explained above (6. 1) with the difference that—'idhma' denotes 'wood-stick' there, while it denotes 'clarified butter' here. The word fits in both contexts., for 'idhma' etymologically (indh 'inflame'+ma) means 'inflaming' and both articles serve the same purpose.

8. Sprinkling of water

Recite the following mantras one by one. After the recital of each mantra sprinkle (pour) water respectively in the eastern, western, northern sides and then all around beginning from southern direction of the fire-pan.

1. Om adite'numanyasva ‖
2. Om anumate'numanyasva ‖
3. Oṃ sarasvatyanumanyasva ‖
4. Oṃ deva savitaḥ prasuva yajñaṃ
   prasuva yajñapatiṃ bhagāya ।
   divyo gandharvaḥ ketapūḥ ketan naḥ
   punātu vācaspatir vācaṃ naḥ svadatu ‖

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥ पूर्व में
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥ पश्चिम में
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥३॥ उत्तर में —गोभिल गृ० १।३।१-३

ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥४॥—यजु० ३०।१

क्रमशः दक्षिण-पश्चिम-उत्तर-पूर्व में

१. पदार्थ—

अदिते=हे संयोग गुण को धारण करनेवाले जल !
अनुमन्यस्व=यज्ञाग्नि के अनुकूल आचरण कर।

भावार्थ=हे सर्वव्यापक प्रभो ! संयोग गुण को धारण करनेवाला जल पूर्व दिशा में हमारी यज्ञाग्नि की रक्षा करे।

२. पदार्थ—

अनुमते=हे अनुकूल रहनेवाले जल !
अनुमन्यस्व=यज्ञाग्नि के अनुकूल आचरण कर।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! सबके अनुकूल रहनेवाला जल पश्चिम दिशा में हमारी यज्ञाग्नि की रक्षा करे।

३. पदार्थ—

सरस्वति=हे गतिशील जल !
अनुमन्यस्व=यज्ञाग्नि के अनुकूल गति कर।

भावार्थ—हे दयामय प्रभो ! गतिशील जल उत्तर दिशा में हमारी यज्ञाग्नि की रक्षा करे।

1. Paraphrase—

Adite = O Water ! the bearer of cohesion,
anumanyasva = accede to the favour of the sacrificial fire.

Purport—O All-pervading God ! may water, which bears the property of cohesion, safe-guard our sacrificial fire in the east.

2. Paraphrase—

Anumate = O agreeable water !
anumanyasva = accede favourably to the sacrificial fire.

Purport—O Almighty God ! may water, agreeable to all, protect our sacrificial fire in the west.

3. Paraphrase—

Sarasvati = O active water !
anumanyasva = agree favourably to the sacrificial fire.

Purport—O Gracious God ! may water, full of activity, guard our sacrificial fire in the north.

4. Paraphrase—

Deva = O divine
savitaḥ = impeller !
prasuva = impel to perform
yajñam = virtuous deeds;
prasuva = impel
yajñapatim = the sacrificer (i. e. the performer of good deeds)
bhagāya = for the attainment of virtues and wealth.
Divyaḥ = May the divine,
gandharvaḥ = sustainer of the earth and
ketapūḥ = the purifier of the bodies
punātu = purify

४. पदार्थ—

देव=हे दिव्य गुणवाले,
सवितः=प्रेरक जल !
यज्ञम्=शुभ कर्मों को करने के लिए
प्र सुव=प्रेरित कीजिए और
यज्ञपतिम्=यज्ञ का अनुष्ठान करनेवाले यजमान को
भगाय=ऐश्यर्वों की प्राप्ति के लिए
प्र सुव=प्रेरित कीजिए।
दिव्यः=दिव्य गुणोंवाला,
गन्धर्वः=पृथिवी को धारण करनेवाला
केतपूः=और शरीरों को पवित्र करनेवाला जल
नः=हमारे
केतम्=शरीर को
पुनातु=पवित्र करे।
वाचस्पतिः=वाणी का रक्षक जल
नः=हमारी
वाचम्=वाणी को
स्वदतु=मधुर बनावे।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! पवित्र जल हमें शुभकर्मों को करने की प्रेरणा देवे। यह हमारे शरीर और मन को पवित्र करे। हम जल के उचित प्रयोग द्वारा मधुर वाणी को प्राप्त करें।

विशेष टिप्पणी—अदिति, अनुमति, सरस्वती और सविता शब्दों का अर्थ यहाँ प्रसङ्ग के अनुसार 'जल' किया गया है, यद्यपि व्युत्पत्ति के अनुसार इनका अर्थ 'परमेश्वर' भी है। यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल सेचन से प्रतीक के रूप में पृथिवी का चारों ओर जल से घिरी होना प्रदर्शित होता है।

६. आघाराहुति

निम्नलिखित दो मन्त्रों का उच्चारण करें और 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर घृत की एक-एक आहुति (आघार—निरन्तर धारा रूप में पश्चिम से पूर्व की ओर) क्रमशः अग्नि के उत्तर तथा दक्षिण भाग में देवें।

naḥ	=	our
ketam	=	bodies.
Vācaspatiḥ	=	May the lord of speech
svadatu	=	sweeten
naḥ	=	our
vācam	=	speech.

Purport—O Almighty God ! May the sacred water actuate us to perform good deeds. May it purify our bodies directly and our minds indirectly. May we attain sweet speech by an appropriate use of water.

N. B.—The expression like 'aditi', 'anumati', 'sarasvati' and 'savitaḥ' are explained as the epithets of water on account of the context, though they do denote God by dint of their derivation. Sprinkling indicates symbolically the surrounding of the earth by water.

9. Two Libations of Clarified butter

Recite the following two mantras and offer two libations (āghārau) of molten butter respectively in the northern and southern parts of the fire, each time on the utterance of 'svāhā'.

1. Om agnaye svāhā ll Idam agnaye—idaṃ na mama ll
2. Oṃ somāya svāhā ll Idaṃ somāya—idaṃ na mama ll

Paraphrase (I-2)—

Svāhā	=	I offer the libation
agnaye	=	for the Supreme Lord, the Self-luminous.
Idam	=	It is
agnaye	=	for the Lord 'Agni'.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine.

—o—

आधार-मन्त्रौ

ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥१॥
ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय—इदं न मम ॥२॥

—गोभिल गृ० १।८।२४

पदार्थ (१-२)—

अग्नये=प्रकाशस्वरूप परमेश्वर के लिए	अग्नये=भगवान् 'अग्नि' के लिए है।
स्वाहा=मैं आहुति अर्पित करता हूँ।	इदम्=यह
इदम्=यह	मम=मेरे लिए
	न=नहीं है।

—०—

सोमाय=सबके जनक और प्रेरक परमेश्वर के लिए	सोमाय=भगवान् 'सोम' के लिए है।
स्वाहा=मैं आहुति अर्पित करता हूँ।	इदम्=यह
इदम्=यह	मम=मेरे लिए
	न=नहीं है।

भावार्थ—हम यज्ञाग्नि के उत्तरी तथा दक्षिणी भागों में प्रकाश-स्वरूप, सबके जनक और प्रेरक परमेश्वर को आहुति देते हैं। इस आहुतिसमर्पण में हमारी दृष्टि में अपना कोई निजी स्वार्थ नहीं है। हे परमेश्वर! हमारे इन कर्मों से विश्व का प्रत्येक प्राणी वास्तविक सुख प्राप्त करे।

१०. आज्यभागाहुति

नीचे लिखे दो मन्त्रों का उच्चारण करें और प्रत्येक 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर घृत की एक-एक आहुति अग्नि के मध्य भाग में देवें।

Svāhā = I offer the libation
somāya = for the Creator and Impeller of all.
Idam = It is
somāya = for the Lord 'Soma'.
Idam = It is
na = not
mama = mine.

Purport(1-2)—We offer the libations in the northern and southern parts of the fire in the name of God, Who is Self-effulgent, Creator of the universe and Impeller of all. We have no selfish end in view in performing this offering. O Almighty God ! may every living being of the universe attain real happiness through our deeds.

10. Two oblations of Melted Butter

Recite the following two mantras and offer two oblations (one oblation on each utterance of 'svāhā') of melted butter in the middle of fire.

1. Oṃ prajāpataye svāhā ॥
   Idaṃ prajāpataye—idaṃ na mama ॥
2. Om indrāya svāhā ॥ Idam indrāya—idam na mama ॥

Paraphrase (1-2)—

Svāhā = I offer the oblation
prajāpataye = for the Master of all creatures.
Idam = It is
prajāpataye = for the Lord 'Prajāpati'.
Idam = It is
na = not
mama = mine.

—o—

आज्यभागाहुति-मन्त्रौ

ओं प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये—इदं न मम ।।१।।
ओं इन्द्राय स्वाहा ।। इदम् इन्द्राय—इदं न मम ।।२।।
—गोभिल गृ० १।८।४,५ ।।

पदार्थ (१-२)—

प्रजापतये=सम्पूर्ण प्राणियों के पालक परमेश्वर के लिए
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ ।
इदम्=यह
प्रजापतये=भगवान् 'प्रजापति' के लिए है ।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है ।

—०—

इन्द्राय=सब ऐश्वर्यों के स्वामी के लिए
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ ।
इदम्=यह
इन्द्राय=भगवान् 'इन्द्र' के लिए है ।
इदम्=यह
मम=मेरे लिए
न=नहीं है ।

भावार्थ—हे सर्वशक्तिमान् प्रभो ! आप सब प्राणियों के रक्षक और ऐश्वर्यों के स्वामी हैं । हम इन आहुतियों को प्रतीक रूप में यह प्रदर्शित करने के लिए देते हैं कि हमने निजी स्वार्थों का त्याग कर दिया है । ऐसा करने में हमारा कोई स्वार्थ नहीं है ।

अग्निहोत्र की प्रधान आहुतियाँ

नीचे लिखे हुए मन्त्रों का उच्चारण करें और प्रत्येक 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर यज्ञाग्नि में घृत और सामग्री की आहुति साथ-साथ देवें । इन मन्त्रों को तीन समूहों में विभक्त किया गया है—प्रातःकालिक, सायंकालिक और उभयकालिक । प्रातःकाल पहले प्रातःकालिक मन्त्रों से आहुतियाँ देकर, उभयकालिक मन्त्रों से

Svāhā	=	I offer the oblation
indrāya	=	for the Master of all power and pelf.
Idam	=	It is
Indrāya	=	for the Lord 'Indra'.
Idam	=	It is
na	=	not
mama	=	mine.

Purport (1-2)—O Almighty God ! Thou art the Master of all creatures, power and pelf. We offer these oblations to the fire to demonstrate symbolically our abandonment of private ownership. In doing so, we have no selfish motive at all.

The Chief Oblations of Agnihotra

Recite the following mantras and offer the oblation of molten butter and other sacrificial material (sāmagrī) simultaneously, on each utterance of 'svāhā'. The mantras are divided into three groups—for morning, for evening and for both times (morning and evening). In the morning offer the oblations first with the morning mantras ; then with both-time mantras. In the same manner, in the evening offer the oblations first with the evening mantras, then with both-time mantras. In case one desires to perform the Agnihotra once for both times, let him offer the oblations in the order of morning, evening and both-times.

11. Oblations for the Morning Sacrifice

1. Oṃ sūryo jyotir jyotiḥ sūryaḥ svāhā ||
2. Oṃ sūryo varco jyotir varcaḥ svāhā ||
3. Oṃ jyotiḥ sūryaḥ sūryo jyotiḥ svāhā ||
4. Oṃ sajūr devena savitrā sajūr uṣasendravatyā |
   Juṣāṇaḥ sūryo vetu svāhā ||

आहुतियाँ देवें। इस प्रकार सायंकाल पहले सायंकालिक मन्त्रों की आहुतियाँ दें, तब उभयकालिक मन्त्रों से आहुतियाँ देवें। यदि कोई व्यक्ति दोनों काल के अग्निहोत्र को एक बार ही करना चाहता है, तो वह क्रमशः प्रातःकालिक, सायंकालिक, उभयकालिक मन्त्रों से आहुतियाँ देवें।

११. प्रातःकालिकाहुति-मन्त्राः

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

—यजु० ३।९-१०

पदार्थ (१-४)—

सूर्यः=परम प्रेरक प्रभु
ज्योतिः=प्रकाशस्वरूप है।
सूर्यः=उदय होता हुआ सूर्य
ज्योतिः=उस प्रकाश का प्रतिनिधि है।
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।

—०—

सूर्यः=परम जनक प्रभु
वर्चः=दीप्तिस्वरूप है।
ज्योतिः=उदय होता हुआ सूर्य
वर्चः=उस दीप्ति का प्रतिनिधि है।
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।

—०—

ज्योतिः=ज्योति ही
सूर्यः=परमेश्वर है।
सूर्यः=सूर्य ही प्रत्यक्ष
ज्योतिः=वह ज्योति है (उस ज्योति=परमेश्वर का अनुमापक है)
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।

—०—

Paraphrase (1-4)—

Sūryaḥ	=	Supreme Impeller God
jyotiḥ	=	is light.
Sūryaḥ	=	The rising sun
jyotiḥ	=	represents that light.
Svāhā	=	I offer the oblation.

—o—

Sūryaḥ	=	Supreme Producer God
varcaḥ	=	is splandour.
Jyotiḥ	=	The rising sun
varcaḥ	=	represents that splandour.
Svāhā	=	I offer the oblation.

—o—

Jyotiḥ	=	Light
sūryaḥ	=	is God.
Sūryaḥ	=	The rising sun
Jyotiḥ	=	represents that light (i. e. God).
Svāhā	=	I offer the oblation.

—o—

Juṣāṇaḥ	=	May the gratified
sūryaḥ	=	rising sun
vetu	=	accept the oblation eagerly
sajūḥ	=	along with
devena	=	the Divine
savitrā	=	Impeller and
sajūḥ	=	along with
indravatyā	=	the resplendent
uṣasā	=	dawn.
Svāhā	=	I offer the oblation.

Purport (1-4)—O Almighty God ! the sun, created by Thee, is the source of light and energy in this world. The whole animate kingdom, mobile as well as immobile, depends upon it for its life. It is the chief source of inspiration for activity. Let us be

जुषाणः=प्रीति रखनेवाला
सूर्यः=उदय होता हुआ सूर्य
देवेन=दिव्य
सवित्रा=प्रेरक शक्ति के
सजूः=साथ और
इन्द्रवत्या=प्रकाशवाली
उषसा=उषा के
सजूः=साथ
वेतु=हवि को उत्सुकतापूर्वक स्वीकार करे।
स्वाहा=मैं आहुति देता हूँ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आपके द्वारा रचा हुआ सूर्य इस पृथिवी के लिए प्रकाश और शक्ति का स्रोत है। सम्पूर्ण चर-अचर प्राणि-जगत् का जीवन इसी के आश्रित है। यह कर्मशीलता की प्रेरणा का प्रधान स्रोत है। हम आहुतियाँ प्रदान करके प्रेरणा प्राप्त करें। हे दयालु प्रभो ! प्रकाशयुक्त उषासहित सूर्य हमारी आहुतियों को स्वीकार करे। (अर्थात् यज्ञाग्नि में डाली गई सामग्री सूक्ष्म कणों के रूप में विभक्त हो जाए जिनको सूर्य आकृष्ट करके वायुमण्डल में विकीर्ण कर दे।)

१२. सायंकालिकाहुति-मन्त्राः

नीचे लिखे हुए मन्त्रों का उच्चारण करें और पूर्ववत् सायंकालिक आहुतियाँ दें। नीचे लिखे गये मन्त्रों में तीसरा मन्त्र पहले मन्त्र की आवृत्तिमात्र है, अतः इसका उच्चारण उच्च स्वर से न करके, मन में ही किया जाता है। सम्भवतः दोनों समय के मन्त्रों में संख्या की समानता के लिए पुनः पाठ किया गया है। इस मन्त्र का उच्चारण मन में करके 'स्वाहा' शब्द को व्यक्त स्वर से बोलकर आहुति दें।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥—यजु० ३।९, १०

impelled by offering the oblations. O Gracious God ! may the sun, accompanied by the bright dawn, accept our oblations (that is, may the sacrificial material, offered in the fire, be disintegrated into fine particles which may be drawn up and diffused in the atmosphere by the sun).

12. Oblations for the Evening Sacrifice

Recite the following mantras and offer the evening oblations as indicated above. The third mantra, given below, is only a repetition (to equalise the number with that of the morning sacrifice mantras) of the first one; hence it is not recited aloud. Repeat the mantra mentally and recite 'svāhā' loudly, then offer the oblation.

1. Om agnir jyotir jyotir agniḥ svāhā ॥
2. Om agnir varco jyotir varcaḥ svāhā ॥
3. Om agnir jyotir jyotir agniḥ svāhā ॥
4. Oṃ sajūr devena savitrā sajū rātryendravatyā ।
   Juṣāṇo agnir vetu svāhā ॥

Paraphrase (1-4)—

Agniḥ = Self-effulgent God
jyotiḥ = is light.
Agniḥ = The fire
jyotiḥ = represents that light.
Svāhā = I offer the oblation.

—o—

Agniḥ = Self-effulgent God
varcaḥ = is splandour.
Jyotiḥ = The fire
varcaḥ = represents that splandour.
Svāhā = I offer the oblation.

—o—

पदार्थ (१-४)—

अग्निः=प्रकाशस्वरूप प्रभु
ज्योतिः=प्रकाश है।
अग्निः=अग्नि
ज्योतिः=उस प्रकाश का प्रतिनिधि है।
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।

—०—

अग्निः=प्रकाशस्वरूप प्रभु
वर्चः=दीप्ति है।
ज्योतिः=अग्नि
वर्चः=उस दीप्ति का प्रतिनिधि है।
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।

—०—

जुषाणः=प्रीति रखनेवाला
अग्निः=अग्नि
देवेन=दिव्य
सवित्रा=प्रेरक शक्ति के
सजूः=साथ और
इन्द्रवत्या=प्रकाशयुक्त
रात्र्या=रात्रि के
सजूः=साथ
वेतु=हवि को उत्सुकतापूर्वक स्वीकार करे।
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।

भावार्थ (१-४)—हे परमेश्वर ! आपने प्रकाश और ऊर्जा के तीन मुख्य स्रोत उत्पन्न किये हैं—द्युलोक में सूर्य, अन्तरिक्ष (मेघ) में विद्युत् तथा पृथिवी पर अग्नि। रात्रि में हम अग्नि पर आश्रित रहते हैं। यह अन्य गुणों के अतिरिक्त हमें प्रेरणा प्रदान करता है। आपकी कृपा से यह यज्ञाग्नि हमारी आहुतियों को स्वीकार करे और उन्हें सूक्ष्म कणों के रूप में परिवर्तित करके वायुमण्डल में व्याप्त कर दे।

उभयकालिक आहुतियाँ

ऊपर लिखे प्रातःकाल और सायंकाल के मन्त्रों के पश्चात्, नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण दोनों कालों में करें और 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर घृत एवं सामग्री की आहुति एक साथ प्रदान करें ;

Juṣāṇaḥ	=	May the pleased
agniḥ	=	fire
vetu	=	accept the oblation eagerly
sajūḥ	=	along with
devena	=	the Divine
savitrā	=	Impeller and
sajūḥ	=	along with
indravatyā	=	the bright
rātryā	=	night.
Svāhā	=	I offer the oblation.

Purport (1-4)—O Almighty God! Thou hast created three chief sources of light and energy—the sun in the heaven, electric charge in the firmament (in the clouds) and the fire on the earth. At night we depend upon the fire. It is an inspiring agent to us, besides its other utilities. May the sacrificial fire, through Thy grace, accept our oblations and, turning them into fine particles, diffuse them in the atmosphere.

13. Oblations for both Morning and Evening Sacrifice

Recite the following mantras and offer the oblations of clarified butter and other sacrificial material (sāmagrī) simultaneously on the utterance of each 'svāhā'.

1. Oṃ bhūr agnaye prāṇāya svāhā ||
   Idam agnaye prāṇāya—idaṃ na mama ||

Paraphrase—

Bhūḥ	=	For the terrestrial
agnaye	=	fire
prāṇaya	=	which bears the nature of vitality,
svāhā	=	I offer the oblation.
Idam	=	It is
agnaye	=	for the fire

१३. उभयकालिक-मन्त्राः

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।। इदमग्नये प्राणाय—इदं न मम ।।१।।

पदार्थ—

भूः=पृथिवी-स्थानीय	**इदम्**=यह
प्राणाय=प्राणस्वरूप	**प्राणाय**=प्राणस्वरूप
अग्नये=अग्नि के लिए	**अग्नये**=अग्नि के लिए है ।
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ ।	**इदं न मम**=यह मेरे लिए नहीं है ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारे द्वारा प्रदत्त आहुति पृथिवीस्थ अग्नि को प्राप्त होवे जो सब जीवों को प्राण प्रदान करता है । इस कर्म में हम किसी स्वार्थ से प्रेरित नहीं है । हमारे शुभ कर्मों से विश्व के सब प्राणी लाभान्वित होवें ।

ओं भुववर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।। इदं वायवेऽपानाय—इदं न मम ।।२।।

पदार्थ—

भुवः=अन्तरिक्ष-स्थानीय	**इदं वायवेऽपानाय** = यह दुःख-निवारक वायु के लिए है ।
अपानाय=दुःख-निवारक	**इदं न मम**=यह मेरे लिए नहीं है ।
वायवे=वायु के लिए	
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ ।	

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारे द्वारा प्रदत्त आहुति अन्तरिक्षस्थ वायु को प्राप्त होवे जो सब प्राणियों के दुःखों को दूर करता है । अन्तरिक्षस्थ वायु ही हवियों के सूक्ष्म कणों को वायुमण्डल में ले जाता है और इस प्रकार प्राणियों को आरोग्य प्रदान करता है तथा उनके दुःखों का निवारण करता है । हमारा यह कर्म सभी प्राणियों के समान लाभ के लिए है, न कि हमारे निजी लाभ के लिए ।

prāṇāya = bearing the nature of vitality.
Idaṁ na mama = It is not mine.

Purport—O Almighty God ! may the oblation, offered by us, reach the terrestrial fire which provides vitality for the living beings. We are not guided by any selfish motive in this performance. May all the creatures of the universe benefit by our deeds.

2. Oṃ bhuvar vāyave'pānāya svāhā ||
Idaṃ vāyave'pānāya—idaṃ na mama ||

Paraphrase—

Bhuvaḥ = For the atmospheric
vāyave = air,
apānāya = the remover of afflictions,
svāhā = I offer the oblation.
Idaṃ vāyave'pānāya = It is for the air, the remover of afflictions.
Idaṃ na mama = It is not mine.

Purport—O Almighty God ! may the oblation, offered by us, reach the atmospheric air which removes the sufferings of the creatures. It is the atmospheric wind that carries the fine particles of the oblative substances; and thus makes the living organisms hale and hearty and removes their pain. This action of ours is intended for general benefit of all creatures, not for our own-self.

3. Oṃ svar ādityāya vyānāya svāhā ||
Idam ādityāya vyānāya—idaṃ na mama ||

Paraphrase—

Svaḥ = For the heavenly
ādityāya = sun,

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।। इदमादित्याय व्यानाय —इदं न मम ।।३।।

पदार्थ—

स्वः=द्युस्थानीय
व्यानाय=सुखदायक
आदित्याय=सूर्य के लिए
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।
इदमादित्याय व्यानाय = यह सुखदायक सूर्य के लिए है।
इदं न मम=यह मेरे लिए नहीं है।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारे द्वारा प्रदत्त आहुति आदित्य को प्राप्त होवे जो हमारे ऊपर सुख की वर्षा करता है। हविष्य पदार्थों के सूक्ष्म कण सौर ऊर्जा के साथ संयुक्त होवें और सम्पूर्ण आकाशीय वातावरण को पवित्र करें। हमारा लक्ष्य समग्र प्राणिजगत् का कल्याण है। इस कर्म में हमारा कोई निजी स्वार्थ नहीं है।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।। इदमग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदं न मम ।।४।।

पदार्थ—

भूः=पृथिवी-स्थानीय
भुवः=अन्तरिक्ष-स्थानीय
स्वः=द्यु-स्थानीय
प्राणापानव्यानेभ्यः—प्राणप्रद, दुःख-निवारक तथा सुखदायक
अग्निवाय्वादित्येभ्यः=अग्नि, वायु तथा सूर्य के लिए
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः = यह प्राणप्रद, दुःखनिवारक तथा सुखदायक अग्नि-वायु-सूर्य तीनों के लिए है।
इदं न मम=यह मेरे लिए नहीं है।

vyānāya	=	the bestower of pleasure,
svāhā	=	I offer the oblation.
Idam ādityāya vyānāya	=	It is for the sun, the bestower of pleasure.
Idaṃ na mama	=	It is not mine.

Purport—O Almighty God ! may the oblation, offered by us, reach the heavenly sun which confers showers of happiness upon us. Let the fine particles of the oblative materials combine with the solar energy and purify the whole spatial atmosphere. We aim at the well-being of the whole animate world. We have no selfish end behind this act.

4. Oṃ bhūr bhuvaḥ svar agnivāyvādityebhyaḥ prāṇāpāna-vyānebhyaḥ svāhā ‖ Idam agnivāyvādityebhyaḥ prāṇāpāna-vyānebhyaḥ—idaṃ na mama ‖

Paraphrase—

Bhūḥ	=	For the terrestrial,
bhuvaḥ	=	the atmospheric
svaḥ	=	and the heavenly
agnivāyvādityebhyaḥ	=	fire, air and sun respectively,
prāṇāpānavyānebhyaḥ	=	successively providing the vital breath, removing the afflictions and giving pleasure,
svāhā	=	I offer the oblation.

Idam agnivāyvādityebhyaḥ prāṇāpānavyānebhyaḥ, idaṃ na mama=It is for Agni, Vāyu and Āditya bearing the nature of prāṇa, apāna and vyāna. It is not mine.

Purport—O All-pervading God ! Thou hast manifested Thy power in all the three regions of the universe—the earth, the middle region and the stary world. On earth it appears in the form of fire which provides vitality to each organism. In the middle region it is experienced in the form of pure air which

भावार्थ—हे सर्वव्यापक प्रभो ! आपने अपनी शक्ति को विश्व के तीनों लोकों—पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक में अभिव्यक्त किया है। पृथिवी पर यह अग्नि के रूप में प्रकट होती है जो प्रत्येक जीव को प्राणशक्ति प्रदान करती है। अन्तरिक्ष में यह वायु के रूप में अनुभव होती है जो प्राणिजगत् को जीवन प्रदान करती है। द्युलोक में यह सूर्य के रूप में देखी जाती है जो जीवन के लिए अपरिहार्य ऊर्जा एवं वर्षा का प्रधान साधन है। हम इस उद्देश्य से आहुति प्रदान करते हैं कि नैसर्गिक शक्तियाँ उसे वायुमण्डल में सर्वत्र विकीर्ण कर दें। इस प्रकार विश्व का प्रत्येक प्राणी प्राण, दुःखनिवृत्ति और सुखप्राप्ति का लाभ प्राप्त करे। इस कर्म में हमारा कोई निजी स्वार्थ उद्दिष्ट नहीं है।

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥५॥

पदार्थ—

ओम्=हे प्रभो ! आप
आपः=सर्वव्यापक,
ज्योतिः=प्रकाशस्वरूप,
रसः=सबसे अधिक स्नेहशील,
अमृतम्=अमर,
ब्रह्म=सबसे महान्,
भूः=सबके प्राण,
भुवः=दुःख-निवारक और
स्वः=आनन्दस्वरूप हैं।
स्वाहा=मैं आहुति अर्पित करता हूँ।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! आप सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, परम दयालु, नाशरहित, जीवन के निमित्त, दुःखनिवारक और आनन्द के स्रोत हैं। हम अपनी समर्पण की भावना के प्रतीक के रूप में इस आहुति को आपके प्रति समर्पित करते हैं। वस्तुतः सब पदार्थों के स्वामी आप ही हैं। इस समर्पण द्वारा हम आपके प्रदत्त पदार्थों से अपनी आसक्ति को नम्रतापूर्वक हटाते हैं।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥

—यजु० ३२।१४

enlivens the animate world. In the heavens it is visible in the form of the sun which is the sole source of energy and rains essential for life. We offer the oblation aiming that Thy natural agencies would diffuse it everywhere. Thus may each and every creature of the universe receive the benefit in the form of vitality, removal of pain and attainment of pleasure. We have no intention to achieve any selfish motive.

5. Om āpo jyotī raso'mṛtaṃ brahma bhūr bhuvaḥ svar om svāhā ||

Paraphrase—

Om	=	O God ! Thou art
āpaḥ	=	All-pervading,
jyotiḥ	=	Self-effulgent,
rasaḥ	=	Most Affectionate,
amṛtam	=	Immortal,
brahma	=	Supreme spirit,
bhūḥ	=	the Life-breath of all,
bhuvaḥ	=	the Remover of afflictions and
svaḥ	=	Blissful.
Svāhā	=	I offer the oblation.

Purport—O Almighty God ! Thou art All-pervading, the Protector, the most gracious, the Eternal, the cause of all life, the Remover of all pains and the source of all happiness. We offer this oblation to Thee as a token of our spirit of dedication. As a matter of fact, everything belongs to Thee. Through this dedication, we humbly detach ourselves from the substances bestowed by Thee.

6. Oṃ yāṃ medhāṃ devagaṇāḥ pitaraś copāsate ||
Tayā mām adya medhayāgne medhāvinaṃ kuru svāhā ||

पदार्थ—

अग्ने=हे प्रकाशस्वरूप प्रभो !
देवगणाः=विद्वान् जन
च=और
पितरः=अज्ञान को दूर करके समाज की रक्षा करनेवाले
याम्=जिस
मेधाम्=धारणावती बुद्धि को
उपासते=प्राप्त करते हैं और उपयोग में लाते हैं,
तया=उस
मेधया=धारणावती बुद्धि से
अद्य=आज
माम्=मुझको
मेधाविनम्=मेधायुक्त
कुरु=कीजिए।
स्वाहा=मैं आहुति प्रदान करता हूँ।
(मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ)।

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ! आपने कृपा करके विद्वानों तथा धर्मात्मा पुरुषों को उत्तम विवेक और धारणावती बुद्धि से भूषित किया है। हे परम उदार प्रभो ! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमें भी उसी प्रकार के विवेक और धारणावती बुद्धि से युक्त करें।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव स्वाहा ॥७॥—यजु० ३०।३

इस मन्त्र की व्याख्या पूर्व 'ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना' शीर्षक के अन्तर्गत हो चुकी है (देखें पृ० ३५)।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥—यजु० ४०।१६

इस मन्त्र की व्याख्या भी पूर्व 'ईश्वर-स्तुतिप्रार्थनोपासना' शीर्षक के अन्तर्गत हो चुकी है (देखें पृ० ४१)।

Paraphrase—

Agne	=	O Self-effulgent God !
kuru	=	Make
mām	=	me
adya	=	today
medhāvinam	=	an intelligent
tayā	=	by bestowing on me that
medhayā	=	retentive intellect
yām	=	which
medhām	=	retentive intellect
devagaṇāḥ	=	the learned people
ca	=	and
pitaraḥ	=	the protectors of society, by eliminating the darkness of ignorance,
upāsate	=	obtain and utilise.
Svāhā	=	I offer the oblation (I pray to Thee).

Purport—O Self-luminous God ! Thou hast been gracious to furnish the learned and virtuous persons with superior discriminative understanding and retentive intellect. We pray to Thee, O most Benevolent God ! do bestow on us the similar understanding and intelligence.

7. Oṃ viśvāni deva savitar duritāni parā suva ।
Yad bhadran tan na ā suva svāhā ॥

This mantra is explained above under the heading 'The eulogy, prayer and adoratian of God'.

8. Om agne naya supathā rāye
asmān viśvāni deva vayunāni vidvān ।
Yuyodhyasmaj juhurāṇam eno bhūyiṣṭhān
te nama'uktiṃ vidhema svāhā ॥

This mantra is also explained above under the heading 'The eulogy, prayer and adoration of God'.

१४. पूर्णाहुति

नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण तीन बार करें। प्रत्येक बार 'स्वाहा' शब्द के उच्चारण पर घृत तथा सामग्री की आहुति प्रदान करें। ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि अन्तिम आहुति पर सम्पूर्ण घृत तथा सामग्री समाप्त हो जाए, अवशिष्ट न रहे।

पूर्णाहुति-मन्त्रः

ओं सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा ॥

पदार्थ—

ओम्=हे परमेश्वर !
सर्वम्=यह कर्म तथा हमारे अन्य कर्म भी
पूर्णम्=पूर्ण हों।
स्वाहा=मैं इस तथ्य को यथार्थ रूप में जानता हूँ।

भावार्थ—हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! वस्तुतः आप पूर्ण हैं। हमारा यह यज्ञ पूर्ण हो। वास्तव में प्रतीक के रूप में हम आपसे प्रार्थना करते हैं—हे दयामय प्रभो ! हमारे सम्पूर्ण कार्य पूर्ण रीति से सम्पन्न हों।

॥ इति दैनिकाग्निहोत्रविधिः समाप्तः ॥

14. The final oblation

Recite the following mantra thrice. Offer every time an oblation on the utterance of 'svāhā'. Let the arrangements be made such as to finish the whole clarified butter and other sacrificial material (sāmagrī) at the last offering of oblation.

Oṃ sarvaṃ vai pūrṇaṃ svāhā ॥

Paraphrase—

Om	=	O Almighty God !
sarvam	=	may this whole performance and other actions commenced by us
pūrṇam	=	be perfect
vai	=	certainly.
Svāhā	=	I know this fact rightly.

Purport—O All-pervading God ! Verily Thou art perfect. May this sacrifice of ours be perfect. In fact, symbolically, we pray to Thee, O Gracious Lord, to let us complete our actions in a perfect manner.

—: o :—

शान्ति-पाठ

दैनिक अग्निहोत्र अन्तिम (पूर्ण) आहुति पर समाप्त हो जाता है जैसा कि पूर्व कहा गया है और पूर्ण आहुति के पश्चात् कोई यज्ञ-सम्बन्धी कर्म विहित नहीं है, परन्तु सामान्य परम्परा के अनुसार अन्त में शान्ति-पाठ किया जाता है, अतः आँखों को बन्द करके निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

> **ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥—यजु० ३६।१७**

पदार्थ—

ओम्=हे परमेश्वर !
द्यौः=द्युलोक
शान्तिः=सबके लिए शान्त हो।
अन्तरिक्षम्=अन्तरिक्ष
शान्तिः=सबके लिए शान्त हो।
पृथिवी=पृथिवी
शान्तिः=सबके लिए शान्त हो।
आपः=जल
शान्तिः=सबको शान्ति दें।
ओषधयः=ओषधियाँ
शान्तिः=सबको शान्ति दें।
विश्वेदेवाः=प्राकृतिक शक्तियाँ और विद्वान् लोग
शान्तिः=सबको शान्ति दें।
ब्रह्म=परमेश्वर और वेद
शान्तिः=सबको शान्ति दें।
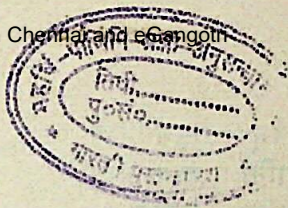
PRAYER FOR PEACE

The daily sacrifice (Agnihotra) finishes at the final oblation as related above and no ritual performance is prescribed after the last oblation. But 'the prayer for peace' is generally performed conventionally. It may, therefore, be recited as follows, with closed eyes of course.

> Oṃ dyauḥ śāntir antarikṣaṃ śāntiḥ pṛthivī śāntir āpaḥ śāntir oṣadhayaḥ śāntiḥ । Vanaspatayaḥ śāntir viśvedevāḥ śāntir brahma śāntiḥ sarvaṃ śantiḥ śāntir eva śāntiḥ sā mā śāntir edhi ॥

Paraphrase—

Om	=	O Almighty God !
dyauḥ	=	May the stary region
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Antarikṣam	=	May the atmospheric region
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Pṛthivī	=	May the earth
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Āpaḥ	=	May the waters
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Oṣadhayaḥ	=	May the herbs
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Vanaspatayaḥ	=	May the plants
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Viśvedevāḥ	=	May the natural forces and the learned men

सर्वम्=सम्पूर्ण विश्व
शान्तिः=शान्त हो।
शान्तिः=शान्ति
एव=ही
शान्तिः=शान्ति सर्वत्र फैले।
सा=वह
शान्तिः=शान्ति
मा=मेरे लिए (मुझे)
एधि=हो (प्राप्त हो)।

भावार्थ—हे सर्वव्यापक प्रभो! विश्व के तीनों लोकों में शान्ति व्याप्त हो। जल हमें तृप्त करनेवाले हों। सम्पूर्ण ओषधि-वनस्पति जगत् हमारे लिए शान्तिदायक हो। सब प्राकृतिक शक्तियाँ क्षोभ-रहित हों। हे परमेश्वर! आपका पवित्र ज्ञान वेद और विद्वान् लोग सबको शान्तिदायक हों। विश्व में पूर्ण समन्वय व्याप्त हो। हम सभी दुर्भावनाओं एवं व्यसनों से दूर रहें और शान्त तथा सन्तोषपूर्ण जीवन व्यतीत करें।

śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Brahma	=	May the Supreme Lord and the Vedas
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Sārvam	=	May the whole universe
śāntiḥ	=	be peaceful for all.
Śāntiḥ	=	May the peace,
eva	=	only
śāntiḥ	=	the peace, prevail everywhere.
Sā	=	May that
śāntiḥ	=	peace
edhi	=	be
mā	=	for me.

Purport—O All-pervading Lord ! may there be peace in all the three regions of the universe. May the waters satisfy us. May the whole plant kingdom be appeasing to us. May the natural forces remain undisturbed. O Supreme Lord ! May Thy Vaidika Lore and the learned people bring comfort to all. May perfect harmony prevail in the universe. May we all be free from evil passions and live a quiet and contented life.

—:o:—

वैदिक राष्ट्रगीत

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥—यजु० २२।२२

पदार्थ—

ब्रह्मन्=हे परमात्मन् !
राष्ट्रे=राष्ट्र में
ब्राह्मणः=ब्राह्मणवर्ग
ब्रह्मवर्चसी=प्रभुभक्त तथा वेद-निष्णात
आ जायताम्=उत्पन्न हो।
राजन्यः=क्षत्रियवर्ग
शूरः=शूर
[जायताम्]=उत्पन्न हो।
इषव्यः=बाण चलानेवाले
महारथः=योद्धा
अतिव्याधी=सटीक लक्ष्य-वेधक
जायताम्=हों।
धेनुः=गौएँ
दोग्ध्री=दुधारु
[जायताम्]=हों।
अनड्वान्=बैल
वोढा=भार वहन करने में समर्थ
[जायताम्]=हों।
सप्तिः=अश्व
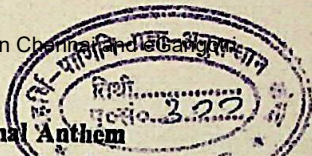
Vaidika National Anthem

Om ā brahman brāhmaṇo brahmavarcasī jāyatām ā rāṣṭre rājanyaḥ śura iṣavyo'tivyādhī mahāratho jāyatāṃ dogdhrī dhenur voḍhā'nadvān āśuḥ saptiḥ purandhir yoṣā jiṣṇū ratheṣṭhāḥ sabheyo yuvā'sya yajamānasya vīro jāyatāṃ nikāme-nikāme naḥ parjanyo varṣatu phalavatyo na oṣadhayaḥ pacyantāṃ yogakṣemo naḥ kalpatām ||

Paraphrase—

Brahman	=	O Supreme Being !
rāṣṭre	=	in the nation,
brāhmaṇaḥ	=	may the intellectual class
ā jayatām	=	be born
brahmavarcasī	=	adorer of God and eminent in the Vedas.
Rājanyaḥ	=	May the warrior class
(jāyatām)	=	be born
śuraḥ	=	brave.
Iṣavyaḥ	=	May the archer
mahārathaḥ	=	warriors
jāyatām	=	be
ativyādhī	=	through-piercers.
Dhenuḥ	=	May the cows
(jāyatām)	=	be
dogdhrī	=	yielding much milk.
Anadvān	=	May the oxen
(jāyatām)	=	be
voḍhā	=	able to draw vehicles.
Saptiḥ	=	May the horses
(jāyatām)	=	be
āśuḥ	=	going swiftly.
Yoṣā	=	May the women folk
(jāyatām)	=	be
purandhiḥ	=	capable to bear the responsibilities of the family; liberal.

आशुः=तीव्रगामी
[जायताम्]=हों।
योषा=महिलाएँ
पुरन्धिः=परिवार का उत्तर-
दायित्व वहन करने में समर्थ,
उदार
[जायताम्]=हों।
रथेष्ठाः=रथारोही योद्धा
जिष्णुः=विजेता
जायताम्=हों।
अस्य=इस
यजमानस्य=राष्ट्राध्यक्ष का
युवा=युवक वर्ग
सभेयः=सभ्य और
वीरः=वीर

जायताम्=हो।
पर्जन्यः=मेघ
निकामे-निकामे=हमारी इच्छा-
नुसार
नः=हमारे लिए
वर्षतु=वृष्टि करे।
ओषधयः=फसलें।
नः=हमारे लिए
फलवत्यः=फलों से परिपूर्ण होकर
पच्यन्ताम्=पकें।
नः=हमारी
योगक्षेमः=अप्राप्त की प्राप्ति
और प्राप्त की रक्षा
कल्पताम्=सुतराम् सम्पन्न हो।

भावार्थ—हे परमेश्वर ! हमारा राष्ट्र उत्तम बुद्धिजीवी तथा सैन्य-बल से सुसज्ज हो। हम जीविका के उत्तम साधनों—स्वस्थ दुधारु गायों और समृद्ध फसलों के स्वामी हों। हम शक्तिशाली तथा वेगवान् परिवहन साधनों को विकसित करें। हमारे सुरक्षा बलों का मनोबल सदा ऊँचा रहे। हमारे राष्ट्र की महिलाएँ उदार हों और अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों को उत्तम रीति से निवाहें। हमारी युवा पीढ़ी विकसित होकर सभ्य एवं अनुशासित राष्ट्र के रूप में उभरे। हे दयामय प्रभो ! हमारे राष्ट्र में उचित समय पर उचित मात्रा में वर्षा हो जिससे हमारी वनस्पति-सम्पदा समृद्ध हो। हम योग्यतापूर्वक राष्ट्रिय सम्पदा का उपार्जन और रक्षण करने में समर्थ हों।

Ratheṣṭhāḥ = May the warriors seated in the chariots
(jāyatām) = be
jiṣṇūḥ = victorious.
Sabheyaḥ = May the disciplined
yuvā = young folk
asya = of this
yajamānasya = head of the nation
jāyatām = be
vīraḥ = valiant.
Parjanyaḥ = May the cloud
varṣatu = raini
naḥ = for us
nikāme-nikāme = accordtng to our desires.
Oṣadhayaḥ = May he herbs
pacyantām = ripen
phalavatyaḥ = laden with fruits
naḥ = for us.
Yogakṣemaḥ = May the acquisition and preservation of property
kalpatām — effect favourably
naḥ = to us.
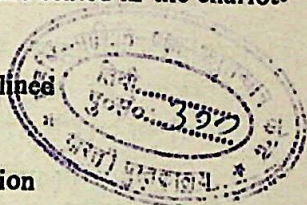
Purport—O Almighty God ! May our nation be furnished with the best team of intellectuals and valiants. May we possess the rihest means of subsistence—healthy milch cattle and bumper crops. May we develop the strong and speedy means of transportation. May we keep a high morale of our defence forces. May the women of our nation be liberal and fulfil the responsibilities of the family. May our younger generation grow into a civilised and disciplined people. O Gracious God ! Send regular and sufficient rains so as to flourish our plant wealth. May we acquire and preserve the national wealth efficiently.

—: o :—

विशेष टिप्पणियाँ

१. सामूहिक अग्निहोत्र में यज्ञकुण्ड की पश्चिम दिशा में स्थित व्यक्ति घृत की आहुति दे और अन्य दिशाओं में बैठे हुए लोग सामग्री की आहुति डालें।

२. कुछ सज्जन अग्नि-प्रदीपन की पाँच आहुतियों के पश्चात् घृत के विन्दु पात्र में रखे जल में डालते हैं। ऐसा करना उचित नहीं है, क्योंकि यह कर्म अग्निहोत्रविधि के अनुसार नहीं है।

३. 'स्विष्टकृत् आहुति' अग्निहोत्र में अनिवार्य कर्म नहीं है, क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दैनिक यज्ञ में इसका विधान नहीं किया है।

४. पूर्णाहुति के पश्चात् कोई आहुति नहीं दी जानी चाहिए। यदि कोई कुछ और आहुतियाँ देना चाहता है, तो वह पूर्णाहुति से पूर्व गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके दे सकता है।

५. कुछ लोग पूर्णाहुति के पश्चात् 'वसो पवित्रमसि शतधारम्' मन्त्र का उच्चारण करके शेष घृत की आहुति देते हैं। ऐसा करना उचित नहीं है, क्योंकि पूर्णाहुति की अन्तिम आहुति के पश्चात् हवि (घृत तथा सामग्री) बची नहीं रहनी चाहिए।

६. अग्निहोत्र के पश्चात् भक्तिपूर्ण भजन गाये जा सकते हैं (इस पुस्तक में भी उनका संग्रह है), यद्यपि यह सारा कर्म ही भक्ति-पूर्ण कर्म है।

Special Notes

1. In a congregational performance of the Agnihotra, let the person sitting in the west of the fire-pan offer the oblations of clarified butter and the persons sitting in other directions offer the oblations of the sacrificial material (sāmagrī).

2. Some persons pour the drops of molten butter into a receptacle containing water after each of the five oblations for rousing the fire. This practice should be abandoned, as it is not in accordance with the rules for the Agnihotra.

3. The 'sviṣṭakṛt oblation' is not an obligatory act in the Agnihotra, as Maharṣi Dayānanda Sarasvatī did not direct it for the occasion of the daily sacrifice. If a person desires, it may be offered just before the final oblation.

4. No oblation should be offered after the final oblation. If a person desires to offer some more oblations, he may do so only after the recital of Gāyatrī mantra (none else) and that too before the final oblation.

5. Some persons pour remaining clarified butter with the recital of the mantra 'vaso pavitramasi śatadhāram' after the final oblation. It is not proper, as no oblative substance should be left after the third offering of the final oblation.

6. Devotional verses may be sung after the Agnihotra, though the whole performance itself is a long devotional exercise and hence there is no need for more verses.

—: o :—

भजन (१)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो ॥१॥
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ॥२॥
भूलि हैं हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहि बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विसतारे हो ॥३॥
महाराज महामहिमा तुम्हरी, समझें बिरले वुधिवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो ॥४॥
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो ॥५॥

भजन (२)

प्रणाम ईश तुमको, तेरी यह महिमा सारी।
हर जीव में विराजे, ज्योति प्रभु तुम्हारी ॥१॥
सूरज ये चाँद तारे, चमकें तेरे सहारे।
सब काम को सँवारे, जिन पै कृपा तुम्हारी ॥२॥
योगी ऋषि मुनि जन, फल फूल वन के खाकर।
तेरी ही धुन लगावें, उन पै कृपा तुम्हारी ॥३॥
मन्दिर ये मस्जिदें और, गिरजे वा गुरुद्वारे।
तेरे नाम के नज़ारे, सब तू ही तू पुकारे ॥४॥
प्रभु तेरा नाम लेकर, कर बाँध विनति करते।
भक्ति का दान दीजै, उसके हैं हम भिखारी ॥५॥

भजन (३)

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ॥१॥
मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ, बार मुनिवर धन्यवाद ॥२॥

करते हैं जंगल में मंगल, पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वरभर धन्यवाद ॥३॥
कूप में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में।
प्रेमरस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥४॥
शादियों में कीर्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आद।
मीठे स्वर से चाहिए, करें नारी-नर सब धन्यवाद ॥५॥
गानकर 'अमीचन्द', भजनानन्द ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद ॥६॥

भजन (४)

यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ॥१॥
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे, शोकसागर से तरें ॥२॥
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर-उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ॥३॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि सब करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ॥४॥
भावनाएँ मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
कामना पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नार की ॥५॥
लाभकारी हो हवन, सब जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किए ॥६॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेमपथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ॥७॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा, आपकी सबपर रहे ॥८॥

□□□

Ram Lal Kapoor Trust Publications

1. Yajurveda-bhāṣya-vivaraṇa (Pt. I)—B.D. Jijñāsu. 110.00
   Yajurveda-bhāṣya-vivaraṇa (Pt. II)—B.D. Jijñāsu. 50.00
2. Ṛg-Veda-bhaṣya—I—40.00, II—35.00, III—40.00 115.00
3. Ṛgvedādibhaṣya-bhūmikā—Edi. Yudhiṣṭhra Mīmāṃsaka
   Ordinary 30.00
   Special 35.00
4. Atharva-veda-bhaṣya—Viśvanāth Vedopādhyāya. vii-viii—40.00, ix-x—40.00, xi-xiii—35.00, xiv-xvii —30.00, xviii-xix—25.00, xx—25.00 195.00
5. Mādhyandina-Padapāṭha— 40.00
6. Taittirīya-Saṃhitā—(text)— 50.00
7. Taittirīya-Saṃhitā—(Pada-Pāṭha)— 100.00
8. Gopatha Brāhmaṇa—(text) 50.00
9. Ṛgvedānukramaṇī—Veṅkaṭa Mādhava, Ordinary 25.00
   Special 35.00
10. Kātyāyanīya Ṛksarvānukramaṇī—Ṣadguru-śiṣya. 100.00
11. Vedic Sāhitya saudāminī—Vāgiśvara vedyālaṅkāra. 50.00
12. Ṛgveda Ki Ṛksaṃkhyā—Y. Mīmāṃsaka. 5.00
13. Veda-saṃjñā-mīmāṃsā—Y. Mīmāṃsaka. 2.00
14. Vedic chandomīmāṃsa—Y. Mīmāṃsaka. 25.00
15. Vedic Svaramīmāṃsā—Y. Mīmāṃsaka. 30.00
16. Yajurveda Kā svādhyāya tathā Paśu yajña samīkṣā—20.00, special 25.00

17.	Śatapatha Brāhmaṇa Agnicayana—Viśvanātha.	45.00
18.	Uru-jyoti—V.S. Agrawal—	18.00
19.	Anthology of Vedic Hymns—S. Bhoomānanda.	60.00
20.	Baudhāyana Śrauta Sūtra (with commentaries)—	45.00
21.	Darśapūrṇamāsa-paddhati— Ordinary	20.00
	Special	25.00
22.	Kātyāyana-gṛhya sūtra (text)—	25.00
23.	Śrauta-padārthanirvacanam—	40.00
24.	Saṃskāra Vidhi—Ordinary-15.00, Special	20.00
25.	Vedic Nitya karma vidhi—Y. Mīmāṃsaka.	6.00
26.	Śikṣa sūtrāni—(Āpiśala-Pāṇiniya-cāndra)	7.00
27.	Nirukta Śloka vārttikam—Nīlakaṇṭh.	125.00
28.	Nirukta samuccaya—Vararuci.	20.00
29.	Aṣṭadhyāyī-Bhāṣya—B.D. Jijñasu. I—50.00, II—30, III—35.00	115.00
30.	Mahābhāṣya (with Hindi translation)— I --60.00, III—30.00	90.00
31.	The Tested Easiest Method of Learning and Teaching Saṃskṛta (First Book)—	25.00
32.	Uṇādi Kośa—unbound—15.00, Bound	20.00
33.	Kṣiratarangiṇi—	60.00
34.	Dhātupradīpa—	40.00
35.	Saṃskṛta Dhātu koṣa—	12.00
36.	Aśtadhyāyī-śuklayajuḥprātiśakhyayor mata-vimarśaḥ—	50.00
37.	Daivam Puruṣakār Vārttikopetam—	12.00
38.	Kāśakṛtsana Vyākarṇam—	10.00
39.	Kāśkṛtsana dhātuvyākhyānam—	20.00
40.	Vāmanīya liṅgānuśasanam—	10.00
41.	Bhagavṛtti saṃkalanam—	8.00

42. Dhyāna yogaprakāśa— 16.00
43. Āryābhivinaya (English translation)— 10.00
44. Tat tvamasi—S. Vidyānanda Sarasvatī 40.00
45. Viṣṇu-sahasranāma-stotram— 80.00
46. Śrīmad Bhagavad Gitā bhāṣyam— 8.00
47. Satyāgraha nīti Kāvyam— 30.00
48. Vidura-nīti— 40.00
49. Śukra-nīti-sāra— 50.00
50. Saṃskṛta Vyākaraṇa śāstra kā itihāsa—Y.M. 125.00
51. Mīmaṃsā Śābara Bhāṣya—I—50.00, II—40.00, III—50.00, IV—40.00, V—50.00 230.00
52. Nādī-tattva-darśana—Satyadeva Vāsiṣṭha. 35.00
53. Satyārtha prakāśa—(A.S. centenary edition) 35.00
54. Dayānanda Śāstrārtha Saṃgraha— 12.00
55. Dayānanda Śatrārtha Aura Pravacana— 35.00
56. R.D. granthon kā itihasa— 40.00
57. R.D. Patra Aura Vijñāpana—(4 parts) 140.00
58. Vedic jīvana— 16.00
59. Śrauta yajña Mīmaṃsā— 30.00
60. Prapañca hṛdayam-Prasthānabheda— 20.00

[For other books please ask for our latest-Catalogue].

Available at—
Ram Lāl Kapoor Trust,
Bahalgarh, Sonepat,
Haryana-131021

सन्ध्योपासन अग्निहोत्रविधिः

रामलाल कपूर ट्रस्ट

बहालगढ़ सोनीपत, हरियाणा-१३१०२१